॥ ओ३म् ॥

अथ वेदाङ्गप्रकाशः

तत्रत्यस्त्रयोदशो भागः

उणादिकोषः

पाणिनिमुनिप्रणीतायामष्टाध्याय्यां द्वादशो भागः

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीकृतव्याख्यासहितः।

पठनपाठनव्यवस्थायां पञ्चदशं पुस्तकम् ।

अजमेरनगरे वैदिक-यन्त्रालये मुद्रितः

सृष्ट्यब्दाः १,९६,०८,५३,०७६

सातवीं वार १०००

विक्रमीय संवत् २०३३

मूल्य ४ रुपये

प्रकाशक—
वैदिक पुस्तकालय,
दयानन्द आश्रम, अजमेर।

वैदिक यन्त्रालय अजमेर द्वारा मुद्रित एवं वैदिक पुस्तकालय अजमेर द्वारा प्रकाशित पुस्तकें ही प्रामाणिक हैं क्योंकि महर्षि श्री स्वामी दयानन्द जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर उपरोक्त संस्थाओं की अध्यक्षा है और उसी के पास महर्षि जी के समस्त हस्तलिखित ग्रन्थ सुरक्षित रक्खे हुए हैं जिनसे मिलान करके पुस्तकों का मुद्रण होता है।

मुद्रक—
वैदिक यन्त्रालय,
अजमेर।

❀ ओ३म् ❀

अथ भूमिका

सब उणादिगणस्थ शब्द इस वक्ष्यमाण एक सूत्र की विशेष व्याख्या में हैं:—

उणादयो बहुलम् ॥ अ० ३ । ३ । १ ॥

वर्तमान काल में धातुओं से उणादि प्रत्यय बहुल करके होते हैं ।

भूतेऽपि दृश्यन्ते ॥ अ० ३ । ३ । २ ॥

और कहीं २ भूतकाल में भी इनका विधान दीख पड़ता है ।

भविष्यति गम्यादय: ॥ अ० ३ । ३ । ३ ॥

और गमी आदि गणपठित वक्ष्यमाण शब्द भविष्यत्काल में ही होते हैं ।

उणादिप्रत्ययों के होने के लिये यह तीनों काल का नियम है । गम्यादि शब्द—गमी । आगामी । प्रस्थायी । प्रतिरोधी । प्रतिबोधी । प्रतियोधी । प्रतियोगी । प्रतियायी । आयायी । भावी । इनसे अन्य शब्द भूत और वर्तमान अर्थों के बोधक होते हैं ।

अब जितनी प्रकृतियों में जितने उणादि प्रत्यय कहे हैं, उतने ही जानना चाहिये वा कुछ विशेष, इसलिये—

बाहुलकं प्रकृतेस्तनुदृष्टेः प्रायसमुच्चयनादपि तेषाम् ।
कार्यसशेषविधेश्च तदुक्तं नैगमरूढिभवं हि सुसाधु ॥ १ ॥

नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोकम् ।
यन्न पदार्थविशेषसमुत्थं प्रत्ययतः प्रकृतेश्च तदूह्यम् ॥ २ ॥

संज्ञासु धातुरूपाणि प्रत्ययाश्च ततः परे ।
कार्याद् विद्यादनुबन्धमेतच्छास्त्रमुणादिषु ॥ ३ ॥ महाभाष्ये ॥

इसी सूत्र की व्याख्या मे महाभाष्यकार पतञ्जलिमुनि उणादिपाठ की व्याख्या बांधते हैं कि—

(बाहुलकम्०) उणादिपाठ में थोड़े से धातुओं से प्रत्यय विधान किया हैं, सो बहुल के होने से वे प्रत्यय अन्य धातुओं से भी होते हैं। इसी प्रकार प्रत्यय भी थोड़े से संकेतमात्र पढ़े हैं। सत्प्रयोगों में देख के इनसे अन्य भी नवीन प्रत्ययों की कल्पना कर लेनी चाहिये । जैसे 'ऋफिडः' इस शब्द में 'ऋ' धातु से फिड प्रत्यय समझा जाता है । इसी प्रकार अन्यत्र भी जानना चाहिये। तथा जितने शब्द उणादिगण से सिद्ध होते हैं, उनमें जितने कार्य सूत्रों से प्राप्त हैं वे सब नहीं होते, यह भी ग्रहण का ही प्रताप है।

इसमें यदि कोई ऐसा प्रश्न करे कि उणादिपाठ में जितने धातुओं से जितने प्रत्यय विधान किये, और शब्दों की सिद्धि में जितने कार्य सूत्रों से हो सकते हैं, उनसे अधिक वा न्यून क्यों होते हैं ? तो इसका उत्तर यह है कि—

(नैगम०) वैदिक शब्द और लौकिक संज्ञा शब्द ये सब अच्छे प्रकार सिद्ध नहीं हो सकते । इसलिये पूर्वोक्त तीन प्रकार

के कार्य उणादिगण में बहुल वचन से होते हैं । इस बहुल के होने से अनेक प्रकार के सहस्रों शब्द सिद्ध होते हैं ।। १ ।।

संज्ञा शब्द वे ही कहाते हैं जो किसी निज वाच्य के साथ सम्बन्ध रक्खें, फिर उनकी सिद्धि करने से क्या प्रयोजन है, क्योंकि वे संज्ञा शब्द जिस निज अर्थ के बोधक हैं, उसका बोध तो प्रकृति प्रत्ययार्थ सम्बन्ध के विना भी कराते ही हैं, वही पश्चात् होगा, इसलिये—(नाम च०) इस विषय में निरुक्तकारों और वैयाकरणों में शाकटायन ऋषि का ऐसा मत है कि सब संज्ञा (रूढि) शब्द प्रकृति प्रत्ययार्थ के सम्बन्ध से यौगिक तथा योगरूढता से अर्थों के बोधक होते हैं । इनसे भिन्न अन्य ऋषियों के मतानुसार सब संज्ञाशब्द रूढि अर्थात् अव्युत्पन्न होते हैं ।

अब जहां शब्दों में प्रकृति प्रत्यय कुछ भी नहीं जान पड़ता, वहां (प्रत्ययत:०) यदि प्रत्यय जान पड़े तो धातु की कल्पना और धातु जान पड़े तो नवीन प्रत्यय की कल्पना कर लेनी चाहिये । इस प्रकार उन शब्दों का अर्थज्ञान कर लेना चाहिये।।२।।

संज्ञा शब्दों में धातुओं का रूप पूर्व भाग में और शब्द के पर भाग में धातु से परे प्रत्यय की कल्पना करनी चाहिये । और जिस शब्द में जिस अनुबन्ध का कार्य दीख पड़े वैसे ही सानुबन्धक धातु वा प्रत्ययों की ऊहा करनी चाहिये । अर्थात् आत्मनेपद दीख पड़े तो अनुदात्तेत् वा ङित् धातु जानना, और जो आद्युदात्त स्वर हो तो ञित् वा नित् प्रत्यय की कल्पना करनी चाहिये । यह कल्पना सर्वत्र नहीं करनी, किंतु वैदिक वा लौकिक सत्प्रयुक्त शब्दों के अर्थ जानने के लिये शब्दों के पूर्व भाग में धात्वर्थ की और पर भाग में प्रत्ययार्थ की कल्पना करनी चाहिये ।

यह सब सम्बन्ध ऋषि लोगों ने इसलिये बांधा है कि अगाध शब्द सागर की थाह व्याकरण से भी नहीं मिल सकती। जो कहें कि ऐसा व्याकरण क्यों नहीं बनाया कि जिससे शब्द-सागर के पार पहुंच जाते, तो यह समझना चाहिये कि कितने ही पोथा बनाते और जन्म-जन्मान्तरों भर पढ़ते तो भी पार होना दुर्लभ ही था, इसलिये यह पूर्वोक्त व्याकरण से सब प्रबन्ध जताया है ।। ३ ।।

उणादिगण में कारक-व्यवस्था का यह नियम है कि—

दाशगोघ्नौ संप्रदाने ।। अ० ३ । ४ । ७३ ।।

यह सूत्र सामान्य कृदन्त का नियामक है, कि दाश और गोघ्न शब्द औणादिक हों, वा अष्टाध्यायी से सिद्ध हों, परन्तु प्रत्यय संप्रदान कारक में ही हों। इस नियम से ये दो ही शब्द संप्रदान में होते हैं, अन्य नहीं।

भीमादयोऽपादाने ।। अ० ३ । ४ । ७४ ।।

भीमादि शब्दों में अपादान कारक में ही प्रत्यय होते हैं। भीमादि शब्द औणादिक हैं। जैसे—भीमः। भीष्मः। भयानकः। वरुः। चरुः। भूमिः। रजः। संस्कारः। संक्रन्दनः। प्रपतनः। समुद्रः। स्रुचः। स्रुक्। खलतिः। इति भीमादिगणः।

ताभ्यामन्यत्रोणादयः ।। अ० ३ । ४ । ७५ ।।

उन संप्रदान और अपादान दोनों कारकों से भिन्न अन्य कारकों में उणादि प्रत्यय होते हैं।

व्युत्पन्न पक्ष में उणादिप्रत्ययान्त शब्दों के यौगिक होने से प्रत्ययों को कृत्संज्ञक मान के कर्त्ता में प्राप्त हैं, इसलिये यह

कारकनियम है । और भाव में भी उणादि प्रत्यय होते हैं। संप्रदान और अपादान को छोड़ के अन्य कारकों में तो उणादि-प्रत्ययों का यथेष्ट विधान है, परन्तु बहुलवचन से कहीं संप्रदान में भी कोई प्रत्यय कर दिये हों, तो चिन्ता नहीं।

इस उणादिगण की एक वृत्ति छपी भी है, परन्तु वही पोपलीला आदि का जगड्वाल बहुत और प्रयोजन थोड़ा सिद्ध होता हैं, इसलिये यह कोष बनाना पड़ा। इस ग्रन्थ में सूत्रों का पाठ तथा अर्थ बहुधा सुगम है, इसीलिये प्रति सूत्र का अर्थ वृत्ति में नहीं किया, और जहां कुछ कठिन जान पड़ा वहां खोल दिया है। अनुवृत्ति भी बहुधा जनादी है।

इसका मूल ऊपर २ पृथक् इसलिये छपवाया है कि अध्येता लोगों को पाठ करने और घोषण से कण्ठस्थ करने में सुगमता रहेगी। जो अंक सूत्र के अन्त में लिखा है, वही नीचे वृत्ति के आदि में डाल दिया है, इससे बड़ी सुगमता होगी।

इसमें विशेष करके लौकिक शब्द और सामान्य से वैदिक लौकिक दोनों ही सिद्ध किये हैं। निघण्टु में जितने वैदिक शब्द हैं, उनमें से बहुतों का निर्वचन वृत्ति में मिलेगा। सो दोनों की अकारादि सूची को देख के खोज लेना चाहिये। निर्वचन तो सब शब्दों का कर दिया है, परन्तु वे धातुगणानुबन्ध और अर्थ के सहित यहां नहीं लिखे हैं, क्योंकि ग्रन्थ बहुत बढ़ जाता; इसलिये धातु के प्रयोग से गण अनुबन्ध तथा उसके पर्य्याय शब्द से धातु के अर्थ का बोध कर लेना चाहिये।

संस्कृत में वृत्ति बनाने का यही प्रयोजन है कि जो लोग पठनपाठन व्यवस्था के पहिले पुस्तकों को पढ़ेंगे, उनके लिये

संस्कृत कुछ कठिन नहीं होगा । और संस्कृत भी सरल ही बनाया है । कई शब्दों के अर्थ इति शब्द लगा कर भाषा में भी खोल दिये हैं ।

स्थान महाराणाजी का उदयपुर
माघकृष्ण १ संवत् १९३९ } दयानन्द सरस्वती

---

* ओ३म् *

अथोणादिकोषः

[अथ प्रथमपादारम्भः]

कृवापाजिमिस्वदिसाध्यशूभ्य उण् ।। १ ।।

कारुः । वायुः । पायुः । जायुः । मायुः । स्वादुः । साधुः । आशुः आशुः ।। १ ।।

---

१. करोतीति **कारुः** कर्त्ता शिल्पी वा । वाति गच्छति जानाति वेति **वायुः** पवनः परमेश्वरो वा । पाति रक्षति स **पायुः** रक्षकः गुदेन्द्रियं वा । जयत्यभिभवति तिरस्करोति शत्रूनिति **जायुः** शूर; जयति रोगानिति जायुरौषधं वैद्यो वा । यो मिनोति प्रक्षिपति स **मायुः**; अथवा मिनोति प्रक्षिपत्यूष्माणमिति मायुः पित्तम् । गां विकृतां वाचं मिनोतीति 'गोमायुः' शृगालः । स्वद्यते भोक्तुमभीप्स्यते तत् **स्वादु** भोज्यमन्नं वा । साध्नोति धर्म्यं कर्मेति **साधुः** सज्जनः । अश्नुते व्याप्नोति तत् **आशुः** शीघ्रम्; अश्नुते सद्योऽध्वानमिति **आशुः** अश्वः; वाऽश्यते भुज्यते शीघ्रमित्याशुर्धान्यं व्रीहिः ।

बहुलवचनात्—स्नाति शोधयत्यङ्गानीति **स्नायुः** नाडी वा । कक्यते लोलश्चञ्चलो भवतिये नेति **काकुः** भयादिः ध्वनेर्विकारो वा । हल्यते छिद्यतेऽन्नमनेनेति **हालुः** दन्तो वा । वसति जगदस्मिन् वा सर्वस्मिन् यो वसति स **वासुः** ईश्वरः, इत्यादि ।।

छन्दसीणः ॥ २ ॥ आयुः ॥ २ ॥

दृसनिजानिचरिचटिरहिभ्यो ञुण् ॥ ३ ॥

दारु । सानुः । जानु । चारु । चाटु । राहुः ॥ ३ ॥

किंजरयोः श्रिणः ॥ ४ ॥ किंशारुः । जरायुः ॥ ४ ॥

त्रो रश्च लः ॥ ५ ॥ तालुः ॥ ५ ॥

कृके वचः कश्च ॥ ६ ॥ कृकवाकुः ॥ ६ ॥

---

२. वेद इण् धातोरुण् । एति प्राप्नोति सर्वानिति **आयुः** जीवनकालः । सान्तस्तु द्वितीयपादे वक्ष्यते ॥

३. दीर्यते भिद्यत इति **दारु** काष्ठं वा । सनति सम्भजति सनोति ददाति वा स **सानुः**; पर्वतैकदेशशृङ्गबुधमार्गवात्यापर्णवनानि च सानूनि वा । जायन्ते- ऽस्मात्तत् **जानु** जङ्घाया उपरिभागो वा । **जनिवध्योश्च** । [७ । ३ । ३५] इति प्रतिषिद्धाऽप्यनुबन्धद्वयसामर्थ्याद् वृद्धिर्भवति । चरति चक्षुरादिष्विति **चा**[रु] शोभनम् । चटति भिनत्तीति **चाटु** प्रियं वचो वा । रहति त्यजति दोषानिति **राहुः** ग्रहविशेषो वा ॥

४. किं शीर्यतेऽनेनेति **किंशारुः** धान्यविशेषो वा । जरां जीर्णतामेतीति **जरायुः** गर्भाशयो गर्भावरणं वा ॥

५. 'तॄ' धातोर्ञुण् रेफस्य लत्वम् । तरन्ति निःसरन्ति वर्णा यत इति **तालुः** मुखैकदेशः ।

बाहुलकात्—अर्यते प्राप्यत इति **आलु** भक्ष्यं कन्दं वा । भृणाति स्वतापे[न] छेदयति पदार्थानिति **भालुः** सूर्यः । शृणाति चित्तं हिनस्तीति **शालुः** कषायद्रव्[यं] वा, इत्यादि ॥

६. कृकोपपदाद्वचधातोर्ञुण् । कृकेन कण्ठेन वक्तीति **कृकवाकुः** यवनादिम[यूरो] यूरो वा ॥

भृमृशीङ्तृचरित्सरितनिधनिमिमस्जिभ्य उः ॥ ७ ॥

भरुः । मरुः । शयुः । तरुः । चरुः । त्सरुः । तनुः । धनुः । मयुः । मद्गुः ॥ ७ ॥

अणश्च ॥ ८ ॥ अणुः ॥ ८ ॥

धान्ये नित् ॥ ९ ॥ अणवः ॥ ९ ॥

शॄस्वृस्निहित्रप्यसिवसिहनिक्लिदिबन्धिमनिभ्यश्च ॥ १० ॥

शरुः । स्वरुः । स्नेहुः । त्रपु । असुः । वसु । हनुः । क्लेदुः । बन्धुः । मनुः ॥ १० ॥

---

७. भरति बिभर्त्ति वेति **भरुः** स्वामी । म्रियन्ते भूतान्यस्मिन्निति **मरुः** निर्जलो देशो वा । शेतेऽसौ **शयुः** शयनशीलः यस्तरति येन वा स **तरुः** वृक्षो वा । चरति चर्यतेऽग्निना भक्ष्यत इति **चरुः** यज्ञपाको वा । त्सरति कुटिलं गच्छतीति **त्सरुः** खड्गमुष्टिर्वा । तन्यन्ते कर्माण्यनेनेति **तनुः** शरीरं स्वल्पं वा । धन्यते धनं प्राप्यतेऽनेनेति **धनुः** शास्त्रं शस्त्रं वा । मिनोति सुशब्दं प्रक्षिपतीति **मयुः** वानरो वा । मज्जति शुद्ध्योति भवतीति **मद्गुः** जलप्लवी पक्षी वा । न्यङ्क्वादित्वात् [७ । ३ । ५३] कुत्वम् ।

बाहुलकात्—गण्डति स **गण्डुः** वदनैकदेशः, उपधानम्—तकिया इति प्रसिद्धं तैलं वा ॥

८. अणति शब्दयतीति **अणुः** अतिसूक्ष्मं वा ।

अत्र चकारग्रहणाद् वा कटति विकारयतीति **कटुः** रसः । वटति गुणकर्माणि विभजतीति **वटुः** द्विजसुतो वा ॥

९. अणन्ति शब्दायन्ते यैस्तऽणवोऽन्नविशेषा वा । नित्करणमाद्युदात्तस्वरार्थम् ॥

१०. अत्र चादुप्रत्ययो निदिति सम्बन्धः, एवमर्थ एव पृथक्पाठः । शृणाति हिनस्ति येनेति शरुः आयुधं **कोपो** वा । स्वर्यन्त उपतप्यन्ते प्राणिनोऽनेनेति **स्वरुः**

स्यन्देः सम्प्रसारणं धश्च ॥ ११ ॥ सिन्धुः ॥ ११ ॥
उन्देरिच्चादेः ॥ १२ ॥ इन्दुः ॥ १२ ॥
ईषेः किच्च ॥ १३ ॥ इषुः ॥ १३ ॥
स्कन्देः सलोपश्च ॥ १४ ॥ कन्दुः ॥ १४ ॥
सृजेरसुम् च ॥ १५ ॥ रज्जुः ॥ १५ ॥

वज्रम् । स्निह्यति यस्मिन् स **स्नेहुः** व्याधिर्वा । अग्निं प्राप्य यत्त्रपते लज्जितमिव भवतीति तत् **त्रपु** सीसकं रंगं वा । अस्यति प्रक्षिपति वायुमिति **असुः** प्राणः । असुं प्राणं राति ददातीत्यसुरो मेघः वस्त आच्छादयति दुखं येन तद् **वसु** धनं वा; वसन्ति प्राणिनो येषु ते वसवोऽग्न्यादयोऽष्टौ । हन्यतेऽनेनेति **हनुः** कपोलावयवः प्रहरणं मृत्युर्वा । क्लिद्यत्यार्द्रीकरोति चित्तमिति **क्लेदुः** चन्द्रमा वा । प्रेम्णा बध्नातीति **बन्धुः** सज्जनो वा । मन्यते चराचरं जगज्जानातीति **मनुः** ईश्वरः; मनुतेऽवबुध्यते शास्त्रमिति मनुर्विद्वान् राजर्षिः ।

बहुलवचनात्—बिन्दत्यवयवीभवतीति **बिन्दुः** परिमाणं जलादिकणो वा ॥

११. स्यन्दन्ते प्रस्रवन्त्युदकान्यस्मिन्निति **सिन्धुः** ॥

१२. उन्द धातोरुः प्रत्यय आदिवर्णस्येकारादेशश्च । उनत्त्यार्द्रीकरोति पदार्थानिति **इन्दुः** चन्द्रमा वा ॥

१३. अत्र चकारादिच्चेत्यनुवर्त्तते, तेन दीर्घस्य ह्रस्वो भवति । ईषति गच्छति हिनस्ति वा शत्रूनिति **इषुः** वाणो वीरो वा । कित्वाद् गुणाभावः ॥

१४. स्कन्दति गच्छति शुष्यति वा येन स **कन्दुः** कुमाराणां क्रीडायै गेंद इति प्रसिद्धं वा ॥

१५. अत्र पूर्वसूत्रात्सलोप इत्यनुवर्तते । धातोरसुमागम आदिसकारलोपश्च । पुनर्ऋकारस्य यणादेश आगमसकारस्य जश्त्वं च । सृजन्त्युदकनिस्सारणायेति **रज्जुः** जलोद्धरणं वा ॥

कृतेराद्यन्तविपर्ययश्च ॥ १६ ॥ तर्कुः ॥ १६ ॥

नावञ्चेः ॥ १७ ॥ न्यङ्कुः ॥ १७ ॥

फलिपाटिनमिमनिजनां गुक्पटिनाकिधतश्च ॥ १८ ॥

फल्गुः । पटुः । नाकुः । मधुः । जतुः ॥ १८ ॥

बलेर्गुक् च ॥ १९ ॥ बल्गुः ॥ १९ ॥

शः कित्सन्वच्च ॥ २० ॥ शिशुः ॥ २० ॥

यो द्वे च ॥ २१ ॥ ययुः ॥ २१ ॥

---

१६. आद्यन्तविपर्ययोऽर्थादादौ तकारोऽन्ते ककारः, उश्च प्रत्ययः । कृन्तति छिनत्ति वस्त्रादिकमनेन स **तर्कुः** कर्तनी वा ॥

१७. ये नितरामञ्चन्ति गच्छन्ति ते **न्यङ्कवः** जातिविशेषाः हरिणा वा ॥

१८. उप्रत्यये 'फल' धातोर्गुगागमः । फलति निष्पद्यते स **फल्गुः** असारो वा । नपुंसके 'फल्गु' फलम् । 'पाटि'धातोः पटिरादेशः । पाटयति ज्ञापयति सदसत्पदार्थान् स **पटुः** वाग्मी विशारदो वा । 'नम'धातोर्नाकिरादेशः । नमतीति **नाकुः** वल्मीको वा । 'मन' धातोर्धकारादेशः । मन्यन्ते विशेषेण जानन्ति यस्मिन् स **मधुः** चैत्रो मासः मधूको मद्यं क्षौद्रं पुष्परसो वा । 'जन'धातोस्तकारादेशः । जायते प्रादुर्भूयतेऽनेनेति **जतुः** लाक्षा वा ॥

१९. बलते प्राणयतीति **बल्गुः** नपुंसके 'बल्गु' शोभनम् ॥

२०. सन्वद्भावाद् द्वित्वादिकम् । श्यति तनूकरोति पित्रोः शरीरमिति । **शिशुः** बालको वा ॥

२१. अत्र सन्वदित्यनुवर्तमानेऽपि द्वेग्रहणमभ्यासेत्वनिवृत्त्यर्थम् । यान्ति प्राप्नुवन्ति देशान्तरमनेनेति **ययुः** अश्वो वा ॥

कुर्भ्रश्च ॥ २२ ॥ बभ्रुः ॥ २२ ॥

पृभिदिव्यधिगृधिधृषिहृषिभ्यः ॥ २३ ॥

पुरुः । भिदुः । विधुः । गृधुः । धृषुः । हृषुः ॥ २३ ॥

कृग्रोरुच्च ॥ २४ ॥ कुरुः । गुरुः ॥ २४ ।

अपदुःसुषु स्थः ॥ २५ ॥ अपष्ठु । दुष्ठु । सुष्ठु ॥ २५ ॥

रपेरिच्चोपधायाः ॥ २६ ॥ रिपुः ॥ २६ ॥

---

२२. अत्र द्वे इत्यनुवर्त्तते । 'भृ'धातोः कुः प्रत्ययो द्वित्वं च । बिभर्ति सर्वमिति **बभ्रुः** नकुलः पिङ्गलो वा ।

सूत्रे चकारग्रहणादन्यधातुभ्योऽपि कुः प्रत्ययस्तेषां द्वित्वं च भवति। तद्यथा—करोतीति **चक्रुः** कर्त्ता । हन्तीति **जघ्नुः** हन्ता । पाति रक्षतीति **पपुः** पालकः, इत्यादि ॥

२३. एभ्यः कुः । पिपर्त्ति पालयति पूरयति वा स **पुरुः** बहुरिन्द्रियं वा। भिनत्तीति **भिदुः** वज्रं वा । विध्यति दुर्गन्धि दिवसं वेति **विधुः** कर्पूरं चन्द्रमाः वा । व्यधेः **ग्रहिज्या** [६ । १ । १६] इति सम्प्रसारणम् । गृध्नोत्यभिकाङ्क्षते येन स **गृधुः** कामो वा । धृष्णोति प्रगल्भो भवतीति **धृषुः** दक्षः । हृष्यति स **हृषुः** हर्षकः दृशि इति पाठान्तरे **दृशुः** दर्शकः ॥

२४. यः करोति येन वा स **कुरुः** कुरवो राजानो वा । गृणात्युपदिशति वेदशास्त्रविद्यामाचारं च स **गुरुः** सर्वेषां गुरुत्वादीश्वरः आचार्यः पिता वा ॥

२५. अप, दुः, सु इत्येतेषूपपदेषु 'स्था' धातोः कुः । अपतिष्ठतीति **अपष्ठु** वामभागः प्रतिकूलः पदार्थो वा । निन्दितस्तिष्ठतीति **दुष्ठु** अविनीतः । सुतिष्ठतीति **सुष्ठु** शोभनम् । सर्वत्र सुषामादित्वात् [८ । ३ । ९८] षत्वम् ॥

२६. अनिष्टं रपति वदतीति **रिपुः** शत्रुः । चकारग्रहणात्कुप्रत्यये परे इकारादेश एव समुच्चीयते ॥

अर्जिदृशिकम्यमिपंसिबाधामृजिपशितुक्धुक्दीर्घहकाराश्च ॥ २७ ॥

ऋजुः । पशुः । कन्तुः । अन्धुः । पांसुः । बाहुः ॥ २७ ॥

प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च ॥ २८ ॥

पृथुः । मृदुः । भृगुः ॥ २८ ॥

लङ्घिबंह्योर्नलोपश्च ॥ २९ ॥ लघुः । बहुः ॥ २९ ॥

२७. कुप्रत्यये सति अर्ज्यादिप्रकृतीनामृज्यादय आदेशा भवन्ति । अर्जयति सञ्चिनोति गुणानिति **ऋजुः** कोमलो वा । पश्यति सर्वमिति **पशुः**, पश्यन्ति येन वा स **पशुः** अग्निः । पश्यति जानाति स्वार्थमिति **पशुः** गवादिः । 'कम'-धातोस्तुक् । कामयन्ते यं स **कन्तुः** कामो वा । 'अम'धातोर्धुक् । अमति रुजति गच्छति वेति **अन्धुः** कूपो वा ।

अस्मिन् सूत्रे चकारग्रहणाद् बहुलवचनाद्वा 'अम'धातोर्बुगागमोऽपि भवति । अमन्ति गच्छन्ति चेष्टन्ते प्राणिनो येन तद् **अम्बु** जलम् । पंसयति नष्टमिव भवतीति **पांसुः** धूलिर्वा । 'पंस'धातोर्दीर्घः । क्षेत्रार्थं चिरकालात्सञ्चितं गोमयं वा, इत्याद्येवार्थेषु पांशुरिति तालव्यान्तोऽपि शब्दो दृश्यते । बाध्यन्ते विलोड्यन्ते पदार्था याभ्यां तौ **बाहू** भुजौ । प्रायेणाऽयं द्विवचनान्तः ॥

२८. प्रथ्यादिभ्यः कुः प्रत्ययः, तस्मिन् सति प्रथिम्रद्योः सम्प्रसारणं सलोपश्च । प्रथते । कीर्त्तिः* वा विस्तारयति स **पृथुः** राजविशेषो विस्तीर्णः पदार्थो वा । म्रदते म्रदितुं शक्यते स **मृदुः** मादकः कोमलं वा । भृज्जति तपसा शरीरमिति **भृगुः** ऋषिः प्रतापी वा । न्यङ्क्वादित्वाद् [७ । ३ । ५३] कुत्वम् ॥

२९. लंघिबंहिभ्यां कुरनयोर्नलोपश्च । लङ्घति गन्तुं शक्नोतीति **लघुः**

* द्वि० सं० में कीर्त्ति वा प्रख्यापयति स पृथूराजविशेषो प्रख्यातः पदार्थो वा ।

ऊर्णोतेर्नुलोपश्च ।। ३० ।। ऊरुः ।। ३० ।।

महति ह्रस्वश्च ।। ३१ ।। उरु ।। ३१ ।।

श्लिषेः कश्च ।। ३२ ।। श्लिकुः ।। ३२ ।।

आङ्परयोः खनिशृभ्यां डिच्च ।। ३३ ।। आखुः । परशुः ।।३३।।

हरिमितयोर्द्रुवः ।। ३४ ।। हरिद्रुः । मितद्रुः ।। ३४ ।।

शते च ।। ३५ ।। शतद्रुः ।। ३५ ।।

स्वल्पो वा । अस्यैव **'बालमूललघ्वसुरालमङ्गुलीनां वा लो रत्वमापद्यते'** इति वार्त्तिकेन रेफः । रघू राजविशेषः । बंहते वर्धतेऽन्येभ्य इति **बहुः** प्रचुरः सङ्ख्या वा ।।

३० ऊर्णोत्याच्छादयति या सा **ऊरुः** जङ्घा । कुप्रत्यये नुभागलोपः ।।

३१. 'ऊर्णु'धातोः कुप्रत्ययस्तस्मिन् नुभागलोप ऊकारस्य ह्रस्वत्वं च । ऊर्णोत्याच्छादयत्यल्पानिति **उरु** महत् ।।

३२. श्लिष्यति पदार्थैः सह सम्बध्यते स **श्लिकुः** परवशो ज्योतिषं वा ।।

३३. आसमन्तात्खनति भूमिमिति **आखुः** मूषको वराहो वा । परान् शत्रून् शृणाति हिनस्ति येन स **परशुः** शस्त्रभेदः कुठारो वा । पृषोदरादित्वात् [६ । ३ । १०९] अकारलोपे पूर्वार्थे एव **पर्शुः** अपि दृश्यते ।।

३४. हरिणाऽश्वेन वा द्रवति गच्छतीति **हरिद्रुः** दारुहरिद्रा वा । मितं परिमितं द्रवतीति **मितद्रुः** शोभनगमनो वा ।।

३५. शतधा बहुप्रकारैर्द्रवति गच्छतीति **शतद्रुः** नदीभेदो गङ्गा वा ।।

अत्र बाहुलकात्केवलादपि 'द्रु'धातोः कुप्रत्ययो दृश्यते । यं द्रवन्ति कार्यार्थं प्राणिनः प्राप्नुवन्तीति स **द्रुः** वृक्षः शाखा वा । द्रुवः शाखा अस्मिन् सन्तीति द्रुमः वृक्षः (**द्युद्रुभ्यां मः**) [५ । २ । १०८.] इति सूत्रेण मत्वर्थीयो मः प्रत्ययः ।।

खरुशङ्कुपीयुनीलङ्गुलिगु ।। ३६ ।।

मृगय्वादयश्च ।। ३७ ।। मृगयुः । देवयुः । मित्रयुः ।। ३७ ।।

३६. खरु इत्येवमादयश्शब्दाः कुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । 'खन'धातोः कुःनस्य रः । खनति शरीरमिति **खरुः** कामो दन्तः संहर्त्ता दर्पोऽश्वो वा । श्वेतार्थे तु वाच्यवत्, यथा खरुरियं ब्राह्मणी, खरु कुलम्, खरुः पुमान् । यं दृष्ट्वा शङ्कते सन्दिग्धो भवतीति तत् शङ्कु विषं कीलं शस्त्रं संख्या वृक्षभेदो जलभेदः पापं स्थाणुर्वा । पिबति पाति वा स **पीयुः** कालः काको वा । कुप्रत्यये धातोरीकारादेशो युगागमश्च । नितरां लङ्गति गच्छतीति **नीलङ्गुः** क्रिमिजाति-र्भ्रमरः पुष्पं वा । कुप्रत्यये उपसर्गस्य दीर्घत्वम् । सर्वत्र लगति संगच्छते तत् **लिगु** चित्तं वा । 'लगे' धातोरुपधाया इत्वम् ।

बाहुलकात्—खञ्जति गमने विकलो भवतीति **पङ्गुः** गतिहीनो वा । कुप्रत्यये 'खञ्ज'धातोः पङ्गादेशः । स्वगन्धेनान्यगन्धान् हन्तीति **हिङ्गुः** वणिग्द्रव्यम् ।।

३७. मृगयुप्रभृतयः कुप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मृग, देव, मित्र, कुमार, अध्वर इत्येतेषूपपदेषु 'या प्रापणे' इत्यस्मात् कुप्रत्ययो भवति । मृगान् याति प्राप्नोतीति **मृगयुः** व्याधः । देवान् विदुषो याति स **देवयुः** धार्मिकः । मित्रान् यातीति **मित्रयुः** लोकव्यवहारवित् । कुमारावस्थां यातीति **कुमारयुः** राजपुत्रो वा । अध्वरं यज्ञं यातीति **अध्वर्युः** याजकः । अध्वरस्यान्त्यलोपश्च ।

बहुलवचनात्—कोहयति विस्मापयतीति **कुहुः** । यस्यां चन्द्रो न दृश्यते साऽमावास्या वा **कुहूः** । पण्डति गच्छतीति **पाण्डुः** रङ्गविशेषो राजविशेषो वा । पीलति प्रतिष्टभ्नोति निरुणद्धि जीवानिति **पीलुः** हस्ती वृक्षः काणुः परमाणवः पुष्पाणि वा । 'मंजिः' सौत्रो धातुस्तस्मात् कुः । मञ्जति चित्तं प्रसादयतीति **मञ्जुः** शोभनम् । एवं **निघण्टु पलाण्डु कर्करेटु करेटु डमरु** प्रभृतयः शब्दा अप्यत्रैव द्रष्टव्याः, आकृतिगणत्वादस्य ।।

मन्दिवाशिमथिचतिचङ्क्यङ्किभ्य उरच् ॥ ३८ ॥
मन्दुरा । वाशुरा । मथुरा । चतुरः । अङ्कुरः ॥ ३८ ॥
व्यथेः सम्प्रसारणं धः किच्च ॥ ३९ ॥ विधुरः ॥ ३९ ॥
मकुरदर्दुरौ ॥ ४० ॥ [मकुरः । दर्दुरः ॥ ४० ॥]
मद्गुरादयश्च ॥ ४१ ॥
मद्गुरः । कर्बुरः । बन्धुरः । [चिकुराः ।] कुक्कुरः; ।
कुकुरः ॥ ४१ ॥

---

३८. मन्दते स्तौति माद्यति वा यस्यां सा **मन्दुरा** अश्वशाला वा । वाश्यते शब्दं करोतीति **वाशुरा** रात्रिर्वा । मथति विलोडयतीति **मथुरा** नगरी वा । चतते याचते स **चतुरः** दक्षः कुशलो वा । 'चङ्क' इति सौत्रो धातुः, चङ्कति सर्वतो भ्रमति येन स **चङ्कुरः** रथो वा । अङ्क्यते लक्ष्यते निःसृतं दृश्यते सः **अङ्कुरः** बीजोत्पादो वा । अत्र खर्जूरादि वक्ष्यमाणगणेन ऊरप्रत्यये **अङ्कूर** इत्यपि । अर्थः स एव ॥

३९. व्यथते बिभेति यस्मात् स **विधुरो**ऽत्यन्तवियोगः शरीरत्यागो वा । संप्रसारणे सति गुणनिषेधाय कित्वम् । बाहुलकात्थकारस्य धकारो न, तेन 'विथुरः' इत्यपि सिद्धं भवति । **विथुरः** चौरो दुष्टो वा ॥

४०. मकुरदर्दुरावुरच्प्रत्ययान्तौ निपात्येते । मङ्कतेऽलङ्करोति येन स **मकुरः** दर्पणो वा । 'मङ्क'धातोर्नलोपः बाहुलकाद्धातोरकारस्योकारे कृते दर्पणार्थ एव **मुकुर** इत्यपि सिद्धम् । दृणाति विदारयत्युष्णमिति **दर्दुरः** मेघो मण्डूको वाद्यभेदः पर्वतभेदो वा । उरचि 'दृ'धातोर्द्विवचनमभ्यासस्य रुगागमो धातोष्टिलोपश्च निपात्यते ॥

४१. मद्गुरप्रभृतयः शब्दा उरजन्ता निपात्यन्ते । माद्यति हृष्यतीति **मद्गुरः** मत्स्यभेदो वा । धातोर्गुगागमः । कबते वर्णविशेषो भवतीति स **कर्बुरः** श्वेतो दुष्टो वा । धातोरुमागमः: । बध्नाति मार्दवेन स **बन्धुरः** नम्रः सुन्दरो वा ।

असेरुरन् ॥ ४२ ॥ असुरः ॥ ४२ ॥

मसेश्च ॥ ४३ ॥ मसुरा ॥ ४३ ॥

शावशेराप्तौ ॥ ४४ ॥ श्वशुरः ॥ ४४ ॥

अविमह्योष्टिषच् ॥ ४५ ॥ अविषः । महिषः ॥ ४५ ॥

अमेर्दीर्घश्च ॥ ४६ ॥ आमिषम् ॥ ४६ ॥

खर्जूरादित्वादूरप्रत्यये **बन्धूरो**ऽपि उक्तार्थ एव । चिन्वन्त्येकीकुर्वन्ति यांस्ते चिकुराः अत्र धातोः कुगागमः । कोकत आदत्ते परपदार्थमिति **कुक्कुरः; कुकुरः** श्वा, एकार्थौ । पक्षान्तरे कुगागमो निपात्यते ।

अतति निरन्तरं गच्छतीति **आतुरो**ऽशान्तः । धातोरादौ दीर्घः । वान्ति मृगान् प्राप्नुवन्ति यया सा **वागुरा** मृगबन्धनी मृगबन्धनार्थं जालम् । अत्र धातोर्गुगागमो निपात्यते । शक्नोति तरितुमिति **शकुलः** मत्स्यः । वङ्कते कुटिलो भवतीति **वकुलः** वृक्षभेदो वा । अत्रोभयत्र प्रत्ययरेफस्य लत्वम्, वङ्केर्नलोपश्च ॥

४२. अस्यति प्रक्षिपति धर्मं शुभगुणांश्च सः **असुरः** मेघो दुर्जनादिर्वा । नित्करणमाद्युदात्तस्वरार्थम् ॥

४३. मस्यन्ति सुष्ठुतया परिणमन्ते ते **मसुरा** द्विदलविशेषाः । अत्रैव पञ्चमपादे 'मस'धातोरूरन् प्रत्यये **मसूर** इत्यपि सिद्धम् । एकार्थाविमौ । द्विदलान्नेषु 'मसूर' इति प्रसिद्धम् ॥

४४. शु इति शीघ्रार्थवाचिन्युपपद आप्तौ गम्यमानायां 'अशूङ्'धातोरुरन् । शु शीघ्रमश्नुत आप्नोति जामाता यं स **श्वशुरः** दम्पत्योः पिता ॥

४५. अवन्ति नद्यो गच्छन्ति यस्मिन् स **अविषः** समुद्रः । महति पूजयति स्वपुरुषार्थेन इति **महिषः** महान् राजा वा, तद्योगात् 'महिषी' राज्ञी पशुविशेषो वा । अवति प्रीणाति प्राणिन इति **अविषी** नदी वा ॥

४६. टिषच् । अमन्ति गच्छन्ति येन तत् **आमिषं** मांसं वा । अथवाऽमन्ति रोगिणो भवन्ति येन भक्षितेन तदामिषम्, इत्येकार्थः ॥

रुहेर्वृद्धिश्च ॥ ४७ ॥ रौहिषम् ॥ ४७ ॥

तवेर्णिद्वा ॥ ४८ ॥ ताविषी; तविषी ॥ ४८ ॥

नञि व्यथेः ॥ ४९ ॥ अव्यथिषः ॥ ४९ ॥

किलेर्बुक् च ॥ ५० ॥ किल्बिषम् ॥ ५० ॥

इषिमदिमुदिखिदिछिदिभिदिमन्दिचन्दितिमिमिहिमुहिमुचिरुचिरु-धिबन्धिशुषिभ्यः किरच् ॥ ५१ ॥
इषिरः । मदिरा । मुदिरः । खिदिरः । छिदिरः । भिदिरम् । मन्दिरम् । चन्दिरम् । तिमिरम् । मिहिरः । मुहिरः । मुचिरः । रुचिरम् । रुधिरम् । बधिरः । शुषिरम् ॥ ५१ ॥

---

४७. टिषच् । रुहन्त्युत्पद्यन्ते यानि तानि **रौहिषाणि** तृणानि । रौहिषो मृगभेदो वा ॥

४८. 'तव' इति सौत्रो धातुस्तस्माट्टिषच् णिद्विकल्पेन भवति । तवतीति **ताविषी; तविषी** नदी बलं सेना भूमिर्वा ॥

४९. न व्यथत इति **अव्यथिषः** समुद्रः सूर्यो वा । **अव्यथिषी** पृथिवी रात्रिर्वा ॥

५०. किलति क्रीडति विचारशून्यतया कार्येषु प्रवर्त्तते येन तत् **किल्बिषं** पापम् ॥

५१. इष्यादि षोडशधातुभ्यः किरच् । इच्छन्तीष्टं साध्नुवन्त्यनेनेति **इषिरः** अग्निः । माद्यति मत्तो भवति यया सा **मदिरा** सुरा मद्यम् । मोदतेऽसौ **मुदिरः** कामुको वा । मोदन्तेऽनेनेति मुदिरो मेघः । खिद्यति येन स **खिदिरः** चन्द्रमा वा । छिनत्ति येन स **छिदिरः** असिः कुठारो वा । भिनत्ति येनेति **भिदिरं**वज्रम् । मदन्ते स्तुवन्ति स्वपन्ति वा यस्मिंस्तत् **मन्दिरं** गृहं नगरं वा । चन्दन्त्याह्लाद-यन्ति येन स **चन्दिरः** चन्द्रमा हस्ती वा । तेमत्यार्द्रीभवत्यस्मिन् तत् **तिमिरम्**

अशेर्नित् ॥ ५२ ॥ अशिर. ॥ ५२ ॥

अजिरशिशिरशिथिलस्थिरस्फिरस्थविरखदिरा ॥ ५३ ॥.

नेत्ररोगो वा । यो मेहयति सेचयति पृथिवीं मेघजलेन स मिहिरः सूर्य्यो वा । मुह्यति यस्मै वा यो मुह्यति स **मुहिरः** काम्यः पदार्थोऽसभ्यो जनो वा । यो मुञ्चति स्वपदार्थमन्येभ्यो ददाति स **मुचिरः** दानशीलो वा । यद्रोचते प्रीतिकरं भवति तद् **रुचिरं** शोभनम् । रुचिरं वस्त्रं रुचिरः पुत्रो रुचिरा कन्या वा । रुध्यते चर्म्मणा यत्तत् **रुधिरं** शोणितम् । बध्यते शब्दश्रवणान्निरुध्यते स **बधिरः** श्रोत्रविकलः । किलच् प्रत्ययस्य कित्वात् **अनिदिताम्** [६ । ४ । २४] इति नलोपः । शुष्यन्ति पदार्था येन तत् **शुषिरं** छिद्रमाकाशो वा ॥

५२. अश्नाति यः पदार्थान् सः **अशिरः** अग्निः । धृष्टतयाऽश्नाति वाऽशिरो दुर्जनः ॥

५३. अजिरादयः सप्त किरच्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । अजन्ति गच्छन्ति यत्र तत् **अजिरम्** अङ्गनं गृहाग्रभागः । आंगन इति प्रसिद्धम् । शशति दिनाल्पत्वाच्छीघ्रं गच्छति तत् **शिशिरम्** ऋतुर्हिमं शीतलं वस्तु वा । श्रथति विमुञ्चति पुरुषार्थमिति **शिथिलः** पुरुषः, शिथिला कन्या, शिथिलानि तृणानि मृदूनीत्यर्थः । धातोरुपधाया इत्वं रेफस्य लोपः प्रत्ययस्थस्य रेफस्य लत्वं च निपात्यते । गमनागमननिवृत्त्या तिष्ठतीति **स्थिरं** निश्चलम् । धातोराकारलोपः । स्फायते प्रवर्द्धते स **स्फिरः** प्रभावो वा । आयभागस्य लोपो निपातनम् । गमनेऽसमर्थत्वात्तिष्ठतीति **स्थविरः** वृद्धो भिक्षुको वा । धातोर्वुक् ह्रस्वत्वञ्च । खदति हिनस्तीति **खदिरः** वृक्षभेदो वा ।

बाहुलकात्—यः शेते स **शिविरः**, शेरते यस्मिन् तत् शिविरं स्थानं वा 'शीङ्' धातोर्वुक् ह्रस्वत्वञ्च ॥

सलिकल्यनिमहिभडिभण्डिशण्डिपिण्डितुण्डिकुकिभूभ्य इलच् ॥ ५४ ॥

सलिलम् । कलिलम् । अनिलः । महिलः । भडिलः । भण्डिलः । शण्डिलः । पिण्डिलः । तुण्डिलः । कोकिलः । भविलः ॥ ५४ ॥

कमेः पश्च ॥ ५५ ॥ कपिलः ॥ ५५ ॥

गुपादिभ्यः कित् ॥ ५६ ॥ गुपिलः । तिजिलः । गुहिलम् ॥५६॥

---

५४. सल्यादिभ्य इलच् । सलति गच्छतीति **सलिलं** जलं वा । कलति सङ्ख्याति तत् **कलिलं** मिश्रं दुखेन साध्यं गहनमिति वा । अनिति जीवति जीवयति वा स **अनिलः** वायुर्वा । यो महयति यं महयन्ति येन वा मह्यते पूज्यते स **महिलः** पुमान्, महिलं स्थानम्, महिला स्त्री वा । बाहुलकादिलच्, इकारस्यैकारे सति **महेला** स्त्री इत्यपि सिद्धं भवति । 'भड' इति सौत्रो धातुः । भडति हिनस्तीति **भडिलः** शूरो वा । भडति परिचरति स्वामिनमिति भडिलः सेवकः, इत्यादि । भण्डयति परिहसति येन स **भण्डिलः** कल्याणं वा । शण्डति रोगयुक्तो भवतीति **शण्डिलः** ऋषिविशेषो वा, यस्य गोत्रापत्यं 'शाण्डिल्य' इति प्रसिद्धम् । पिण्डति सङ्घातं करोति स **पिण्डिलः** गणको वा । तुण्डति तोडति पृथक् करोति स **तुण्डिलः** उच्चनाभिर्जनो वा । कोकत आदत्तेऽसौ **कोकिलः** पक्षिविशेषो वा । यो भवति स **भविलः** भवितुं योग्यो वा ।

बाहुलकात्—कुटति कौटिल्यं करोति स **कुटिलः** क्रूरकर्मा वा ॥

५५. कमेरिलच् मस्य पः । कामयतेऽसौ **कपिलः** वर्णभेदो मुनिविशेषो वा ॥

५६. इलचः कित्व गुणनिषेधार्थम् । गोपायति रक्षति प्रजा इति **गुपिलः** राजा वा । तेजते तीक्ष्णीकरोति वा तिज्यते सह्यते सर्वैः स **तिजिलः** चन्द्रमा वा । गूहते वृक्षैराच्छादितो भवतीति **गुहिलं** वनं वा ॥

मिथिलादयश्च ॥ ५७ ॥ मिथिला ॥ ५७ ॥

पतिकठिकुठिगडिगुडिदंशिभ्य एरक् ॥ ५८ ॥

पतेरः । कठेरः । कुठेरः । गडेरः । गुडेरः । दशेरः ॥ ५८ ॥

कुम्बेर्नलोपश्च ॥ ५९ ॥ कुबेरः ॥ ५९ ॥

शदेस्तश्च ॥ ६० ॥ शतेरः ॥ ६० ॥

अन्येपि—पूजितुमादत्तुं योग्यः **पूजिलः** विद्वान् । शोषयति सर्वमिति **शुषिलः** वायुः । देवते प्रकाशयति धर्ममिति **देविलः** धार्मिको वा ॥

५७. मिथिलादय इलच्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । मथ्यते या सा **मिथिला** । मथ्यन्ते शत्रवो यत्र सा मिथिला विदेहानां राज्ञां नगरी वा । अकारस्येत्वं निपात्यते । गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति यां सा **गतिला** वेत्रलता वा । गमेस्तकारान्तादेशः । या तङ्कति कृच्छ्रेण जीवति सा **तकिला** ओषधिर्वा । नलोपः । चमति भक्षयतीति **चण्डिला** काचिन्नदी वा । धातोर्डुगागमः । यः पथति निरन्तरं गच्छति स **पथिलः** पथिको वा, इत्यादि ॥

५८. पतति गच्छतीति **पतेरः** गन्ता पक्षी वा । कटति कृच्छ्रेण जीवतीति **कठेरः** कारागारिको वा । **कुठेरः** अपि कृच्छ्रजीवी पर्णाशो वा । 'कटहर' इति प्रसिद्धम् । गडति सिञ्चतीति **गडेरः** मेघो वा । गुडति रक्षति स **गुडेरः** रक्षकः । दशति दंष्ट्राभ्यामिति **दशेरः** हिंसको जीवो वा । अनुनासिकलोपः ॥

५९. कुम्बत्यन्यानाऽऽच्छादयतीति **कुबेरः** धनाध्यक्षो विद्वान् वा । इदित्वादप्राप्तो नलोपः एरकि विधीयते ॥

६०. शीयते शातयति दुःखाकरोतीति **शतेरः** शत्रुर्वा धातोर्दकारस्य तकारादेशः ॥

मूलेरादयः ॥ ६१ ॥ मूलेरः । गुधेरः । गुहेरः । मुहेरः ॥६१॥

कबेरोतच् पश्च ॥ ६२ ॥ कपोतः ॥ ६२ ॥

भातेर्डवतुप् ॥ ६३ ॥ भवान् ॥ ६३ ॥

कठिचकिभ्यामोरन् ॥ ६४ ॥ कठोरः । चकोरः ॥ ६४ ॥

किशोरादयश्च ॥ ६५ ॥ किशोरः । सहोरः ॥ ६५ ।

६१. मूलेरादय एरक्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । यो मूलति सर्वोपरि तिष्ठति स **मूलेरः** भूपतिर्वा । गुधति सर्वतो वेष्टयतीति **गुधेरः** रक्षको वा । गूहते येन स **गुहेरः** लोहघातनो वा । मुह्यति विक्षिप्त इव भवतीति **मुहेरः** मूर्खः । मुह्यत्यनेन वृषभादिरिति वा **मुहेरः** कर्णमर्दनादौ वृषभमुखबन्धनम् । 'मुहेर' इत्येव भाषायां प्रसिद्धम् ॥

६२. ओतच्प्रत्ययो वकारस्य पकारः । कबते विचित्रवर्णो भवतीति **कपोतः** पक्षिभेदो वा ॥

६३. भाति दीप्तो भवति दीपयति वा स **भवान्** । सर्वनामवाचकः सर्वनामसंज्ञकश्चायं शब्दः ॥

६४. कठति कृच्छ्रेण जीवति येन स **कठोरः** कठिनः पूर्णो वा । चकते तृप्यति स **चकोरः** पक्षिविशेषो वा ॥

६५. किशोरादय ओरन्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । किं शृणाति हिनस्तीति **किशोरः** अश्वशावको वा । किमो मलोपः 'शॄ'धातोष्टिलोपश्च निपातनम् । सोढुं शीलः **सहोरः** साधुर्वा । गायति शब्दं करोतीति **गौरः** । अरुणे श्वेते पीते निर्मले च वाच्यलिङ्गः । गौरः कुमारः, गौरी कन्या, गौरं कुलम्, गौरं कमलम्, गौरः सर्षपः, इत्यादि । 'गै'धातोराकारादेशे कृत ओरना सह वृद्ध्येकादेशः । आयादेशस्त्वात्वाप्राप्तौ भवति ॥

कपिगडिगण्डिकटिपटिभ्य ओलच् ॥ ६६ ॥
कपोलः । गडोलः । गण्डोलः । कटोलः । पटोलः ॥ ६६ ॥
मीनातेरूरन् ॥ ६७ ॥ मयूरः ॥ ६७ ॥
स्यन्देः संप्रसारणं च ॥ ६८ ॥ सिन्दूरम् ॥ ६८ ॥
सितनिगमिमसिसच्यविधाञ्क्रुशिभ्यस्तुन् ॥ ६९ ॥
सेतुः । तन्तुः । गन्तुः । मस्तुः । सक्तुः । ओतुः । धातुः । क्रोष्टुः ॥ ६९ ॥

६६. कम्पते चलति स **कपोलः** वदनैकदेशो वा । सूत्रे निर्देशादेव नलोपः । गडति सिंचति स **गडोलः** । गण्डति स **गण्डोलः** वदनैकदेशो वा । गडोलगण्डोलौ गुडकपर्यायौ वा । कटति वर्षत्यावृणोति वा स **कटोलः** कटुश्चालो वा । पटति गच्छति स **पटोलः** फलविशेषो वस्त्रविशेषो वा ।

बाहुलकात्—कण्डति माद्यतीति **कण्डोलः** चाण्डालो वा ॥

६७. मीनाति हन्तीति **मयूरः** पक्षिविशेषो वा । धातोर्गुणादेशः । बहुलवचनात्—मीनातेरात्वनिषेधः ॥

६८. स्यन्दते प्रस्रवति तत् **सिन्दूरम्** रक्तचूर्णं वृक्षभेदो वा, इत्यादि । ऊरन्प्रत्यये यकारस्य संप्रसारणम् ॥

६९. सिनोति बध्नातीति **सेतुः** समुद्रो वा । (**तितुत्रतथ०** [७ । २ । ९] इतीट् निषेधः । तनोति विस्तृणोतीति **तन्तुः** सूत्रं वा । वरामुत्तमां विद्यां तनोति स वरतन्तुर्मुनिः । वरतन्तुनाप्रोक्तो वारतन्तवीयो ग्रन्थः । गच्छतीति **गन्तुः** पथिको वा । समन्ताद् गच्छति भ्रमतीति आगन्तुरभ्यागतो वा । मस्यति परिणमतीति **मस्तुः** दधनि निस्सृतमुदकं वा । सच्यन्ते समवेताः क्रियन्ते ते **सक्तवः** पक्वयवादिचूर्णं वा । अवति रक्षणादिकं करोति स **ओतुः** । विडालो वा । 'अव' धातोः **ज्वरत्वर०** [६ । ४ । २०] इति सूत्रेणोपधावकारयोरूठ् ।

वसेरगारे णिच्च ॥ ७० ॥ वास्तुः ॥ ७० ॥

पः किच्च ॥ ७१ ॥ पीतुः ॥ ७१ ॥

अर्त्तेश्च तुः ॥ ७२ ॥ ऋतुः ॥ ७२ ॥

कमिमनिजनिगाभायाहिभ्यश्च ॥ ७३ ॥

कन्तुः । मन्तुः । जन्तुः । गातुः । भातुः । यातुः । हेतुः ॥ ७३ ॥

चायः की ॥ ७४ ॥ केतुः ॥ ७४ ॥

दधाति धरति पोषति वा स **धातुः** अश्मनो विकारः सुवर्णादिः शरीरस्थवातादिर्वा । क्रोशत्याह्वयति रोदिति वा स **क्रोष्टुः** क्रोष्टा शृगालो वा ॥

७० वसन्ति प्राणिनो यत्र तद् **वास्तु** गृहं वा । अगारादन्यत्र णित्त्वाभावः । वसन्ति येन तद् वस्तु द्रव्यं वा ॥

७१. पिबत्युदकादिकं पाति प्राणिनो रक्षति वा स **पीतुः** अग्निः सूर्यो वा । कित्त्वादीत्वम् ॥

७२. चकारात्तुः किद्भवति । पुनः पुनर्ऋच्छति गच्छत्यागच्छतीति **ऋतुः** वसन्तादिः स्त्रीणां रजःपतनकालो वा ॥

७३. कामयते येन स **कन्तुः** कामश्चित्तं वा । मन्यते जानाति वा येन स **मन्तुः** अपराधो वा । जन्यते शरीरादिधारणेन प्रादुर्भवति स **जन्तुः** जीवः । गायति षड्जादिस्वरानालापयति स **गातुः** गाथकः । गाते गच्छतीति गातुः पथिको रा भृङ्गगन्धर्वौ वा । भाति प्रकाशयतीति **भातुः** सूर्यो वा । याति प्रापयतीति **यातुः** अध्वगः कालो वा । हिनोति येन यो वा कार्यरूपेण वर्धतेऽसौ **हेतुः** कारणम् ॥

७४. चायते पूजयति निशामयति श्रावयति वा स **केतुः** ग्रहः पताका वा । धूमकेतुरुत्पातः ॥

आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ॥ ७५ ॥ अप्तुः ॥ ७५ ॥

कृञः कतुः ॥ ७६ ॥ क्रतुः ॥ ७६ ॥

एधिवह्योश्च तुः ॥ ७७ ॥ एधतुः । वहतुः ॥ ७७ ॥

जीवेरातुः ॥ ७८ ॥ जीवातुः ॥ ७८ ॥

आतृकन् वृद्धिश्च ॥ ७९ ॥ जैवातृकः ॥ ७९ ॥

कृषिचमितनिधनिसर्जिखर्जिभ्य ऊः स्त्रियाम् ॥ ८० ॥
कर्षूः । चमूः । तनूः । धनूः । सर्जूः । खर्जूः ॥ ८० ॥

---

७५. आप्नोति व्याप्नोति सर्वान् पदार्थानिति **अप्तुः** शरीरं वा । तुप्रत्यये 'आप्लृ' धातोर्ह्रस्वत्वम् ॥

७६. 'कृञ्'धातोः कतुः प्रत्ययो भवति । यः क्रियते यया करोति वेति **क्रतुः** प्रज्ञा यज्ञो वा । कित्वाद् यण् गुणाभावश्च ॥

७७. एधते वर्द्धतेऽसौ **एधतुः** पुरुषो वा । वहति भारमिति **वहतुः** अनड्वान् वा । चित्करणमन्तोदात्तार्थम् ॥

७८. जीव्यते येन यो वा जीवति स **जीवातुः** जीवनमौषधं वा ॥

७९. 'जीव'धातोरातृकन् प्रत्ययस्तस्मिन् सति वृद्धिश्च भवति । यो जीवति पूर्णावस्थापर्यन्तं स **जैवातृक** आयुष्मान् निशाकरो वा ॥

८०. कृष्यादिभ्य ऊः प्रत्ययः । कर्षत्याकर्षति पदार्थानिति **कर्षूः** शुष्कगोमयोऽग्निर्नदी वा । चमति भक्षयतीति **चमूः** शत्रुभक्षिणी सेना वा । तनोति कार्याणि येन सा **तनूः** शरीरं वा । दधाति धनमर्जयति स **धनूः** शस्त्रं वा । सर्जति उपार्जति कार्याणीति **सर्जूः** वैश्यो वा । खर्जति पीडयतीति **खर्जूः** कण्डूर्वा ॥

मृजेर्गुणश्च ॥ ८१ ॥ मर्जू: ॥ ८१ ॥

खडेर्डुड् वा ॥ ८२ ॥ खड्डू:; खडू: ॥ ८२ ॥

वहेर्धश्च ॥ ८३ ॥ वधू: ॥ ८३ ॥

कषेश्छश्च ॥ ८४ ॥ कच्छू: ॥ ८४ ॥

णित्कशिपद्यर्त्तेः ॥ ८५ ॥ काशू: । पादू: । आरू: ॥ ८५ ॥

अणो डश्च ॥ ८६ ॥ आडू: ॥ ८६ ॥

लम्बेर्नलोपश्च ॥ ८७ ॥ अलाबू: ॥ ८७ ॥

---

८१. मार्ष्टि शोधयतीति **मर्जू:** शुद्धिर्वा । ऊप्रत्ययस्याकित्वान्नित्यापि प्राप्ता वृद्धिर्गुणेन बाध्यते ॥

८२. खडति भिनत्तीति **खड्डू:; खडू:** बाहुजङ्घयोराभूषणं मृतशय्या वा ॥

८३. वहति सुखानि प्रापयतीति **वधू:** नवोढा स्त्री वा ॥

८४. कषति हिनस्ति दुःखयतीति **कच्छू:** पामा वा । खाज इति प्रसिद्धा । षकारस्य छकार: ॥

८५. कृश्यादिभ्य ऊ णिद्भवति । कष्टे गच्छति शास्ति वेति **काशू:** । विकलधातुर्जन: शक्तिर्वा । पद्यन्ते गच्छन्ति यया सा **पादू:** उपानहौ वा । ऋच्छति प्राप्नोति स **आरू:** पिङ्गलो वा ॥

८६. अणति शब्दयतीति **आडू:** जलगामिद्रव्यं वा । णस्य ड: ॥

८७. ऊप्रत्यये लम्बिधातोर्नलोपो भवति । न लम्बतेऽधो न स्रवति गच्छति सा **अलाबू:** तुम्बी वा ॥

के श्र एरङ् चास्य ॥ ८८ ॥ कशेरूः ॥ ८८ ॥

त्रो दुट् च ॥ ८९ ॥ तर्दूः ॥ ८९ ॥

दरिद्रातेर्यालोपश्च ॥ ९० ॥ दर्द्रूः ॥ ९० ॥

नृतिशृध्योः कूः ॥ ९१ ॥ नृतूः । शृधूः ॥ ९१ ॥

ऋतेरम् च ॥ ९२ ॥ रमूः ॥ ९२ ॥

अन्दूदृम्फूजम्बूकम्बूकफेलूकर्कन्धूदिधिषूः ॥ ९३ ॥

---

८८. ककारोपपदात् 'शृ'धातोरूप्रत्ययस्तस्मिन् प्रकृतेरेङादेशः । कष्टे शास्ति स **कशेरूः** तृणकन्दं वा । वहुलवचनादूप्रत्ययस्य ह्रस्वे कृते **कशेरुः** इति ह्रस्वान्तोऽपि दृश्यते ॥

८९. तरति येन यया वा स **तर्दूः** दारुहस्तः पुरुषो यष्टिर्वा । 'तृ'धातोर्दुगागमः ॥

९०. 'दरिद्रा'धातोरूप्रत्यये 'इ;आ' इत्येतयोर्वर्णयोर्लोपः । दरिद्राति दुर्गतिं करोतीति **दर्द्रूः** कुष्ठभेदो वा मृगय्वादित्वात् 'रि;आ' इत्यनयोर्लोपे **दद्रूः** इत्यपि सिद्धम् । अत्र सूत्रेऽपि 'रि;आ' इत्येतयोर्लोपे ददरिति भवति ॥

९१. नृत्यतीति **नृतूः** नर्त्तकः । शर्धते कुत्सितं शब्दयतीति **शृधूः** अपानवायुर्वा । प्रत्ययस्य कित्वाद् गुणनिषेधः ॥

९२. 'ऋत' इति सौत्रो धातुः । ऋतीयते घृणां करोतीति **रमूः** सत्यं दिव्यनदी वा । धातोरमागमः ॥

९३. अन्दूप्रभृतयः शब्दाः कूप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । अन्दति बध्नाति येन यया वा सा **अन्दूः** हस्तिबन्धनी शृङ्खला वा । जंजीर इतिप्रसिद्धा । दृम्फत्युत्कृष्टं क्लेशं ददातीति **दृम्फूः** सर्पजातिर्वा । जमन्ति भक्षयन्ति यां सा **जम्बूः** वृक्षविशेषजातिर्वा । धातोर्वुगागमः । बाहुलकादूप्रत्ययस्य ह्रस्वे कृते **जम्बुः**

मृग्रोरुतिः ॥ ९४ ॥ मरुत् । गरुत् ॥ ९४ ॥

ग्रो मुट् च ॥ ९५ ॥ गर्मुत् ॥ ९५ ॥

हृषेरुलच् ॥ ९६ ॥ हर्षुलः ॥ ९६ ॥

हृसृरुहियुषिभ्य इतिः ॥ ९७ ॥ हरित् । सरित् । रोहित् । योषित् ॥ ९७ ॥

ताडेर्णिलुक् च ॥ ९८ ॥ तडित् ॥ ९८ ॥

इत्यपि दृश्यते । कामयते स कम्बूः परद्रव्यापहारी वा । धातोर्वुक् । कफं श्लेष्माणं लात्याददातीति कफेलूः ओषधिविशेषो वा । एकारान्तत्वं कफशब्दस्य निपातनम् । कर्क कण्टकं दधाति धरतीति कर्कन्धूः वदरीफलं वा । कित्त्वादाकारलोपः उपपदस्य नुगागमो निपातनम् । दिधिं धैर्यमिन्द्रियदौर्बल्यात् स्यति त्यजतीति दिधिषूः पुनर्भूर्वा । निपातनात् षत्वम् ॥

९४. म्रियते मारयति वा स मरुत् मनुष्यजातिः भवनो वा । गिरति निगलतीति गरुत् पक्षी वा ॥

९५. गिरति येन तत् गर्मुत् सुवर्णं तृणजातिभेदो वा ॥

९६. हृष्यति तुष्टो भवतीति हर्षुलः मृगः कामो वा ।

बाहुलकात्—चटति वर्षत्यावृणोति वा स चटुलः शोभनो वा ॥

९७. आहरति गृह्णाति द्रव्यमिति हरित् दिक् वर्णस्तृणमश्वविशेषो वा । सरति गच्छतीति सरित् नदी वा । रोहति प्रादुर्भवतीति रोहित् लताविशिष्टा हरिणी वा । 'युष' इति सौत्रो धातुः । अथवा 'जुष' इत्यस्य वर्णविकारेण पाठः । जुष्यते सेव्यते प्रीणयति वा सा योषित् स्त्री वा ॥

९८. ताडयति पीडयतीति तडित् विद्युद्वा । प्रत्ययलक्षणेन णिलोपेऽपि वृद्धिः स्यादिति लुग्विधीयते ॥

शमेर्ढः ॥ ९९ ॥ शण्ढः ॥ ९९ ॥

कमेरठः ॥ १०० ॥ कमठः ॥ १०० ॥

रमेर्वृद्धिश्च ॥ १०१ ॥ रामठम् ॥ १०१ ॥

शमेः खः ॥ १०२ ॥ शङ्खः ॥ १०२ ॥

कणेष्ठः ॥ १०३ ॥ कण्ठः ॥ १०३ ॥

कलस्तृपश्च ॥ १०४ ॥ तृपला ॥ १०४ ॥

९९. शाम्यति शान्तो भवतीति **शण्ढः** स्वतन्त्रो वृषभः 'सांड' इति प्रसिद्धः नपुंसकं वा ॥

१००. कामयतेऽसौ **कमठः** कच्छपो वा । कमठमिति भाण्डभेदो वा ।

बाहुलकात् | जीर्यत्यवस्थाहीनो भवतीति **जरठः** पाण्डुरङ्गो वा । **शमठः** शान्तो वा ॥

१०१. रमतेऽस्मिन्निति **रामठं** हिङ्गुर्वा । अठ प्रत्यये 'रम'धातोर्वृद्धिः ॥

१०२. शाम्यतीति **शङ्खः** निधिभेदः जलजं ललाटास्थि वा । बहुलवचनात्—खकारस्येत्संज्ञा न भवति ॥

१०३. कणति येन शब्दं करोतीति **कण्ठः** गलो ध्वनिर्वा ॥

१०४. 'तृप'धातोः कलप्रत्ययः । तृप्यति यया सा **तृपला** लता वा । अत्र सूत्रे चकारग्रहणात् 'तृफधातोरपि कलप्रत्ययस्तेन **तृफला** इत्यपि सिद्धम् । तृफला त्रिफला इत्योषधिविशेषपर्यायौ ।

बाहुलकात्—काम्यतेऽसौ **कमलः** कमलं पद्मं वा; उदकं ताम्रमौषधं च । मृगभेदः कमलः । कमला श्रीपतिप्रिया वा । मण्डति भूषयति प्रतिपादयति वा स **मण्डलः** । मण्डलं चक्राकारं देशभेदो बिम्बं कदम्बः कुष्ठं यज्ञभेदः श्वा च । कुण्डति दहतीति **कुण्डलम्** वलयं पाशं कर्णभूषणं वा । पटति गच्छतीति **पटलः** अक्षिरोगस्तिलकं वा, इत्यादि । छ्यति छिनत्ति पराभिप्रायमिति **छलम्** ॥

शमेर्वश्च ॥ १०५ ॥ शबलः ॥ १०५ ॥

वृषादिभ्यश्चित् ॥ १०६ ॥ वृषलः ॥ १०६ ॥

कमेर्बुक ॥ १०७ ॥ कम्बलः ॥ १०७ ॥

लङ्गेर्वृद्धिश्च ॥ १०८ ॥ लाङ्गलम् ॥ १०८ ॥

कुटिकशिकौतिभ्यो मुट् च ॥ १०९ ॥
कुट्मलम् । कश्मलम् । कोमलम् ॥ १०९ ॥

१०५. शपत्याक्रोशति स **शबलः** वर्णभेदो वा ॥

१०६. वृषादिधातुभ्यः कलप्रत्ययश्चिद्भवति । वर्षति सिञ्चतीति **वृषलः** शूद्रो वा । तस्य स्त्री वृषली । कोशति श्लिष्यति कोशति व्यवहर्त्तुं जानातीति वा **कुशलः** निपुणः कुशलं क्षेममिति वा । बाहुलकाद् गुणे **कोशलः** इति देशभेदो वा । पलति गच्छति येन तत् **पललम्** तिलचूर्णं पङ्कं मांसं वा । दीव्यत्यधर्मिणो विजिगीषतीति **देवलः** धार्मिकः । सरति सर्वत्र गच्छतीति **सरलः** अकुटिल उदारो वा । धावति गच्छति शुद्धो भवति वा स **धवलः** श्वेतः शुद्धो वा । 'धावु'धातोर्बाहुलकाद्ध्रस्वत्वम् । वृषादेराकृतिगणत्वात् **केवलकबलतरलानलजम्भलपेशलमर्दलादयोऽपि** शब्दा द्रष्टव्याः । मुस्यति खण्डयति मोषयति चोरयति वा स **मुसलः** मुषलो वा । **मुशलं** मुसलमिति लोहाग्रभागिकुट्टनसाधनम्, मुषलश्चौरो वा ॥

१०७.काम्यतेऽभीप्स्यते यः स **कम्बलः** ऊर्णाविकार उदकं वा । 'कम'धातोः कलप्रत्यये वुक् ॥

१०८. लङ्गन्ति प्राप्नुवन्त्यन्नादिकं येन तत् **लाङ्गलम्** हलं वा ।

वहुलवचनात्—कन्दत्याह्वयति सा **कदली** वृक्षभेदः 'केला' इति प्रसिद्धा वा । बाहुलकाद्धातोर्नलोपः ॥

१०९. कुटादिभ्यो विहितस्य कलप्रत्ययस्य मुट् । कुटनीति **कुट्मलः** । बाहुलकात्—कुण्डति दहतीति **कुड्मलः [कुण्मलः]** किंचिद्विकसितपुष्पनाम्नी

मृजेष्टिलोपश्च ॥ ११० ॥ मलम् ॥ ११० ॥

चुपेरच्चोपधायाः ॥ १११ ॥ चपलम् ॥ १११ ॥

शकिशम्योर्नित् ॥ ११२ ॥ शकलम् । शमलम् ॥ ११२ ॥

छो गुग्घ्रस्वश्च ॥ ११३ ॥ छगलः ॥ ११३ ॥

ञमन्ताड् डः ॥ ११४ ॥ दण्डः । रण्डा । खण्डः । मण्डः । बण्डः । अण्डः । षण्डः । गण्डः । चण्डः । पण्डः । पण्डा ॥ ११४ ॥

वा । कष्टे गच्छति शास्ति वा स **कश्मलः** कश्मलं कल्मषं पापं वा । कौति शब्दयतीति **कोमलः** कोमलं मृदु जलं वा ।

वाहुलकात्—पिङ्क्ते वर्णयतीति **पिङ्गलः** वर्णभेदो वा ॥

११०. यन् मृज्यते शोध्यते तत् **मलम्** पुरीषं पापं कृपणः पुरुषो वा । 'मृज'धातोष्टिलोपः ॥

१११. चोपति मन्दं मन्दं गच्छति स **चपलः** क्षणिकं शीघ्रं वा । चपला पिप्पली विद्युद्वा । धातोरुकारस्याकारादेशः ॥

११२. शक्नोतीति **शकलः** खण्डो मत्स्यभेदो वा । शाम्यतीति **शमलः** अशुद्धं वा ॥

११३. छ्यति छिनत्तीति **छगलः** छागो वर्करो वा । धातोर्गुगागमो ह्रस्वश्च ॥

११४. ञमिति प्रत्याहारग्रहणम् । ञ, म, ङ, ण, न इत्येते वर्णा अन्तेऽस्य तस्माड् डः प्रत्ययो भवति । बहुलवचनादित्संज्ञानिषेधः । दाम्यन्त्युपशाम्यन्त्यनेन स **दण्डः** यष्टिभेदो वा । रमतेऽसौ **रण्डा** विधवा नारी वा । खण्डतेऽवदीर्यतेऽसौ **खण्डः** विभागो मिष्टभेदो वा । 'खाण्ड' इति प्रसिद्धः भिन्नः पदार्थो वा । मन्यते जानातीति **मण्डः** 'मण्डा धात्री समाख्याता, मण्डं पक्वौदनोदकम्' । वनति

कवादिभ्यः कित् ॥ ११५ ॥ कुण्डम् । काण्डम् । गुडः । घुण्डः ॥ ११५ ॥

स्थाचतिमृजेरालज्वालञालीयचः ॥ ११६ ॥

स्थालम् । चात्वालः । मार्जालीयः ॥ ११६ ॥

पतिचण्डिभ्यामालञ् ॥ ११७ ॥ पातालम् । चण्डालः ॥११७॥

शब्दयति सम्भजति वा स **बण्डः** छिन्नहस्तको वा । अमन्ति संप्रयोगं प्राप्नुवन्ति येन स **अण्डः** प्राण्यङ्गावयवो वा । सनोति ददातीति **षण्डः** नपुंसको वनं गोपः सङ्घातो वा । गच्छतीति **गण्डः** कपोलव्याधिविशेषो वा । चणति ददातीति **चण्डः** हिंसकस्तीव्रो वा । कोपना स्त्री चण्डी । 'चडि कोपे' इत्यस्य घञन्तोऽपि चण्डः क्रोधी । पणयति व्यवहरति स्तौति वा स **पण्डः** नपुंसक **पण्डा** बुद्धिर्वा । फणति गच्छत्यत्रेति **फण्डः** पन्था फण्डमुदरं वा ।

११५. कवर्गादिधातुभ्यो डः किद् भवति । कुणति शब्दयत्युपकरोति वा स **कुण्डः** पत्यौ जीवति पुरुषान्तरादुत्पन्नः पुत्रो जलाधारविशेषो वा, कुण्डा कुण्डिका वा । काम्यते जनैस्तत् **काण्डम्** ग्रन्थैकदेशः परिमाणविशेषो बाणोऽवसरो वा। गवतेऽव्यक्तशब्दं करोतीति **गुडः** गोल इक्षुपाको वा । घोणते भ्राम्यतीति **घुण्ड** भ्रमरो वा ॥

११६. तिष्ठन्त्यस्मिन् तत् **स्थालम्** पात्रभेदो वा 'थाल' इति प्रसिद्धम् स्थाली सूपादिपचनी । गौरादित्वान् ङीप् । 'चत्'धातोर्वालञ् । चतते याचतेऽस **चात्वालः** चात्वालं यज्ञकुण्डं दर्भो वा । 'मृजे'रालीयच् । मार्ष्टीति **मार्जालीय** विडालो वा ॥

११७. पतन्ति गच्छन्ति यत्र स **पातालः** देशः, पादस्य तले वर्तते इति पातालः । पृषोदरादित्वात् सिद्धः । चण्डति कुप्यतीति **चण्डालः** मातङ्गो वा चण्डं कुपितमलं भूषणमस्येति समासेऽपि चाण्डालः सिद्धः ॥

तमिविशिविडिमृणिकुलिकपिपलिपञ्चिभ्यः कालन् ॥ ११८ ॥
तमालः । विशालः । विडालः । मृणालम् । कुलालः । कपालम् । पलालम् । पञ्चालः ॥ ११८ ॥

पतेरङ्गच् पक्षिणि ॥ ११९ ॥ पतङ्गः ॥ ११९ ॥

तरत्यादिभ्यश्च ॥ १२० ॥ तरङ्गः । लवङ्गः ॥ १२० ॥

विडादिभ्यः कित् ॥ १२१ ॥
विडङ्गः । मृदङ्गः । कुरङ्गः ॥ १२१ ॥

---

११८. ताम्यन्ति काङ्क्षन्ति यं स **तमालः** वृक्षभेदो वा । विशति सर्वत्रेति **विशालः** 'विशाला मानिनी भार्या विशालः सुन्दरः पुमान् । विशालोज्जयिनी प्रोक्ता विशालं च बृहद् गृहम् ।' विडत्यक्रोशतीति **विडालः** मार्जारो वा । स्त्री विडाली । मृणाति हिनस्तीति **मृणालः** मृणालं पद्ममूलं वा । कोलति सङ्घातयतीति **कुलालः** कुम्भकारो वा । कम्पते येन तत् **कपालम्** नृशिरो घटखण्डो वा । पल्यते प्राप्यतेऽसौ **पलालः** निष्फलानि व्रीहितृणानि वा 'प्यार' इति प्रसिद्धम् । पञ्चति व्यक्तं करोतीति **पञ्चालः** देशविशेषो वा ।

बहुलवचनात्—'शो'धातोरपि कालन् । श्यन्ति सूक्ष्माणि कार्याणि कुर्वन्त्यत्र सा **शाला** गृहम् ॥

११९. पक्षिण्यभिधेये 'पत'धातोरङ्गच् प्रत्ययो भवति । पतति गच्छतीति **पतङ्गः** पक्षी । पक्षिणीत्युच्यमानेऽपि बाहुलकात्—'पतङ्गः सूर्योऽग्निरश्वः शलभः शालिभेदो वा' इत्यादीनामपि नामानि भवन्ति ॥

१२०. तरति प्लवत्यनेन स **तरङ्गः** जलोर्मिर्वस्त्रं भङ्गा वा । लुनात्यनेन स **लवङ्गः** ओषधिर्वा तरत्याद्याकृतिगणः ॥

१२१. विडत्याक्रोशतीति **विडङ्गः** ओषधिविशेषो वा । मृद्नाति यं स **मृदङ्गः** वाद्यभेदो वा । किरति विक्षिपतीति **कुरङ्गः** हरिणो वा । कुरङ्गी हरिणी । स्त्रियां गौरादित्वान् ङीप् । बाहुलकाद् ऋकारस्योत्वं रपरत्वं च ॥

सृवृञोर्वृद्धिश्च ॥ १२२ ॥ सारङ्ग: । वारङ्ग: ॥ १२२ ॥

गन् गम्यद्योः ॥ १२३ ॥ गङ्गा: । अद्ग: ॥ १२३ ॥

छापूखडिभ्यः कित् । १२४ ॥

छाग: । पूग: । खड्ग: ॥ १२४ ॥

भृञः किन्नुट् च ॥ १२५ ॥ भृङ्ग: ॥ १२५ ॥

शृणातेर्ह्रस्वश्च ॥ १२६ ॥ शृङ्ग: ॥ १३६ ॥

---

१२२. सृवृञ्भ्यामङ्गच् धातोर्वृद्धिश्च । सरति सर्वत्र गच्छतीति **सारङ्ग:** पक्षी हरिणो भृङ्गो वा । यो वृणोति गृह्णाति स **वारङ्ग:** खड्गादिमुष्टिर्वा ।

बाहुलकात्—नृणाति नयति स **नारङ्ग:** रस: पिप्पली वृक्ष फलभेदो वा ॥

१२३. गच्छतीति **गङ्गा** नदीभेदो वा । अत्ति वाऽद्यते भक्ष्यतेऽसौ **अद्ग:** पुरोडाशो वा ।

बाहुलकात्—'अम गत्यादिषु' इत्यस्मादपि गन् । [अमति] गच्छति प्राप्नोति कर्माणि विषयान् वा येन तत् **अङ्गम्** गात्रमुपाय: प्रतीकमप्रधानं देशविशेषो वा ॥

१२४. छादिभ्यो गन् किद् भवति । छिनत्तीति **छाग:** वर्करो वा । पूयते मुखं येन स **पूग:** क्रमुक: फलविशेष: 'सुपारी' इति प्रसिद्ध: समूहो वा । खडति भिनत्ति येन स **खड्ग:** शस्त्रं गण्डक: 'गेंडा' इति प्रसिद्ध: ॥

बाहुलकात्—सेटत्यनाद्रियते स **षिड्ग:** चञ्चलमाना हारमध्यस्थो मणिर्वा । वहुलवचनादेव सत्वनिषेध: ॥

१२५. भृञ्धातोर्गन् प्रत्यय: कित् तस्य च नुट् । बिभर्त्ति धरति पुष्यति वा स **भृङ्ग:** भ्रमरो वा ॥

१२६. कित् नुट् चेत्यनुवर्त्तते । शृणाति हिनस्ति येन् तत् **शृङ्गम्** विषाणं पर्वताग्रं मत्स्यभेद ओषधिभेद: सुवर्णभेदो वा ॥

गण् शकुनौ ॥ १२७ ॥ शार्ङ्गः ॥ १२७ ॥

मुदिग्रोर्गग्गौ ॥ १२८ ॥ मुद्गः । गर्गः ॥ १२८ ॥

अण्डन् कृसृभृवृञः ॥ १२९ ॥

करण्डः । सरण्डः । भरण्डः । वरण्डः ॥ १२९ ॥

शॄदृभसोऽदिः ॥ १३० ॥ शरत् । दरत् । भसत् ॥ १३० ॥

---

१२७. गण्प्रत्ययस्य णित्वाद्धातोर्वृद्धिः पूर्ववन्नुट् च । शृणातीति **शार्ङ्गः** पक्षी ।

वाहुलकात्—प्रत्ययस्यादावकारागमेन **शारङ्गः** इत्यपि सिद्धं भवति ॥

१२८. 'मुद्'धातोर्गक् । मोदतेऽसौ **मुद्गः** अन्नभेदो वा । मुद्गान् लाति गृह्णातीति 'मुद्गलो' मुनिः, यस्य गोत्रापत्यं मौद्गल्य' इति प्रसिद्धम् । गृणात्युपदिशतीति **गर्गः** ऋषिविशेषो वा । 'गॄ'धातोर्गः प्रत्ययः ॥

१२९. कृञादिभ्योऽण्डन् प्रत्ययः । क्रियतेऽसौ करण्डः पुष्पभाण्डभेदः, करण्डो वंशविकारपात्रम् 'पिटारी' इति प्रसिद्धा । सरति गच्छतीति **सरण्डः** पक्षी वा । बिभर्त्ति पुष्यतीति **भरण्डः** स्वामी । वृणोति स्वीकरोतीति **वरण्डः** मुखरोगः सन्दोहो वा ।

वाहुलकात्—तरति येन स **तरण्डः** जलतरणसाधनं वा वनति संभजति धर्ममिति **वतण्डः** ऋषिविशेषो वा । धातोस्तकारान्तादेशः । छमति भक्षयतीति **छमण्डः** मातापितृशून्यो वा । शेतेऽसौ **शयण्डः** विषयो वा । इत्यादयः शब्दा बहुलवचनादेव सिद्धा भवन्ति ॥

१३०. शॄदृभसधातुभ्योऽदिः प्रत्ययः । शृणाति हिनस्त्यस्मिन्निति **शरत्** कालविशेष ऋतुर्वा । दीर्यतेऽसौ **दरत्** हृदयं कूलं वा । बिभस्ति भर्त्सयति प्रकाशते वा स **भसत्** जघनं वा ।

दृणातेः षुग्घ्रस्वश्च ॥ १३१ ॥ दृषत् ॥ १३१ ॥

त्यजितनियजिभ्यो डित् ॥ १३२ ॥

त्यद् । तद् । यद् ॥ १३२ ॥

एतेस्तुट् च ॥ १३३ ॥ एतद् ॥ १३४ ॥

सर्त्तेरटिः ॥ १३४ ॥ सरट् ॥ १३४ ॥

लङ्घेर्नलोपश्च ॥ १३५ ॥ लघट् ॥ १३५ ॥

पारयतेरजिः ॥ १३६ ॥ पारक् ॥ १३६ ॥

बाहुलकात्—पर्षति स्निह्यति प्रीतिकरं प्रसन्नं भवति चित्तमस्यां सा **पर्षत्** सभा समाजो वा ॥

१३१. दीर्यतेऽसौ **दृषत्** पाषाणो वा । अदिप्रत्यये धातोः षुक् ह्रस्वागमश्च भवति ॥

१३२. त्यजति क्लेशादिहीनो भवतीति **त्यद्** तनुते विस्तृतो भवतीति **तद्** । यजति सर्वैः पदार्थैः सङ्गतो भवतीति यद् । ब्रह्मणो नामानि त्रयाणि । त्यदादीनां सर्वनामसञ्ज्ञा भवति, तेन सामान्यवाचकास्त्यदादयः ॥

१३३. 'इण्'धातोरदिः प्रत्ययस्तस्य तुडागमश्च । एति प्राप्नोतीति **एतत्** । अस्यापि सर्वनामसञ्ज्ञा ॥

१३४. सरति गच्छतीति **सरट्** वायुर्मेघो वा । 'सृ'धातोरटिः प्रत्ययः ॥

१३५. लङ्घति शोषयतीति **लघट्** वायुर्वा । धातोर्नलोपः ॥

१३६. पारयति कर्म समापयतीति **पारक्** सुवर्णं वा । चौरादिकात् 'पारि'धातोरजिः प्रत्ययः ॥

प्रथेः कित्सम्प्रसारणं च ॥ १३७ ॥ पृथक् ॥ १३७ ॥

भियः षुग्घ्रस्वश्च ॥ १३८ ॥ भिषक् ॥ १३८ ॥

युष्यसिभ्यां मदिक् ॥ १३९ ॥ युष्मद् । अस्मद् ॥ १३९ ॥

अर्त्तिस्तुसुहुसृधृक्षिक्षुभायावापदियक्षिनीभ्यो मन् ॥ १४० ॥
अर्म्मः । स्तोमः । सोमः । होमः । सर्मः । धर्मः । क्षेमम् । क्षोमम् । भामः । यामः । वामः । पद्मम् । यक्ष्मः । नेमः ॥ १४० ॥

जहातेः सन्वदाकारलोपश्च ॥ १४१ ॥ जिह्मः ॥ १४१ ॥

---

१३७. प्रथयति सङ्घाताद्विस्तृतो भवतीति **पृथक्** नानात्वं वा । स्वरादिपाठादव्ययत्वम् ॥

१३८. बिभेत्यसौ **भिषक्** वैद्यो वा । सुमङ्गलभेषजाच्चेति निपातनाद् गुणे कृते **भेषजम्** । भेषजमेव भैषज्यम् ॥

१३९. योषति सेवतेऽसौ **युष्मद्** । 'युष' सौत्रो धातुः । अस्यति प्रक्षिपत्यन्यमिति **अस्मद्** । सर्वनामवाचकाविमौ ॥

१४०. ऋच्छति प्राप्नोति सः **अर्मः** चक्षूरोगो वा । स्तौति येन स **स्तोमः** सङ्घातो वा । सवत्यैश्वर्यहेतुर्भवतीति **सोमः** कर्पूरश्चन्द्रमा वा । हूयते दीयतेऽसौ **होमः** यज्ञो वा । स्त्रियते गम्यते स **सर्मः** गमनम् । ध्रियते सुखप्राप्तये सेव्यते स **धर्मः** पक्षपातरहितो न्यायः सत्याचारो वा । क्षयत्यज्ञानं नाशयतीति **क्षेमम्** कुशलं वा । क्षौति शब्दयतीति **क्षोमम्** वस्त्रभेदो वा । दुकूलमतसीकुसुमं च । भाति प्रकाशतेऽसौ **भामः** क्रोधः सूर्यो दीप्तिर्वा । यायते प्राप्यते स **यामः** प्रहरो वा । वाति गच्छति ग्रन्थं वा गृह्णातीति **वामः** शोभनः दुष्टः पार्श्वभेदो वा । पद्यते प्राप्नोतीति **पद्मं** कमलं निधिः शङ्खो वा । यक्षयते पूजयतीति **यक्ष्मः** राजरोगो वा । नयतीति **नेमः** प्रकारमूलं वा । अर्द्धवाची तु सर्वनामसञ्ज्ञकः ॥

१४१. मनित्यनुवर्तते । जहाति त्यजतीति **जिह्मः** कुटिलो मन्दो वा ॥

अवतेष्टिलोपश्च ॥ १४२ ॥ ओम् ॥ १४२ ॥

ग्रसेरा च ॥ १४३ ॥ ग्रामः ॥ १४३ ॥

अविसिविसिशुषिभ्यः कित् ॥ १४४ ॥

ऊमम् । स्यूमः । सिमः । शुष्मम् ॥ १४४ ॥

इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक् ॥ १४५ ॥

इष्मः । युध्मः । इध्म । दस्मः । श्यामः । धूमः । सूमः ॥ १४५ ॥

---

१४२. मन्प्रत्ययस्य टिलोपो धातोरुपधावकारयोरूठ् । अवति रक्षादिकं करोतीति **ओम्** प्रणव आरम्भोऽनुमतिर्वा । चादिषु पाठादस्याव्ययत्वम् ॥

१४३. मन् । ग्रसतेऽत्ति यो वा ग्रस्यते स **ग्रामः** शालासमुदायः प्रणिनिवासो वा, सङ्ग्रामो युद्धं वा । शालीनां ग्रामः समूहः 'शालिग्रामः' । एवं शब्दग्रामः । ग्रामो गानविद्यायां स्वरभेदश्च ॥

१४४. मन् कित् । अवति रक्षणादिकं भवति यत्र तत् **ऊमम्** नगरं वा । टापि कृते बाहुलकाद्ध्रस्वे च 'उमा' विशिष्टा स्त्री वा । सीव्यति तन्तून् संतनोतीति **स्यूमः** रश्मिर्वा । सिनोति बध्नातीति **सिमः** सर्वनामसंज्ञः सर्वपर्य्यायः । शुष्यति निस्सारं करोतीति **शुष्मम्** अग्निर्वायुर्वा ॥

१४५. य इच्छति य इष्यते स **इष्मः** कामो वसन्त ऋतुर्वा । युध्यते यो येन वा स **युध्मः** वाणो वा । य इन्धे दीप्यते वा येनेन्धे स **इध्मः** समिद्धः । दस्यत्युपक्षयति दुःखयति वा स **दस्मः** यजमानो वा । श्यायति गच्छति प्राप्नोति वा स **श्यामः** हरितः कृष्णो वा । अप्रसूता स्त्री 'श्यामा' लतौषधी वा, इत्यादि । धूनोति कम्पयतीति **धूमः** अग्निसम्भवो वा । सूते जनयति प्राणिगर्भं विमुञ्चतीति **सूमः** अन्तरिक्षं वा ॥

बाहुलकात्—ईर्त्ते गच्छति कम्पते वा तत् **ईर्मम्** व्रणं वा । क्षौति शब्दयतीति सा **क्षुमा** अतसी वा । जजन्ति जायते तत् **जन्म** उत्पत्तिर्वा ॥

युजिरुचितिजां कुश्च ॥ १४६ ॥

युग्मम् । रुक्मम् । तिग्मम् ॥ १४६ ॥

हन्तेर्हि च ॥ १४७ ॥ हिमम् ॥ १४७ ॥

भियः षुग् वा ॥ १४८ ॥ भीमः । भीष्मः ॥ १४८ ॥

घर्मग्रीष्मौ ॥ १४९ ॥

प्रथेः षिवन्षवन्ष्वनः संप्रसारणं च ॥ १५० ॥

पृथिवी । पृथवी । पृथ्वी ॥ १५० ॥

---

१४६. मक् । युज्यते तत् **युग्मम्** । द्वयोरेककर्मणि सम्बन्धः । रोचते प्रदीप्तवर्णो भवति स **रुक्मः** वर्णभेदो वा । तद्वर्णयोगाद्रुक्मं सुवर्णम् । रुक्मो वर्णोऽस्यास्तीति 'रुक्मिणी'स्त्री । तेजते छिनत्तीति **तिग्मम्** तीक्ष्णम् । विशेष्यलिङ्गोऽयं शब्दः । तिग्मा धीः । तिग्मस्तीव्रो वा ॥

१४७. मक् । हन्त्युष्णं दुर्गंधिं वा तत् **हिमम्** हेमन्त ऋतुस्तुषारश्चन्दनं वा । महत् हिमं 'हिमानी' । ङीष् आनुक् ॥

१४८. बिभेति बिभ्यति वा यस्मात् यस्या वा स **भीमः** भीमा वा । **भीष्मः** भीष्मा वा । भीमो भयानकः पाण्डुपुत्रो वा । भीमा भयानका सेना यस्य स 'भीमसेनः' । एवं 'भीष्मसेनो' वा ॥

१४९. मक्प्रत्ययान्तौ निपात्येते । जिघर्त्ति क्षरति नश्यति दीप्यते वा प्राणिनो जगद्वा येन स **घर्म्मः** यज्ञ आतपो ग्रीष्म ऋतुः स्वेदो वा । ग्रसते शीतं रसादिकं वा स **ग्रीष्मः** अत्युष्णकालो वा । 'ग्रस'धातोर्ग्रीभावः षुगागमश्च निपातनात् ॥

१५०. प्रथते विस्तीर्णा भवतीति **पृथवी; पृथिवी; पृथ्वी** । इत्येकार्थास्त्रयः । भूमिरन्तरिक्षं वा ॥

अशूप्रुषिलटिकणिखटिविशिभ्यः क्वन् ॥ १५१ ॥

अश्वः । प्रुष्वः । लट्वा । कण्वम् । खट्वा । विश्वः ॥ १५१ ॥

इण्शीभ्यां वन् ॥ १५२ ॥ एवः । शेवः ॥ १५२ ॥

सर्वनिघृष्वरिष्वलष्वशिवपट्वप्रह्वेष्वा अतन्त्रे ॥ १५३ ॥

१५१. अश्नुते व्याप्नोतीति **अश्वः** तुरङ्गो वह्निर्वा । अजादिपाठात् स्त्रियामश्वा । यः प्रुष्णाति स्निह्यति सिञ्चति पूरयति वा स **प्रुष्वः** ऋतुः सूर्य्यो वा । लटति बाल इव भवति सा **लट्वा** । नियतस्त्रीलिङ्गः । करञ्जभेदः फलं वा । कणति निमीलति चेष्टतेऽसौ **कण्वः** कण्वं पापं कण्वो वाद्यं पक्षिभेदो वा । कणति निमीलति चेष्टतेऽसौ कण्वः कण्वं पापं कण्वो मुनिर्वा । येनादावध्यापिता काण्वी शाखेति प्रसिद्धा वा । खट्यते काङ्क्ष्यते या सा **खट्वा** शय्याभेदो वा । विशति सर्वत्र स **विश्वः** विश्वं जगत्, विश्वाऽतिविषया वा । सर्वादिपाठात्सर्वनामसंज्ञश्च ॥

१५१. एति प्राप्नोतीति **एवः** । बाहुलकात्—एवेत्यवधारणेऽव्ययम् । शेतेऽसौ **शेवः** सुखं मेढ्रं वा ॥

१५३. सर्वादयो वन्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । सरतीति **सर्वः** संपूर्णवाची सर्वनामसंज्ञो विशेषणम् । नितरां घर्षति पिनष्टीति **निघृष्वः** । गुणाभावः । खुरं वा । रेषति हिनस्तीति **रिष्वः** हिंसकः । लषति कामयतेऽसौ **लष्वः** नर्त्तको वा । शेतेऽसौ शिवः । धातोर्ह्रस्वत्वम् । शिव ईश्वरः शिवं भद्रं सुखमुदकं च । 'शिवा' हरीतकी । पट्यन्ते गच्छन्त्यत्रेति **पट्वः** भूलोको वा । प्रजहाति त्यजति स **प्रह्वः** नम्रो वा । अकारलोपो निपातनम् । ईषते हिनस्त्यज्ञानमिति **ईष्वः** आचार्यो वा । 'अतन्त्र' इति किम् ? सर्त्ता, सारक इत्यादिसूत्रेषु पठिताः सर्वादिशब्दा यौगिका मा भूवन् ।

बाहुलकात्—ह्रसति शब्दयतीति **ह्रस्वः** वामन एकमात्रो वर्णो वा ॥

शेवायह्वजिह्वाग्रीवाऽप्वामीवाः ॥ १५४ ॥

कृगृशृदृभ्यो वः ॥ १५५ ॥

कर्वः । गर्वः । शर्वः । दर्वः ॥ १५५ ॥

कनिन् युवृषितक्षिराजिधन्विद्युप्रतिदिवः । १५६ ॥

युवा । वृषा । तक्षा । राजा । धन्वा । द्युवा । प्रतिदिवा ॥ १५६ ॥

---

१५४. शेवादयो वन्नन्ता निपात्यन्ते । शेतेऽसौ **शेवा** लिङ्गाकृतिर्वा । यजतीति **यह्वः** यजमानो वा । जकारस्य हकारः । जयति यया सा **जिह्वा** इन्द्रियं वा । धातोर्हुक् । निगलति यया सा **ग्रीवा** शरीराङ्गं वा । धातोर्ग्रीभावः । आप्नोति यया सा **अप्वा** कण्ठस्थानं वा । मीनाति हिनस्तीति **मीवः** उदरकृमिर्वा ॥

१५५. किरति विक्षिपति चित्तमिति **कर्वः** कामो वा । गिरतीति **गर्वः** अहङ्कारो वा । शृणाति दुःखमिति **शर्वः** परमेश्वरः सुखं वा । दृणाति विदारयति प्राणिन इति **दर्वः** हिंसको जनो वा ॥

१५६. यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स **युवा** मध्यावस्थस्तरुणो जनो वा । वर्षतीति **वृषा** सूर्यो वा । तक्षति तनूकरोति स **तक्षा** वर्धकिर्वा । राजते प्राप्तो भवतीति **राजा** भूपतिश्चन्द्रमा वा । धन्वति गच्छतीति **धन्वा** बाणक्षेपणं वा । द्यौत्यभिगच्छतीति **द्युवा** सूर्यो वा । प्रतिदीव्यन्ति यस्मिन् स **प्रतिदिवा** दिवसो वा ।

बहुलवचनात्—केवलादपि 'दिव'धातोः कनिन् । तेन **दिवा, दिवानौ** इत्याद्यपि सिद्धम् । दशतीति **दशन्** संख्याविशेषो वा । नौतीति **नवन्** संख्या वा । बाहुलकाद् गुणः ॥

सप्यशूभ्यां तुट् च ॥ १५७ ॥ सप्त । अष्ट ॥ १५७ ॥

नञि जहातेः ॥ १५८ ॥ अहः ॥ १५८ ॥

श्वन्नुक्षन्पूषन्प्लीहन्क्लेदन्स्नेहन्मूर्धन्मज्जन्नर्यमन्विश्वप्सन्परिज्वन्मातरिश्वन्मघवन्निति ॥ १५९ ॥

१५७. सपति समवैतीति **सप्तन्** संख्याभेदो वा । अश्नुते व्याप्नोतीति **अष्टन्** संख्या वा ।

बाहुलकात्—पञ्चति व्यक्तीकरोतीति **पञ्चन्** संख्यावाचको वा ॥

१५८. जहाति त्यजति पृथक्करोत्यन्धकारमिति **अहः** दिनम् ॥

१५९. श्वनादयस्त्रयोदश शब्दाः कनिनन्ता निपात्यन्ते । श्वयति गच्छति वर्द्धतेऽसौ **श्वा** कुक्कुरो वा । स्त्रियां ङीप् 'शुनी' । उक्षति सिञ्चतीति **उक्षा** बलीवर्दो वा । पूषति वर्धतेऽसौ **पूषा** सूर्यो वायुर्वा । प्लिह्यते प्राप्यतेऽन्तरिति **प्लीहा** कुक्षिव्याधिर्वा । धातोरुपधादीर्घत्वम् । क्लिद्यत्यार्द्रीभवतीति **क्लेदा** चन्द्रमा वा । धातोर्गुणः । स्निह्यति प्रीतिं करोतीति **स्नेहाः** व्याधिर्वा। धातोर्गुणः । मूर्वति बध्नाति स **मूर्द्धा** शिरो वा । उकारस्य दीर्घो वकारस्य धकारश्च । मज्जति शुन्धतीति **मज्जा** अस्थिसारो वा । अर्यं स्वामिनं मिमीते मन्यते जानातीति **अर्यमा** आदित्यो वा । आकारलोपः । विश्वं प्साति भक्षयतीति **विश्वप्सा** अग्निर्वा । परितो जवति वेगवान् भवतीति **परिज्वा** चन्द्रमाः । 'जु' इति सौत्रो धातुस्तस्य यणादेशः । मातरि अन्तरिक्षे श्वयति गच्छति वर्द्धते वा, अथवा मातरि श्वसिति जीवयति शेते वा स **मातरिश्वा** वायुर्वा । मह्यते पूज्यतेऽसौ **मघवा** सूर्यो वा । 'मह' धातोर्हकारस्य घत्वं वुगागमश्च । मघवदिति तकारान्तोऽप्ययं शब्दो दृश्यते । तत्र मघं धनमस्यास्तीति मघवान् । मघवन्तौ । मघवन्तः, इति मतुबन्तः । कनिनन्तस्तु—मघवा । मघवानौ । मघवानः । मघवन् । मघवानम् । मघवानौ । मघोनः ।

श्वा । उक्षा । पूषा । प्लीहा । क्लेदा । स्नेहा । मूर्द्धा । मज्जा । अर्यमा । विश्वप्सा । परिज्वा । मातरिश्वा । मघवा ॥ १५६ ॥

इत्युणादिषु प्रथमः पादः ॥ १ ॥

अस्मिन् सूत्र 'इति' शब्दः प्रकारार्थे । एवंविधा अन्येऽपि कनिनन्ता शब्दा यथाप्रयोगं साध्याः । पादसमाप्त्यर्थो वेति शब्दः ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे प्रथमः पादः ॥ १ ॥

अथ द्वितीयपादारम्भः

कृहृभ्यामेणुः ॥ १ ॥ करेणुः । हरेणुः ॥ १ ॥

हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन् ॥ २ ॥

हथः । कुष्ठः । नीथः । रथः । काष्ठम् ॥ २ ॥

अवे भृञः ॥ ३ ॥ अवभृथः ॥ ३ ॥

उषिकुषिगार्त्तिभ्यस्थन् ॥ ४ ॥

ओष्ठः । कोष्ठः । गाथा । अर्थः ॥ ४ ॥

---

१. करोतीति **करेणुः** हस्ती हस्तिनी वा । हरति स **हरेणुः** गन्धद्रव्यं कलापो वा 'मटर' इति प्रसिद्धः ॥

२. यो हन्यते येन वा स **हथः** दुःखितः शस्त्रविशेषो वा । कुष्णाति निरन्तरं कर्षतीति **कुष्ठम्** व्याधिभेदः 'कूट' इत्याख्यौषधिर्वा । नीयते स **नीथः** नयनं वा । शोभनो नीथोऽस्यास्तीति 'सुनीथो' धर्मशीलः । रमते यस्मिन् येन वा स **रथः** यानं शरीरं पादो वेतसो वा । काशते दीप्यते तत् **काष्ठम्** इन्धनं स्थानं कालमानं वा । 'काष्ठा' दिक् दारु हरिद्रा वा ॥

३. क्थन् । अवविभर्त्तीति **अवभृथः** पक्षिभेदो यज्ञान्तस्नानं वा ॥

४. ओषति यो दहति येन वा स **ओष्ठः** मुखावयवो वा । कुष्णाति निरन्तरं कर्षति स **कोष्ठः**, कोष्ठं कुक्षिः कुशूलमन्तर्गृहं वा । गीयते या सा **गाथा** वाग्भेदः

सर्तेर्णित् ॥ ५ ॥ सार्थः ॥ ५ ॥

जॄवृञ्भ्यामूथन् ॥ ६ ॥ जरूथम् । वरूथः ॥ ६ ॥

पातॄतुदिवचिरिचिसिचिभ्यस्थक् ॥ ७ ॥

पीथः । तीर्थम् । तुत्थः । उक्थम् । रिक्थम् । सिक्थम् ॥ ७ ॥

अर्त्तेर्निरि ॥ ८ ॥ निर्ऋथः ॥ ८ ॥

श्लोको वा । अर्यते प्राप्यतेऽसौ **अर्थः** शब्दानां वाच्यो धनं कारणं वस्तु प्रयोजनं निवृत्तिविषयो वा ।

बाहुलकात्—श्यति तनूकरोतीति **शोथः** रोगविशेषो वा 'शो तनूकरणे' इत्यस्यात्वनिषेधः ॥

५. सरति गच्छति स **सार्थः** समूहो वा । थन्प्रत्ययस्य णित्वाद् वृद्धिः ॥

६. जीर्यति वयोहीनो भवति स **जरूथः** मांसं वा । वृणोति येन स्वीकरोति स **वरूथः** लोहेन रथावरणं वा ॥

७. यः पिबति यं वा स **पीथः** सूर्यो घृतं वा । तरन्ति येन यत्र वा तत् **तीर्थम्** गुरुर्यज्ञः पुरुषार्थो मन्त्री जलाशयो वा । यो येन वा तुदति व्यथां प्राप्नोति स **तुत्थः** अग्निरञ्जनं तुत्था नीली ओषधिर्गौर्बडवा वा, सूक्ष्मैला वा 'छोटी इला[य]ची' इति प्रसिद्धा । उच्यते परितो भाष्यते यत्तत् **उक्थम्** सामवेदो वा । य उक्थमधीते वेत्ति वा स 'औक्थिकः' । रिणक्ति पृथक् करोतीति यत्तद् **रिक्थम्** दायादधनं सुवर्णं वा । बाहुलकात्—'ऋच स्तुतौ' इत्यस्मादपि थक् । ऋचति यदर्थं स्तौतीति **ऋक्थम्** धनं वा । सिञ्चति प्रसादयति तत् **सिक्थम्** मधूच्छिष्टम् 'मोम' इति प्रसिद्धम्, ओदनान्निःसृतं मण्डं वा ॥

८. निरन्तरमृच्छन्ति गच्छन्ति यस्मिन्नसौ **निर्ऋथः** सामवेदो वा ॥

निशीथगोपीथावगथाः [गाथाः] ॥ ९ ॥

गश्चोदि ॥ १० ॥ उद्गीथः ॥ १० ॥

समीणः ॥ ११ ॥ समिथः ॥ ११ ॥

तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः ॥ १२ ॥

स्फायितञ्चिवञ्चिशकिक्षिपिक्षुदिसृपितृपिदृपिवन्द्युन्दिश्वितिवृत्यजि-नीपदिमदिमुदिखिदिछिदिभिदिमन्दिचन्दिदहिदसिदम्भिवसिवा-शिशीङ्हसिसिधिशुभिभ्यो रक् ॥ १३ ॥

९. नितरां शेतेऽस्मिन् स **निशीथः** अर्द्धरात्रः सर्वरात्रो वा । गां वाणीं पृथिवीं वा पातीति **गोपीथः** पण्डितो राजा वा, गावः पिबन्त्युदकमस्मिन् स जलाशयो वा । अवगातेऽवगच्छते जानीते ऽसौ **अवगाथः** प्राप्तः स्नानं वा ॥

१०. उदुपपदाद् गाधातोस्थक् । य उद्गीयत उच्चैः शब्दायते स **उद्गीथः** सामध्वनिः प्रणवो वा ॥

११. समेति सम्यक् प्राप्नोति पदार्थानिति **समिथः** अग्निर्वा ॥

१२. तिथादयस्थक् प्रत्ययान्ता निपाताः । तेजते सह्यतेऽसौ **तिथः** अग्निः कामो वा । पर्षति सिञ्चति यो येन वा तत् **पृष्ठम्** शरीरस्य पश्चाद्भागः स्तोत्रं वा । यो येन वा गवतेऽव्यक्तशब्दं करोति तद् **गूथम्** अपानमार्गः पुरीषं वा । यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स **यूथः** समुदायो वा । यः प्रवते गच्छति येन वा स **प्रोथः** तुरङ्गनासिका । प्रस्थितः पुरुषो वृक्षभेदः प्रियमुदकमन्नं स्त्रीगर्भश्च प्रोथ उच्यते ॥

१३. यः स्फायते वर्द्धतेऽसौ **स्फारः** सुवर्णादिर्विकारो बुद्बुदो वा । वलि रेफे यलोपः । तनक्ति संकोचयतीति **तक्रम्** मथितं दधि वा । वञ्चति प्रलम्भते स **वक्रः** कुटिलः क्रूरो वा । शक्नोति यः स **शक्रः** समर्थः कुटजो वृक्षविशेषो वा ।

स्फारम् । तक्रम् । वक्रः । शक्रः । क्षिप्रम् । क्षुद्रः । सृप्रः । तृप्रः । दृप्रः । वन्द्रः । उद्रः । श्वित्रम् । वृत्रः । वीरः । नीरम् । पद्रः । मद्रः । मुद्रा । खिद्रः । छिद्रम् । भिद्रम् । मन्द्रः । चन्द्रः । दह्रः । दस्रः । दभ्रः । उस्रः । वाश्रः । शीरः । हस्रः । सिध्रः । शुभ्रम् ॥ १३ ॥

क्षिप्यते प्रेर्यते तत् **क्षिप्रम्** शीघ्रं वा । क्षुनत्ति संपिनष्टि यः स **क्षुद्रः** अधमः क्रूरः कृपणो वा । अल्पे वाच्यलिङ्गः—क्षुद्रा वेश्या कण्टकारिका (भटकटाई) तथा मधुमक्षिका च । सर्पति गच्छतीति **सृप्रः** चन्द्रमा वा । यस्तृप्यति येन वा स **तृप्रः** पुरोडाशो वा । दृप्यति हृष्यति मुह्यति वा स **दृप्रः** बलवान् वा । वन्दतेऽभिवदति स्तौति वा स **वन्द्रः** सत्कर्त्ता वा । उनत्ति क्लिद्यति स **उद्रः** जलचरो वा । सम्यगुनत्तीति 'समुद्रः' । **अनिदिताम्०** [६ । ४ । २४] इति नलोपः । श्वेतते वर्णविशिष्टो भवतीति **श्वित्रम्** कुष्ठभेदो वा । वर्त्तते सदैवाऽसौ **वृत्रः** मेघः शत्रुस्तमः पर्वतश्चक्रं वा । अजति गच्छति शत्रून् वा प्रक्षिपति स **वीरः** सुभटः श्रेष्ठश्चतुष्पथं वा । वीरा क्षीरकाकोली पतिपुत्रवती स्त्री मदिरा मधुपर्णिकौषधिर्वा । नयति शरीरमिति **नीरम्** जलं वा । पद्यते गच्छन्त्यस्मिन् वा स **पद्रः** ग्रामः संवेशः स्थानं वा । माद्यतीति **मद्रः** हर्षो देशभेदो वा । मोदन्ते हृष्यन्ति यया सा **मुद्रा** यन्त्रिता सुवर्णादि धातुमया वा । यः खिद्यते येन वा दीनो भवतीति स **खिद्रः** रोगो दरिद्रो वा । छिद्यते यत्तत् **छिद्रम्** विवरं वा । भिनत्ति येन तद् **भिद्रं** वज्रो वा । मन्दते स्तौतीति **मन्द्रः** गम्भीरध्वनिर्वा । चन्दति हर्षयति वा स **चन्द्रः** कर्पूरश्चन्द्रमा वा । दहति भस्मीकरोतीति **दह्रः** दावाग्निर्वा । दस्यति रोगानुपक्षयतीति **दस्रः** वैद्यश्चोरो वा । यो दभ्नोति दम्भं करोति स **दभ्रः** क्षुद्रो जनः समुद्रो वा । वसतीति **उस्रः** रश्मिर्वा । उस्रा गौः । वाश्यते शब्दयतीति **वाश्रम्** पुरीषं दिवसो मन्दिरं चतुष्पथं वा । शेतेऽसौ **शीरः** महासर्पो वा । हसतीति **हस्रः** मूर्खो वा । सेधति गच्छति सिध्यति वा स **सिध्रः** साधुर्वृक्षजातिर्वा । कुत्सिताः सिद्धा वृक्षाः सिध्रकास्तासां वनं 'सिध्रकावणम्'

चकिरम्योरुच्चोपधायाः ॥ १४ ॥ चुक्रम् । रुम्रः ॥ १४ ॥

वौ कसेः ॥ १५ ॥ विकुस्रः ॥ १५ ॥

अमितम्योर्दीर्घश्च ॥ १६ ॥ आम्रम् । ताम्रम् ॥ १६ ॥

निन्देर्नलोपश्च ॥ १७ ॥ निद्रा ॥ १७ ॥

अर्देर्दीर्घश्च ॥ १८ ॥ आर्द्रम् ॥ १८ ॥

शुचेर्दश्च ॥ १९ ॥ शूद्रः ॥ १९ ॥

वनं पुरगामिश्रकासिध्रका० [८ । ४ । ४] इति सूत्रेण णत्वम् । शोभते दीप्यते तत् **शुभ्रम्** रुचिरं शुक्लं पाण्डुरं वा ।

बाहुलकात्—मेशति शब्दयतीति **मिश्रः** संयोगो वा । पुण्डति खण्डयतीति **पुण्ड्रः** दुष्टो वा । सिनोति बध्नाति मांसरुधिरादिकमिति **सिरा** नाडी वा । मुस्यति खण्डयतीति **मुस्रम्** नेत्रोदकं वा । अस्यतीति **अस्रम्** रुधिरं वा । अस्रम् पिबतीति अस्रपो दंशः ॥

१४. चकते तृप्यति प्रतिहन्यते वा स **चुक्रः** अम्लमम्लवेतसमित्यादि । रमन्तेऽस्मिन् स **रुम्रः** अरुणः शोभनो वा ॥

१५. विकसति विशेषतया गच्छतीति **विकुस्रः** चन्द्रमा वा । 'कस' धातोरुपधाया उत्वम् ॥

१६. अम्यते सम्भज्यते सेव्यते तत् **आम्रम्** चूतो वा । ताम्यति काङ्क्षतीति **ताम्रम्** धातुभेदो रक्तवर्णो वा ॥

१७. या निन्दति यया वा सा **निद्रा** शयनं वा ॥

१८. आर्दति गच्छति याचते वा तत् **आर्द्रम्** सरसद्रव्यमार्द्रा नक्षत्रं वा ॥

१९. दीर्घश्चानुवर्त्तते । शोचतीति **शूद्रः** सेवको वा । पुंयोगे शूद्रस्य स्त्री 'शूद्री' 'शूद्रा' तज्जातिर्वा ॥

दुरीणो लोपश्च ॥ २० ॥ दूरम् ॥ २० ॥

कृतेश्छः क्रू च ॥ २१ ॥ कृच्छ्रम् । क्रूरः ॥ २१ ॥

रोदेर्णिलुक् च ॥ २२ ॥ रुद्रः ॥ २२ ॥

जोरी च ॥ २३ ॥ जीरः ॥ २३ ॥

---

२०. दुरुपपदात् 'इण्' धातो रक् धातोश्च लोपः दुःखेनेयते प्राप्यते तद् **दूरम्** विप्रकृष्टं वा ॥

२१. 'कृत' धातोरन्त्यस्य छः सर्वस्य च क्रू इत्येतावादेशौ रक् च। कृन्तति छिनत्तीति **कृच्छ्रः**; **क्रूरः** च कठिनं दुःखं खलो वा ॥

२२. पापिनो रोदयतीति **रुद्रः** ईश्वरः प्राणादिदश रुद्रा जीवो वा ।

बाहुलकात्—अन्यत्रापि धात्वन्तरे संज्ञाछन्दसोः सामान्यप्रत्ययादौ च णेर्लुक् । पाशं बन्धनं धारयतीति **पाशधरः** । **शूलधरः** । **चक्रधरः** । **वज्रधरः** । **शक्तिधरः** वा कुमारः । **उदकधरः** मेघः । **दण्डधरः** राजा । अत्र सर्वत्राचि प्रत्यये 'धृ' धातोः परस्य णेर्लुक् । पर्णानि शोषयति मोचयति रोहयति वा स **पर्णशुट्, पर्णमुट्, पर्णरुट्** । इति ण्यन्तात् 'शुष' धातोः क्विप् णेर्लुक् । जश्त्वकुत्वादि कार्यम् ।

> "वान्ति पर्णशुषो वाता वान्ति पर्णमुचोऽपरे ।
> ततः पर्णरुहा वान्ति ततो देवः प्रवर्षति" ॥

२३. 'जु' धातो रकि प्रत्यय ईकारादेशः । जवति सूक्ष्मो भवतीति **जीरः** अणुः खड्गो वणिग्द्रव्यं वा । महाभाष्यकारसंमत्या **'रकि ज्यः सम्प्रसारणम्'** । **भा० १ । १ । ४ ।** 'ज्या वयोहानौ' इत्यस्य रकि प्रत्यये सम्प्रसारणम् । जिनात्यवस्थां जहातीति **जीरः** । तथा महाभाष्यकार सम्मत्या 'जीव' धातोरदानुक् । जीवति प्राणान् धारयतीति **जीरदानुः** । वैदिकं रूपमेतत् । अत्र च 'जीव' धातोर्वलि वलोपः ऊठ् निषेधश्च बाहुलकादेव, इत्यादि ॥

सुसूधागृधिभ्यः क्रन् ॥ २४ ॥

सुरः । सूरः । धीरः । गृध्रः ॥ २४ ॥

शुसिचिमीनां दीर्घश्च ॥ २५ ॥

शूरः । सीरः । चीरम् । मीरः ॥ २५ ॥

वा विन्धेः ॥ २६ ॥ वीध्रम् ॥ २६ ॥

वृधिवपिभ्यः रन् ॥ २७ ॥ वर्ध्रम् । वप्रः ॥ २७ ॥

ऋज्रेन्द्राग्रवज्रविप्रकुब्रचुब्रक्षुरखुरभद्रोग्रभेरभेलशुक्रशुक्लगौरवन्रेरामालाः ॥ २८ ॥

२४. सुनोति सवति उत्पादयत्यैश्वर्यवान् वा भवतीति **सुरः** देवसंज्ञो विद्वान्, स्त्रियां सुरा मद्यं वा । सूयते वा सुवति प्राणिनः समर्थयतीति **सूरः** सूर्यो वा । दधाति सर्वान् पोषयति वा स **धीरः** पण्डितो वा । गृध्यत्यभिकाङ्क्षतीति **गृध्रः** पक्षिविशेषो वा ॥

२५. 'शु' इति सौत्रो धातुः । शवति गच्छतीति **शूरः** विक्रमण शीलः पुरुषो वा । सिनोति बध्नातीति **सीर;** हलं वा । चिनोतीति **चीरम्** वल्कलं वा । मिनोति प्रक्षिपतीति **मीरः** समुद्रो वा ॥

२६. विशेषेणेन्धते प्रदीप्यते तद् **वीध्रम्** स्वभावशुद्धः ॥

२७. वर्द्धते तत् **वर्ध्रम्** चर्म्म वा । वपति बीजं छिनत्ति वा स **वप्रः** पिता केदारः प्राकारो रोधो वा ॥

२८. ऋज्राद्येकोनविंशतिः शब्दा निपात्यन्ते । अर्जति गच्छति तिष्ठति वा स **ऋज्रः** नायको वा । गुणाभावः । इन्दति परमैश्वर्यवान् भवतीति **इन्द्रः** समर्थोऽन्तराऽऽत्मादित्यो योगो वा । अङ्गति गच्छतीति **अग्रम्** प्रधानमुपरिभागो वा । वजति प्राप्नोति प्राप्यते वा स **वज्रः** हीरकं शस्त्रं वा । वपति धर्म्ममिति

समि कस उकन् ॥ २९ ॥ सङ्कसुकः ॥ २९ ॥

पचिनशोर्णुकन्कनुमौ च ॥ ३० ॥ पाकुकः । नंशुकः ॥३०॥

भियः क्रुकन् ॥ ३१ ॥ भीरुकः ॥ ३१ ॥

विप्रः मेधावी वा । कुम्बत्याच्छादयतीति **कुब्रम्** अरण्यं वा । चुम्बति यो येन वा तत् **चुब्रम्** मुखं वा अत्रोभयत्रेदितोऽपि न लोपः । यः क्षुरति विलिखति येन वा छिनत्तीति स **क्षुरः** छेदनद्रव्यं कोकिलाक्षं गोक्षुरो लोमच्छेदकं नापितशस्त्रं वा । खुरति छिनत्ति यो येन वा स **खुरः** शफं वा । अत्रोभयत्र रकि रेफलोपो गुणाऽभावश्च । भन्दते कल्याणं करोतीति **भद्रम्** कल्याणम् । नकारलोपः । उच्यति समवैतीति **उग्रः** महेश्वर उत्कटः क्षत्रं वा । बिभेत्यस्मात्स **भेरः**, भेरी दुन्दुभिर्वा । गौरादित्वान् ङीष् । पक्षे भेरशब्दस्य लत्वम्—**भेलो** जलतरणद्रव्यं वृद्धकायः कातरो वा । शुच्यते पवित्रीभवतीति **शुक्रम्** ब्रह्माग्निराषाढः प्राणिबीजं नेत्ररोगो वा । अस्यैव व्यवस्थितविभाषया पक्षे लत्वम्—**शुक्लः** श्वेतं रजतं वा गवतेऽव्यक्तंशब्दयतीति **गौरः**श्वेतो रक्तवर्णो वा । 'गौरी' स्त्री । ङीष् । वनति सम्भजतीति **वन्रः** विभागी । एति गच्छति यया सा **इरा** उदकं मद्यं वा । 'इरावान्' समुद्रः, ऐरावती नदी । इरया मद्येन माद्यतीति 'इरम्मदः' । माति मानहेतुर्भवतीति **माला** पुष्पादिस्रक् । मालं क्षेत्रम् । मालो जनः ।

बाहुलकात्—तितिक्षते येन तत् **तीव्रम्** तीक्ष्णं वा । जस्य वो दीर्घत्वं च धातोः ॥

२९. सम्यक् कसति गच्छतीति **सङ्कसुकः** संशयमापन्नश्चलो दुर्जनो वा ॥

३०. 'पच नश' धातुभ्यां णुकन् प्रत्ययः पचधातोश्चस्य कः, नशधातोर्नुम् च । पचतीति **पाकुकः** सूपकारो वा । नश्यतीति **नंशुकः** अणुवाचको वा ॥

३१. यो बिभेति यस्माद्वा स **भीरुकः** कातरो वा ॥

क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि ॥ ३२ ॥

रजकः । इक्षुकुट्टकः । तक्षकः । ध्रुवकः । अभ्रकम् । चरकः । चषकः । [भञ्जकः । शालभञ्जिका । काष्ठपुत्रिका । पुष्पप्रचायिका] । शुनकः । भषकः ॥ ३२ ॥

रमेरश्च लो वा ॥ ३३ ॥ रमकः । लमकः ॥ ३३ ॥

जहातेर्द्वे च ॥ ३४ ॥ जहकः ॥ ३४ ॥

---

३२. शिल्पिनि संज्ञायां च गम्यमानायां सोपपदादनुपपदाद्वा सामान्याद्धातोः क्वुन् भवति । रजतीति **रजकः** वस्त्रशोधको वा । इक्षून् कुट्टयतीति **इक्षुकुट्टकः** गौडिकस्येयं संज्ञा । तक्षति तनूकरोतीति **तक्षकः** वर्धकिः शिल्पी । **ध्रुवकः** गर्भमोचको जनः संज्ञा वा । अभ्रति गच्छति येन तत् **अभ्रकम्** औषधं संज्ञा वा । चरतीति **चरकः** वैद्यकशास्त्रं गन्ता वा । चषति भक्षयत्यस्मिन्निति **चषकं** पानपात्रं शालं वा । भञ्जतीति **भञ्जकः** मत्स्यभेदः प्राकारो वा । शालान् भञ्जन्ति यस्यां सा **शालभञ्जिका** क्रीडा । काष्ठं पुत्रयति यस्यां सा **काष्ठपुत्रिका** क्रीडा । पुष्पैः प्रचायन्ते पूजयन्ति यस्यां सा **पुष्पप्रचायिका** क्रीडा वा । शुनति गच्छतीति **शुनकः** श्वा । भषति भर्त्सयतीति **भषकः** श्वा वा ।

आमलते समद्धारयतीति **आमलकः** वृक्षभेदः गौरादित्वान् ङीष् 'आमलकी' । कलामंशं पाति रक्षतीति **कलापकः** चन्द्रमा वा । मल्लते गन्धं धरतीति **मल्लिका** पुष्पजातिर्वा । कन्यते दीप्यते काम्यतेऽभीप्स्यते वा तत् **कनकं** सुवर्णं वा । कटत्यावृणोत्यङ्गमिति **कटकम्** आभूषणं वा 'कड़ा' इति प्रसिद्ध शिखरं राजधानी नितम्बं वा । लटति बाल इव भवतीति **लटकः** दुर्जनो वा । इत्यादिषु शिल्पिसंज्ञयोः क्वुन् बोध्यः ॥

३३. रमतेऽसौ **रमकः** रमणशीलो वा । **लमकः** अपि स एव ॥

३४. जहाति त्यजति हानिं करोतीति **जहकः** त्यागी कालो वा ॥

ध्मो धम च ॥ ३५ ॥ धमकः ॥ ३५ ॥

हनो बध च ॥ ३६ ॥ बधकः ॥ ३६ ॥

बहुलमन्यत्रापि ॥ ३७ ॥ कुहकः । कृतकम् । भिंदकः । छिदकम् । रुचकम् । लङ्गकः । उज्झकः ॥ ३७ ॥

कृषेर्वृद्धिश्चोदीचाम् ॥ ३८ ॥ कार्षकः; कृषकः ॥ ३८ ॥

उदकश्च ॥ ३९ ॥ [उदकम्] ॥ ३९ ॥

वृश्चिकृषोः किकन् ॥ ४० ॥ वृश्चिकः । कृषिकः ॥ ४० ॥

प्राङि पणिकषः ॥ ४१ ॥ प्रापणिका । प्राकषिकः ॥ ४१ ॥

---

३५. धमति शब्दं करोतीति अग्निं वा संयुनक्ति स **धमकः** कर्मकारो वा ॥

३७. हन्तीति **बधकः** हिंसकः ॥

३६. वहुलवचनादन्यत्रापि क्वुन् । कोहयति विस्मयं कारयतीति **कुहकः** दाम्भिको नीहारो वा । कृन्तति छिनत्तीति **कृतकं** मिथ्या वा । भिनति येन स **भिदकः** खड्गो वा । छिनत्ति येन तत् **छिदकं** वज्रो वा । रोचतेऽनेन तत् **रुचकम्** मातुलुङ्गकं वा 'विजौरा नींबू' इति प्रसिद्धं वा । लङ्गति गच्छतीति **लङ्गकः** प्रियो वा । उज्झत्युत्सृजतीति **उज्झकः** योगी मेघो वा ॥

३८. कृषतीति **कार्षकः, कृषकः** वा कृषीवलः ॥

३९. उनत्ति क्लेदयतीति **उदकं** जलं वा ॥

४०. वृश्चति छिनत्तीति **वृश्चिकः** विषी जीवविशेषः शूककीटो वा । 'कँचुआ' इति प्रसिद्धः । कृषति येन स **कृषिकः** फालो वा ॥

४१. प्रकर्षेण समन्तात्पणायत्यसौ **प्रापणिकः** पण्यविक्रयी वा प्राकषति हिनस्तीति **प्राकषिकः** पारदारिको वा ॥

मुषेर्दीर्घश्च ॥ ४२ ॥ मूषिकः ॥ ४२ ॥

स्यमेः सम्प्रसारणं च ॥ ४३ ॥ सीमिकः ॥ ४३ ॥

क्रिय इकन् ॥ ४४ ॥ क्रयिकः ॥ ४४ ॥

आङि पणिपनिपतिखनिभ्यः ॥ ४५ ॥
आपणिकः । आपनिकः । आपतिकः । आखनिकः ॥ ४५ ॥

श्यास्त्याहृञविभ्य इनच् ॥ ४६ ॥
श्येनः । स्त्येनः । हरिणः । अविनः ॥ ४६ ॥

वृजेः किच्च ॥ ४७ ॥ वृजिनम् ॥ ४७ ॥

---

४२. मुष्णाति पदार्थानिति **मूषिकः** आखुर्वा । स्त्रियां 'मूषिका' । अजादित्वाट्टाप् ॥

४३. स्यमति शब्दयतीति **सीमिकः** वृक्षभेदो वा ॥

४४. क्रीणाति द्रव्येण पदार्थान्तरं ददाति गृह्णाति वा स **क्रयिकः** क्रेता । विक्रयिको विक्रेता ॥

४५. समन्तात्पणायति व्यवहरति स **आपणिकः** वैश्यो वा । आपणेन व्यवहरतीति तद्धिते ठकि सिद्धे नित्स्वरार्थं वचनम् । आपनायतीति **आपनिकः** म्लेच्छजातिर्वा । समन्तात् पततीति **आपतिकः** श्येनो वा । समन्तात् खनतीति **आखनिकः** मूषिको वराहो वा ॥

४६. श्यायति गच्छतीति **श्येनः** पक्षिभेदो वा । स्त्यायति शब्दयति संघातयतीति स **स्त्येनः** चौरो वा । हरतीति **हरिणः** मृगः पाण्डुवर्णो वा । स्त्रियां 'हरिणी' सुन्दरी छन्दोभेदो हरितवर्णा वा । अवति रक्षणादिकं करोतीति **अविनः** अध्वर्युर्वा ॥

४७. इनच् कित् । वृक्ते वर्जयतीति **वृजिनः** केशः पापं वक्रो वा ॥

अजेरज च ॥ ४८ ॥ अजिनम् ॥ ४८ ॥

बहुलमन्यत्रापि ॥ ४९ ॥

द्रुदक्षिभ्यामिनन् ॥ ५० ॥
द्रविणम् । दक्षिणः; दक्षिणा ॥ ५० ॥

अर्तेः किदिच्च ॥ ५१ ॥ इरिणम् ॥ ५१ ॥

वेपितुह्योर्ह्रस्वश्च ॥ ५२ ॥ विपिनम् । तुहिनम् ॥ ५२ ॥

---

४८. अजति गच्छति क्षिपति वा तत् **अजिनम्** चर्म वा । अजादेशो वीभावनिवृत्त्यर्थः ॥

४९. कठति कृच्छ्रेण जीवतीति **कठिनम्** कठोरं वा । कुण्डते दहतीति **कुण्डिनः** ऋषिर्वा यस्यापत्यं 'कौण्डिन्यः' । बर्हते प्रधानो भवतीति **बर्हिणः** मयूरो वा । फलति विशीर्णो भवतीति फलिनः फलवान् वृक्षो वा । नलति गन्धयुक्तो भवतीति **नलिनम्** कमलं वा । मस्यति परिणमतीति **मसिनम्** सुपिष्टं वा । मलते धरतीति, **मलिनः** मलयुक्तो वा । द्रुह्यति जिघांसतीति **द्रुहिणः** ब्रह्मा वा । अन्धकारं द्यत्यवखण्डयतीति **दिनम्** दिवसं वा । इनचः कित्वादाकारलोपः ॥

५०. द्रवति गच्छति द्रूयते प्राप्यते वा तद् **द्रविणम्** सुवर्णं पराक्रमो वा । दक्षते वर्धते शीघ्रकारी भवति वा स **दक्षिणः** सरलो वामभागः परतन्त्रोऽनुवर्त्तनं च । स्त्रियां **दक्षिणा** दानं प्रतिष्ठा वा ॥

५१. ऋच्छन्ति गच्छन्ति यत्र यस्माद्वा जनास्तत् **इरिणम्** शून्यमूषर-भूमिर्वा ॥

५२. यत् वेपते कम्पते यत्र वा तद् **विपिनम्** गहनं वा । तोहति गच्छति याचते वा तत् **तुहिनम्** हिमं वा । गुणे कृते ह्रस्वः ॥

तलिपुलिभ्यां च ॥ ५३ ॥ तलिनम् । पुलिनम् ॥ ५३ ॥

गर्वेरत उच्च ॥ ५४ ॥ गुर्विणी ॥ ५४ ॥

रुहेश्च ॥ ५५ ॥ रोहिणः ॥ ५५ ॥

महेरिनण् च ॥ ५६ ॥ माहिनम् । महिनम् ॥ ५६ ॥

क्विब् वचिप्रच्छिश्रिस्रुद्रुप्रुज्वां दीर्घोऽसंप्रसारणं च ॥ ५७ ॥

वाक् । प्राट् । श्रीः । स्रूः । द्रूः । कटप्रूः । जूः ॥ ५७ ॥

---

५३. तालयति प्रतितिष्ठतीति **तलिनम्** विरलं पृथग्भूतं स्वल्पं स्वच्छं वा । पोलयति महान् भवतीति **पुलिनम्** जलसामीप्यं वा ॥

५४. गर्वति प्राप्नोति गर्वयति मुञ्चति वा सा **गुर्विणी** गर्भिणी वा ॥

५५. रोहति वीजेन जायते स **रोहिणः** चन्दनवृक्षो वा । जातिवाचकात् स्त्रियां ङीष् 'रोहिणी' गौर्वा । प्रज्ञादित्वादण् 'रौहिणः' ॥

५६. महति मह्यते पूज्यते वा तत् **माहिनम्; महिनम्** राज्यं वा । चादिनजनुवर्त्तते ॥

५७. वक्ति शब्दानुच्चारयति यया सा **वाक्** । पृच्छतीति **प्राट्** । शब्दं पृच्छतीति 'शब्दप्राट्' शिष्यो वा । शब्दप्राशौ । शब्दप्राशः । **छ्वोः शूडनुनासिके च ।** [६ । ४ । १९] इति छस्य शः । श्रयति श्रीयते वा सा **श्रीः** ईश्वररचना शोभा वा । या स्रवति यस्या वा सा **स्रूः** यज्ञसाधनं वा । द्रयते प्राप्यते दुःखमनया सा **द्रूः** हिरण्यं वा । कटेन कटिभागेन प्रवते गच्छतीति **कटप्रूः** कामुको जनः कीटो वा । जवति शीघ्रं गच्छतीति **जूः** शशोऽश्वो वृषभ आकाशं विद्या वा ।

वाहुलकात्—प्रवर्षन्ति मेघा यस्यां सा **प्रावृट्** ऋतुः । द्वारयति संवृणोति यया सा **द्वाः**, द्वारौ । उदकेन श्वयति वर्धते तत् **उदश्वित्** तक्रं वा । ऋचन्ति स्तुवन्ति यया सा **ऋक्** ॥

आप्नोतेर्ह्रस्वश्च ॥ ५८ ॥ आपः ॥ ५८ ॥

परौ व्रजेः षश्च पदान्ते ॥ ५९ ॥ परिव्राट् ॥ ५९ ॥

हुवः श्लुवच्च ॥ ६० ॥ जुहूः ॥ ६० ॥

स्रुवः कः ॥ ६१ ॥ स्रुवः ॥ ६१ ॥

चिक् च ॥ ६२ ॥ स्रुक् ॥ ६२ ॥

तनोतेरनश्च वः ॥ ६३ ॥ त्वक् ॥ ६३ ॥

ग्लानुदिभ्यां डौः ॥ ६४ ॥ ग्लौः । नौः ॥ ६४ ॥

---

५८. आप्नुवन्ति शरीरमिति **आपः** । अस्य नित्यं बहुवचनत्वं स्त्रीत्वं च । अपः । अद्भिः । अद्भ्यः, इत्यादि ॥

५९. क्विप् । परितः सर्वतो व्रजति स **परिव्राट्**, परिव्राजौ, परिव्राजः, संन्यासी वा ॥

६०. जुहोति ददात्यत्ति वा यया सा **जुहूः** स्रुग्भेदो वा ॥

६१. स्रवति घृतमस्मात् स **स्रुवः** यज्ञसाधनं वा ।

बहुलवचनात्—ध्रुवति स्थिरं भवतीति **ध्रुवम्** निश्चलं वा ॥

६२. 'स्रु' धातोश्चिक् प्रत्ययोऽपि भवति । घृतमस्याः स्रवति सा **स्रुक्** यज्ञोचितद्रव्यं वा ॥

६३. तनोति विस्तृता भवतीति **त्वक्**, त्वचौ, त्वचः, शरीरावरणं चर्म्म वल्कलं वा ॥

६४. ग्लायति हर्षक्षयं करोतीति **ग्लौः** चन्द्रमा वा । नुदति प्रेरयतीति **नौः** जलतरणसाधनं वा ॥

च्विरव्ययम् ॥ ६५ ॥

रातेर्डैः ॥ ६६ ॥ रा: ॥ ६६ ॥

गमेर्डोः ॥ ६७ ॥ गौः ॥ ६७ ॥

भ्रमेश्च डूः ॥ ६८ ॥ भ्रूः । अग्रेगूः ॥ ६८ ॥

दमेर्डोसिः ॥ ६९ ॥ दोः ॥ ६९ ॥

---

६५. अत्रस्थ एजन्तप्रत्ययान्तश्च्व्यन्त एवाव्ययसंज्ञो भवति । एतेन नियमेनोणादीनां व्युत्पन्नपक्षे **कृन्मेजन्तः** । [१ । १ । ३८] इत्यनेनाच्व्यन्ता-नामव्यय सञ्ज्ञा न भवति । अग्लौ ग्लौः संपद्यत इति ग्लौकरोति । ग्लौभवति । ग्लौस्यात् । नौकरोति, इत्यादि । ग्लौः । नौः । अत्र केवलानामव्ययसंज्ञाऽभावाद्वि-भक्तिलुङ् न भवति ॥

६६. राति ददाति रायते दीयते वा सा **राः**, रायौ, रायः, धनं सुवर्णं वा । च्वि प्रत्यये 'रैकरोति' इत्यादि ॥

६७. गच्छति यो यत्र यया वा सा **गौः** पशुरिन्द्रियं सुखं किरणो वज्रं चन्द्रमा भूमिर्वाणी जलं वा । गौरिवाऽयो गमनं प्राप्ति र्वाऽस्येति 'गवयो' गोसदृशो वनपशुविशेषः । स्त्री 'गवयी' । गौरादित्वान् ङीष् । च्विप्रत्यये 'गोकरोति' इत्यादि ।

वाहुलकात्—द्योतन्ते लोका अस्यां वा यया द्योतते सा **द्यौः** अन्तरिक्षं वा । द्यावौ । द्यावः, इत्यादि ॥

६८. चाद् 'गम' धातोर्डूः । भ्रमति चलतीति **भ्रूः** नेत्रयोरुपरि रेखा वा । अग्रेगच्छतीति **अग्रेगूः** सेवको वा ॥

६९. दाम्यत्युपशाम्यति यो येन वा स **दोः**, दोषौ, दोषः, वाहूर्वा ॥

पणेरिज्यादेश्च वः ॥ ७० ॥ वणिक् ॥ ७० ॥

वशः कित् ॥ ७१ ॥ उशिक् ॥ ७१ ॥

भृज ऊच्च ॥ ७२ ॥ भुरिक् ॥ ७२ ॥

जसिसहोरुरिन् ॥ ७३ ॥ जसुरिः । सहुरिः ॥ ७३ ॥

सुयुरुवृञो युच् ॥ ७४ ॥
सवनः । यवनः । रवणः । वरणः ॥ ७४ ॥

अशे रश च ॥ ७५ ॥ रशना ॥ ७५ ॥

---

७०. पणायति व्यवहरतीति **वणिक्** वणिजौ, वणिजः, वैश्यो वा। प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण् 'वाणिजः' ॥

७१. वष्टि यं कामयते यत्काम्यते वा स **उशिक्**, उशिजौ, उशिजः, अग्निर्घृतं वा ॥

७२. इजिः कित् । भरति सर्वं धरतीति **भुरिक्** भूमिर्वा । भुरिजौ । भुरिजः ॥

७३. जस्यति मुञ्चति जासयति हिनस्ति वेति **जसुरिः** वज्रं वा । सहते भारमिति **सहुरिः** सूर्य्योभूमिर्वा ॥

७४. सवत्युत्पादयति सुनोति निस्सारयति रसान् वा स **सवनः** चन्द्रमा वा । यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स **यवनः** म्लेच्छभेदो वा । रौति शब्दयतीति **रवणः** कोकिलः पक्षी वा । वृणोति स्वीकरोतीति **वरणः** उदकं वृक्षभेदो वा ॥

७५. युच् धातो रशादेशश्च अश्नुते व्याप्नोतीति **रशना** स्त्रियः कटिभूषणं वा । दन्त्यसकारवांस्तु 'रसना' शब्दो नन्द्यादित्वाल्ल्युप्रत्ययान्तः । रसयत्यास्वादयति यया सा **रसना** जिह्वा । कृत्यल्युटो बहुलम् । [३ । ३ । ११३] इति करणे ल्युः ॥

उन्देर्नलोपश्च ॥ ७६ ॥ ओदनः ॥ ७६ ॥

गमेर्गश्च ॥ ७७ ॥ गगनम् ॥ ७७ ॥

बहुलमन्यत्रापि ॥ ७८ ॥

रञ्जेः क्युन् ॥ ७९ ॥ रजनम् ॥ ७९ ॥

भूसूधूभ्रस्जिभ्यश्छन्दसि ॥ ८० ॥
भुवनम् । सुवनम् । निधुवनम् । भृज्जनम् ॥ ८० ॥

---

७६. उनत्त्यार्द्रीभवतीति **ओदनः** भक्तं वा ॥

७७. मस्य गः गच्छन्त्यस्मिन्निति **गगनम्** आकाशं वा ॥

७८. अन्यधातुभ्योऽपि बहुलं युच् प्रत्ययो भवति द्योततेऽसौ **द्योतनः** प्रदीपो वा । स्यन्दते प्रस्रवति गच्छतीति **स्यन्दनः** रथो वा । नयते प्राप्नोति रूपं येन तत् **नयनम्** नेत्रं वा । चन्दत्याह्लादयतीति **चन्दनम्** सुगन्धिर्वृक्षो वा । रोचतेऽसौ **रोचना** गोरोचनमौषधं वा । अस्यति प्रक्षिपतीति **असनः** पीतवर्णः शालवृक्षो वा । राजानमततीति **राजातनः** पुष्पं वा । शृणोत्यनया सा **श्रवणा** नक्षत्रं वा । एवमन्येऽपि यथाप्रयोगं युच्प्रत्ययान्ताः शब्दाः साध्याः ॥

७९. रजति वस्त्राण्यनेन तत् **रजनम्** कुसुम्भं वा । स्त्रियां ङीप् 'रजनी' हरिद्रा । ल्युट् प्रत्यये सति **रञ्जनम्** इत्येव स्वरभेदश्च भवति ।

बाहुलकात्—कल्पतेऽसौ **कृपणः** लोभयुक्तो वा ॥

८०. क्युन् । भवतीति **भुवनम्** लोको वा । बहुलवचनाद् भाषायामपि प्रयुज्यते । सूते सूयते वा स **सुवनः** ईश्वरः सूर्यो वा । धूनोति कम्पयतीति **धुवनः** अग्निर्वा । **निधुवनम्** रतिक्रीडा वा । यद् यस्मिन् वा भृज्जति परिपक्वं भवतीति **भृज्जनम्** अन्नभर्जनकपालं वा ॥

कॄपॄवृजिमन्दिनिधाञः क्युः ॥ ८१ ॥
किरणः । पुरणः । वृजनम् । मन्दनम् । निधनम् ॥ ८१ ॥

धृषेर्धिष च संज्ञायाम् ॥ ८२ ॥ धिषणा ॥ ८२ ॥

हन्तेर्घुरच् ॥ ८३ ॥ घुरणः ॥ ८३ ॥

वर्त्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च ॥ ८४ ॥

---

८१. किरति विक्षिपत्यन्धकारमिति **किरणः** । पिपर्त्ति पालयति पूरयति वा स **पुरणः** जलैः पूर्णो भवतीति समुद्रो वा । वृक्ते वर्जयतीति **वृजनम्** अन्तरिक्षं बलं वा । यो येन वा मन्दते स्तौति स्वपिति कामयते वा तत् **मन्दनम्** स्तोत्रं वा । नितरां दधाति यत्तत् **निधनम्** मरणं वा ।

बाहुलकात्—केवलादपि **धनम्** ॥

८२. धृष्णोति प्रागल्भ्यं ददाति स **धिषणः** गुरुः **धिषणा** बुद्धिर्वा । अत्र सञ्ज्ञाग्रहणेन ज्ञायते उणादयः सामान्यार्थे यौगिका भवन्तीति । सञ्ज्ञायास्तस्मिन्नर्थे रूढत्वात् । यदि च प्रकृतिप्रत्ययविभागेन उणादिभ्यो यौगिकोऽर्थो न निस्सरेत् तर्हि सर्वे उणादिस्थाः शब्दाः सञ्ज्ञावाचका एव स्युः । पुनः सञ्ज्ञाग्रहणमनर्थकं स्यात् ॥

८३. हन्ति हननेन वा प्रादुर्भवति स **घुरणः** शब्दो वा ॥

८४. पृषदादयो वर्त्तमानार्थवाचका अतिप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । शतृवच्चैषां कार्यं भवतीति । पर्षति सिञ्चति हिनस्ति वा तत् **पृषत्** मृगविशेषो बिन्दुर्वा । पृषती, पृषन्ति स्त्रियां पृषती । बर्हति वर्धतेऽसौ **बृहत्** । महत्यर्थे त्रिलिङ्गः । स्त्रियां 'बृहती' छन्दोभेदो वा । महति पूजयति पूज्यते वा तत् **महत्** महान् । महतो भावो 'महिमा' । स्त्रियां ङीप् 'महती' नारदस्य सप्ततन्त्री वीणा वा । गच्छतीति **जगत्** । धातोर्जगादेशः । संसारे नपुंसकं वायुर्वा जगत् पुंसि । जङ्गमवाचिनि त्रिलिङ्गः । स्त्रियां जगती, छन्दोभेदो जनो वा ॥

संश्वत्तृपद्वेहत् ॥ ८५ ॥

छन्दस्यसानच् शुजृभ्याम् ॥ ८६ ॥

शवसानः । जरसानः ॥ ८६ ॥

ऋञ्जिवृधिमन्दिसहिभ्यः कित् ॥ ८७ ॥

ऋञ्जसानः । वृधसानः । मन्दसानः । सहसानः ॥ ८७ ॥

अर्त्तेर्गुणः शुट् च ॥ ८८ ॥ अर्शसानः ॥ ८८ ॥

---

८५. एतेऽप्यतिप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । संश्रीयतेऽसौ **संश्वत्** कुहको वा । प्रत्ययस्य सुट् धातोरिकारलोपश्च । संश्वदिवाचरति संश्वायते धूमः, भृशादित्वात् क्यङ् । तृप्नोति प्रीणयतीति **तृपत्** छत्रं वा । विशेषेण हन्तीति **वेहत्** विहन्ति गर्भमिति गर्भोपघातिनी गौर्वा । वेरुपसर्गस्यैकारादेशो धातोश्च टिलोपः पूर्वसूत्रात् पृथक्करणं शतृवद्भावनिवृत्त्यर्थम् । तेन—वेहतौ । वेहतः । संश्वतौ, इत्यादि सिद्धम् ॥

८६. शवन्ति गच्छन्त्यस्मिन् स **शवसानः** मार्गो वा । जीर्यति वयसा हीनो भवतीति **जरसानः** वृद्धो जनो वा ।

बाहुलकाद्—दृणाति तमो विदारयतीति **दरसानः** प्रकाशो वा । तरयति येन सः **तरसानः** नौका वा । वृणोतीति **वरसानः** कृतदारो वा ॥

८७. ऋञ्जत्योषध्यादिकं पाचयतीति **ऋञ्जसानः** मेघो वा । वर्धतेऽसौ **वृधसानः** पुरुषो वा । मन्दते स्तुत्यादिकं करोतीति **मन्दसानः** जीवोऽग्निर्वा । सहतेऽसौ **सहसानः** मयूरो यज्ञो वा ॥

८८. य ऋच्छति प्राप्नोति सर्वान् स **अर्शसानः** अग्निर्वा । धातोर्गुणः प्रत्ययस्य शुडागमश्च ॥

सम्यानच् स्तुवः ॥ ८९ ॥ संस्तवानः ॥ ८९ ॥

युधिबुधिदृशः किच्च ॥ ९० ॥

युधानः । बुधानः । दृशानः ॥ ९० ॥

हुर्च्छेः सनो लुक् छलोपश्च ॥ ९१ ॥ जुहुराणः ॥ ९१ ॥

श्वितेर्दश्च ॥ ९२ ॥ शिश्विदानः ॥ ९२ ॥

मुचियुधिभ्यां सन्वच्च ॥ ९३ ॥

मुमुचानः । युयुधानः ॥ ९३ ॥

तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः सञ्ज्ञायां चानिटौ ॥ ९४ ॥

शंस्ता । शंस्तरौ । क्षत्ता । क्षत्तारौ ॥ ९४ ॥

---

८९. सम्यक् स्तौतीति **संस्तवानः** वाग्मी वा ॥

९०. युध्यतेऽसौ **युधानः** शत्रुर्वा । बुध्यते स **बुधानः** आचार्यो वा । पश्यतीति **दृशानः** लोकपालः सूर्यो वा ।

बाहुलकात्—कल्पते समर्थो भवतीति **कृपाणः** खड्गो वा । पापयति स्थूलो भवतीति **पाषाणः** । णित्वाद् वृद्धिः ॥

९१. हूर्च्छति कुटिलो भवतीति **जुहुराणः** चन्द्रमा वा ॥

९२. सनो लुक् तकारस्य दकारः । किदित्यनुवृत्तेर्गुणनिषेधः । श्वेततेऽसौ **शिश्विदानः** पापकर्मा वा ॥

९३. मुञ्चत्यसौ **मुमुचानः** मोचकः । युध्यतेऽसौ **युयुधानः** योद्धा ॥

९४. शंस्यादिभ्यः क्षदादिभ्यश्च यथाक्रमं तृन्तृचौ तौ चानिटौ । शंसति स्तौतीति **शंस्ता** स्तोता । अप्तृन्तृच्० [६ । ४ । ११] इति सूत्रे नप्तृप्रभृतेः पृथक् पाठादौणादिकयोस्तृन्तृचोर्ग्रहणं न भवति । तेन शंस्तरौ, शंस्तरः, इत्यादिषु दीर्घो न भवति । शास्ति शिक्षते धर्मादिकमिति **शास्ता** पण्डितो वा ।

नप्तृनेष्टृत्वष्टृहोतृपोतृभ्रातृजामातृमातृपितृदुहितृ ॥ ९५ ॥

सावसेर्ऋन् ॥ ९६ ॥ स्वसा ॥ ९६ ॥

यतेर्वृद्धिश्च ॥ ९७ ॥ याता ॥ ९७ ॥

नञि च नन्देः ॥ ९८ ॥ ननान्दा । ननन्दा ॥ ९८ ॥

प्रशास्ता राजा । प्रशास्तारौ । प्रशास्तारः । परिगणनाद्दीर्घः 'क्षद संवृता' विति सौत्रो धातुः । क्षदति संवृणोतीति **क्षत्ता** सारथिर्द्वारपालो वैश्यायां शूद्राजातो वा । क्षुनत्ति संपिनष्टि येन स **क्षोत्ता** मुसलो वा । उन्नयति कार्याणीति **उन्नेता** ऋत्विग्वा । मन्यते जानात्यसौ **मन्ता** विद्वान् । हन्तीति **हन्ता** चौरो वा । **धाता** ईश्वरो वा । **उपदेष्टा** गुरुः, इत्यादि ॥

९५. नप्त्रादयो दश तृन्तृजन्ता निपात्यन्ते । नपतीति **नप्ता** पौत्रो दौहित्रो वा । नप्तुः पुत्रः 'प्रनप्ता' स्यात् । 'नप्त्री' पौत्री । नञः प्रकृतिभावः । नयतेः पुक्—नयतीति **नेष्टा** ऋत्विग्वा । त्विष्यतेऽसौ **त्वष्टा** सूर्यो वा । इकारस्याकारः । जुहोतीति **होता** यजमानो वा । व्यापकत्वेन सर्वं पुनातीति **पोता** विष्णुरीश्वरः । भ्राजते दीप्यतेऽसौ **भ्राता** सोदर्यो वा । जकारलोपः । जायां कन्यां माति मिनोति मिमीते मार्जयति वा स **जामाता** दुहितुः पतिः । 'मृज' धातोः सति रेफजकारलोपः । मानयति सत्करोतीति **माता** उत्पादिका वा । स्वस्रादित्वात् टाप्निषेधः । पाति रक्षतीति **पिता** जनको वा । दोग्धि कार्याणि प्रपूरयतीति **दुहिता** पुत्री वा । दुहितुरपत्यं 'दौहित्रः' ॥

९६. सुष्ठ्वस्यतीति **स्वसा** भगिनी वा ॥

९७. यततेऽसौ **याता** भ्रातॄणां भार्याः परस्परं यातारो भवन्ति ।

९८. न नन्दति तुष्यतीति **ननान्दा** । बाहुलकाद् वृद्ध्यभावे **ननन्दा** पत्युर्भगिनी वा ॥

दिवेर्ऋः ॥ ९९ ॥ देवा ॥ ९९ ॥

नयतेर्डिच्च ॥ १०० ॥ ना ॥ १०० ॥

सव्ये स्थश्छन्दसि ॥ १०१ ॥ सव्येष्ठा ॥ १०१ ॥

अर्तिसृधृधम्यम्यश्यवितृभ्योऽनिः ॥ १०२ ॥

अरणिः । सरणिः । धरणिः । धमनिः । अमनिः । अशनिः । अवनिः । तरणिः ॥ १०२ ॥

---

९९. दीव्यति क्रीडादिकं करोतीति **देवा** पत्युः कनीयान् भ्राता वा ॥

१००. ऋप्रत्ययस्य डित्वाट्टिलोपः कार्याणि नयतीति **ना;** नरौ, नरः । 'नारी' बद्धकेशावधूर्वा ॥

१०१. डित्वादाकारलोपः । सव्ये वामभागे तिष्ठतीति **सव्येष्ठा** सारथिर्वा । सप्तम्या अलुक् ॥

१०२. ऋच्छति प्राप्नोति येन स **अरणिः** अग्न्युत्पत्तये मथनी द्वे दारुणी वा । सरन्ति गच्छन्त्यस्मिन् स **सरणिः** मार्गो वा । ण्यन्तात् 'सृ' धातोरनिः 'सारणिः' । स्त्रियां 'सारणी' । बाहुलकात्—शृणाति हिनस्तीति **'शरणिः'** । धरति सर्वमिति **धरणिः** पृथिवी वा । 'धमिः' सौत्रो धातुः । धमति प्रापयति रसादिकमिति **धमनिः** नाडी वा । अमतीति **अमनिः** गतिर्वा । येनाश्नाति योऽश्नुते व्याप्नोति वा स **अशनिः** वज्रम् वा । अवति रक्षणादिकं करोतीति **अवनिः** भूमिर्वा । तरति येन यया वा स सा वा **तरणिः** सूर्यः कुमारी नौकौषधिभेदो वा ।

बाहुलकात्—रंजतीति **रजनिः** रात्रिर्वा । नलोपः । स्त्रियां 'रजनी' द्राक्षा हरिद्रा वा ॥

आङि शुषेः सनश्छन्दसि ॥ १०३ ॥
आशुशुक्षणिः ॥ १०३ ॥

कृषेरादेश्च धः ॥ १०४ ॥　धर्षणिः ॥ १०४ ॥

अदेर्मुट् च ॥ १०५ ॥　अद्मनिः ॥ १०५ ॥

वृतेश्च ॥ १०६ ॥　वर्त्तनिः ॥ १०६ ॥

क्षिपेः किच्च ॥ १०७ ॥　क्षिपणिः ॥ १०७ ॥

अर्चिशुचिहुसृपिछादिछर्दिभ्य इसिः ॥ १०८ ॥
अर्चिः । शोचिः । हविः । सर्पिः । छदिः । छर्दिः ॥ १०८ ॥

---

१०३. सन्नन्तादाङ्पूर्वादनिः प्रत्ययः । समन्तात् शुष्यन्ति पदार्था येन स **आशुशुक्षणिः** अग्निर्वा ॥

१०४. कृषतीति **धर्षणिः** पुंश्चली स्त्री वा । ङीप् 'धर्षणी' ॥

१०५. अत्तीति **अद्मनि** अग्निर्वा ॥

१०६. वर्तते यस्मिन्निति **वर्तनिः** मार्ग एकपदी वा ॥

१०७. क्षिपत्यनेन शत्रून् स **क्षिपणिः** आयुधं वा ॥

१०८. अर्चति येन तत् **अर्चिः** दीप्तिर्वा । शोचति शोचयतीति **शोचि**[ः] प्रकाशो वा । हूयते यत्तत् **हविः** होमयोग्यं वस्तु वा । यत्येन वा सर्पति त[त्] **सर्पिः** घृतं वा । छादयति येन तत् **छदिः** छादनं तृणादिछादनसाधनं वा[।] **इस्मन्त्रन्**० । [६ । ४ । ९७] इति ह्रस्वादेशः । छर्दति यत्तत् **छर्दिः** वम[न] व्याधिर्वा ।

बाहुलकात्—समन्तादवतीति **आविः** प्राकट्यम् । अव्ययशब्दोऽयम् ॥

बृंहेर्नलोपश्च ॥ १०९ ॥ बर्हिः ॥ १०९ ॥

द्युतेरिसिन्नादेश्च जः ॥ ११० ॥ ज्योतिः ॥ ११० ॥

वसौ रुचेः सञ्ज्ञायाम् ॥ १११ ॥ वसुरोचिः ॥ १११ ॥

भुवः कित् ॥ ११२ ॥ भुविः ॥ ११२ ॥

सहो धश्च ॥ ११३ ॥ सधिः ॥ ११३ ॥

पिबतेस्थुक् ॥ ११४ ॥ पाथिः ॥ ११४ ॥

जनेरुसिः ॥ ११५ ॥ जनुः ॥ ११५ ॥

मनेर्धश्छन्दसि ॥ ११६ ॥ मधुः ॥ ११६ ॥

---

१०९. बृंहति वर्द्धते तद् **बर्हिः** दर्भो वा ॥

११०. द्योतते प्रकाशते तत् **ज्योतिः** अग्निः सूर्यादिकं वा । ज्योतिरधिकृत्य कृतो ग्रन्थो 'ज्योतिषम्' । संज्ञापूर्वकविधेरनित्यत्वाद् वृद्धिनिषेधः ॥

१११. वसूनग्न्यादीन् रोचतेऽसौ **वसुरोचिः** यज्ञो वा । बाहुलकात्— केवलादपि **रोचिः** ज्वाला वा ॥

११२. इसिन् कित् । यो भवति यस्मिन् वा स **भुविः** समुद्रो वा ॥

११३. इसिन् । सहते भारमिति **सधिः** अनड्वान् वा ॥

११४. पिबति यो येन वा तत् **पाथिः** चक्षुः समुद्रो वा ॥

११५. जायते यत्तत् **जनुः** जनुषी जननं वा ।
बाहुलकात्—'मन' धातोरपि । मन्यते जानातीति **मनुः** मनुषी ॥

११६. मन्यते बुध्यते यो येन वा तत् **मधुः** पवित्रद्रव्यं वा ॥

अर्त्तिपॄवपियजितनिधनितपिभ्यो नित् ॥ ११७ ॥

अरुः । परुः । वपुः । यजुः । तनुः । धनुः । तपुः ॥ ११७ ॥

एतेर्णिच्च ॥ ११८ ॥ आयुः ॥ ११८ ॥

चक्षेः शिच्च ॥ ११९ ॥ चक्षुः ॥ ११९ ॥

मुहेः किच्च ॥ १२० ॥ मुहुः ॥ १२० ॥

कॄगॄशॄवॄञ्चतिभ्यः ष्वरच् ॥ १२१ ॥

कर्वरः । गर्वरः । शर्वरी । वर्वरः । चत्वरम् ॥ १२१ ॥

---

११७. ऋच्छति प्राप्नोतीति **अरुः** आदित्यो व्रणो वा । पिपर्त्ति येन तत् **परुः** ग्रन्थिर्वा । वपति बीजादिकमस्मात्तद् **वपुः** शरीरं वा । यजति येन तद् **यजुः** वेदविशेषो वा । तनोति कार्याण्यनेन तत् **तनुः** शरीरं वा । दिधन्ति धनादिकं प्राप्नोति येन तत् **धनुः** वाणक्षेपणं वा । तपति दुःखयतीति **तपुः** सूर्योऽग्निः शत्रुर्वा ॥

११८ः ईयते प्राप्यते यत्तत् **आयुः** जीवनं वा । जटापूर्वात् 'जटायुः' पक्षिराजः ॥

११९. चक्षते रूपमनुभवन्त्यनेन तत् **चक्षुः** नेत्रं वा । चक्षुषा गृह्यत इति 'चाक्षुषं' रूपम् ॥

१२०. मुह्यति भ्रान्तो भवतीति **मुहुः** पौनःपुन्येऽर्थेऽव्ययं वा ॥

१२१. किरति विक्षिपतीति **कर्वरः** व्याघ्रो दुष्टो वा । 'कर्वरी' रात्रिर्व्याघ्री दुष्टा वा । गिरति निगरतीति **गर्वरः** अहङ्कारः । अहङ्कारयोगाद् 'गर्वरो' नायकः । शृणाति हिनस्ति प्रकाशमिति **शर्वरी** रात्रिर्वा वृणातीति **वर्वरः** प्राकृतजनो वा । चतते याचते स्वीक्रियते यत्तत् **चत्वरम्** अङ्गनं वा ॥

नौ षद्देः ॥ १२२ ॥ निषद्वरः ॥ १२२ ॥

इत्युणादिषु द्वितीयः पादः ॥ २ ॥

१२२. निषीदति यो यत्र वा स **निषद्वरः** पङ्को 'निषद्वरी' रात्रिर्वा ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे द्वितीयः पादः ॥ २ ॥

———

अथ तृतीयपादारम्भः

छित्वरछत्वरधीवरपीवरमीवरचीवरतीवरनीवरगह्वरकट्वरसंयद्वराः ॥ १ ॥

इणूसिञ्जिदीङुष्यविभ्यो नक् ॥ २ ॥

इनः । सिनः । जिनः । दीनः । उष्णः । ऊनः ॥ २ ॥

---

१. छित्वरादय एकादश शब्दाः ष्वरच्प्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । छिनत्तीति **छित्वरः** धूर्तः शत्रुश्छेदनद्रव्यं वा । छदतेऽपवारयतीति **छत्वरः** गृहं लताच्छादितं स्थानं वा । अत्रोभयत्र धातुदकारस्य तकारः 'डुधाञ् [धारणे]' 'पा पाने' 'मा माने' एषामीत्वमन्त्यस्य । दधातीति **धीवरः** नौवाहको वा । पिबति दुग्धादिकमिति **पीवरः** स्थूलो वा । माति मीनाति हिनस्ति वा स **मीवरः** हिंसको वा । चिनोति तृणादिना चीयते वा स **चीवरः** 'चीवरं' वस्त्रं मुनिस्थानं वा । धातोर्दीर्घादेशः । तीरयति कर्मसमाप्तिं करोतीति **तीवरः** जातिविशेषो वा । रेफलोपो गुणाभावश्च । नयतीति **नीवरः** परिव्राट् वा । गुणनिषेधः । गाहते विलोडयतीति **गह्वरम्** गहनं वा । ह्रस्वादेशः । कटति वर्षत्यावृणोति वा तत् **कट्वरम्** भोज्यं व्यञ्जनं वा । संयच्छतीति **संयद्वरः** नृपो वा । मकारस्य दकारः ।

बाहुलकात्—उपजुहोतीति **उपह्वरः** रथो वा । ष्वरच्प्रत्ययस्य षित्वात् स्त्रियां 'छित्वरी' इत्यादि । सर्वत्र ङीष् ॥

२. एतीति **इनः** ईश्वरो राजा प्रभुः सूर्यो वा । इनेन स्वामिना सह वर्तत

फेनमीनौ ॥ ३ ॥

कृषेर्वर्णे ॥ ४ ॥ कृष्णः ॥ ४ ॥

बन्धेर्ब्रधिबुधी च ॥ ५ ॥ ब्रध्नः । बुध्नः ॥ ५ ॥

धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः ॥ ६ ॥

धानाः । पर्णम् । वस्नः । वेनः । अत्नः ॥ ६ ॥

इति 'सेना' । सिनोति बध्नातीति **सिनः** कारणो वा । जयतीति **जिनः** अतिवृद्धो जयशीलो नास्तिकभेदो वा । दीयते क्षीणो भवतीति **दीनः** दुःखी वा । ओषति दहतीति **उष्णम्** ईषत्तप्तं वा । वाच्यलिङ्गः । अवति रक्षादिकं करोतीति **ऊनः** असंपूर्णं वा ॥

३. स्फायते वर्द्धते स **फेनः** हिण्डीरः 'समुद्रफेन' इति प्रसिद्धः जलविकारो वा । फेनायते वदी । मीनाति हिनस्तीति **मीनः** राश्यन्तरो मत्स्यो वा ॥

४. कृषतीति **कृष्णः** नीलवर्णो वा 'कृष्णा' पिप्पली वा ।

बाहुलकात्—जिर्वति क्षरति चित्तं यया सा **घृणा** दौर्मनस्यं वा ॥

५. ब्रध्नातीति **ब्रध्नः** । [बुध्नातीति] **बुध्नः** । ब्रध्नो महान् सूर्य्यो वा । बुध्नो मेघो मूलमन्तरिक्षं वा ॥

६. दधातीति* **धानाः** अग्निपक्वा यवा वा । नित्यं स्त्रीलिङ्गो बहुवचनश्च । पिपर्ति पालयति वा तत् **पर्णम्** पत्रं वा । वसति येन स **वस्नः** मूल्यं वेतनं वा । अजति गच्छति प्राप्नोति वा स **वेनः** कमनीयः प्रजापतिरीश्वरो वा । अतति निरन्तरं गच्छतीति **अत्नः** सूर्य्यो वा ।

बाहुलकात्—शृणोतीति **श्रोणः** पङ्गुर्वा ॥

---

* दधतीति

५

लक्षेरट्मुट् च ॥ ७ ॥ लक्षणम् । लक्ष्मणम् ॥ ७ ॥

वनेरिच्चोपधायाः ॥ ८ ॥ वेन्ना ॥ ८ ॥

सिवेष्टेर्यू च ॥ ९ ॥ स्यूनः ॥ ९ ॥

कृवृजृसिद्रूपन्यनिस्वपिभ्यो नित् ॥ १० ॥

कर्णः । वर्णः । जर्णः । सेना । द्रोणः । पन्नः । अन्नम् । स्वप्नः ॥ १० ॥

धेट इच्च ॥ ११ ॥ धेनः । धेना ॥ ११ ॥

७. लक्षयतीति **लक्षणः; लक्ष्मणम्** चिह्नं नाम वा रामभ्राता लक्ष्मणो वा । हंसस्त्री लक्ष्मणा सारसी वा ॥

८. वन्यते सम्भज्यते या सा **वेन्ना** नदी वा ॥

९. सीव्यति तन्तून् सन्तनोतीति **स्यूनः** आदित्यो वा । टिभागस्य यू इत्यादेशः ।

बाहुलकात्—केवलोऽपि न प्रत्ययस्तेन ऊठादेशे कृते **स्योनः** सुखी स्योनं सुखमित्यपि सिद्धं भवति ॥

१०. नो नित् । किरति विक्षिपतीति **कर्णः** श्रोत्रं क्षत्रियविशेषो वा । वृणोति व्रियते वा स **वर्णः** ब्राह्मणादिः शुक्लादिः स्तुतिर्यशोरूपमक्षरं स्वीकारश्च । जीर्यतीति **जर्णः** चन्द्रमा वृद्धो वा । सिनोति बध्नाति शत्रूनिति **सेना** । इनेन सह वर्तत इति पूर्वमुक्तम् । द्रवति गच्छतीति **द्रोणः** कृष्णकाकः मानविशेषोऽर्जुनगुरुर्वा । 'द्रोणी' जलसेचनी वा । पनायति स्तौतीति **पन्नः** सर्पो वा । अनिति जीवयतीति **अन्नम्** ओदनादिकं वा । यः स्वपिति यत् सुप्यते वा स **स्वप्नः** निद्रा वा ॥

११. धयन्ति पिबन्ति यस्मात्स **धेनः** समुद्रो **धेनाः** नदी वा आत्त्वनिवृत्त्या इकारादेशः ॥

तृषिशुषिरसिभ्यः कित् ॥ १२ ॥

तृष्णा । शुष्णः । रस्नम् ॥ १२ ॥

सुञो दीर्घश्च ॥ १३ ॥ सूना ॥ १३ ॥

रमेस्त च ॥ १४ ॥ रत्नम् ॥ १४ ॥

रास्नासास्नास्थूणावीणाः ॥ १५ ॥

गादाभ्यामिष्णुच् ॥ १६ ॥ गेष्णुः । देष्णुः ॥ १६ ॥

कृत्यशूभ्यां क्स्नः ॥ १७ ॥ कृत्स्नम् । अक्ष्णम् ॥ १७ ॥

---

१२. तृष्यति काङ्क्षति पिपासति वा यया सा **तृष्णा** लिप्सा पिपासा वा । शुष्यति रसादिकमिति **शुष्णः** सूर्योऽग्निर्वा । रसति शब्दयतीति **रसनम्** द्रव्यं वा ॥

१३. यः सुनोति यत्र वेति **सूना** जन्तुवधस्थानं वा ॥

१४. ण्यन्ताद्रमेर्न प्रत्ययो मस्य तश्चादेशः । रमयति हर्षयतीति **रत्नम्** । "जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्धि रत्नं प्रचक्षते ।" अश्वरत्नम्, गजरत्नम्, मणिरत्नम्, स्त्रीरत्नम्, इत्यादि ॥

१५. रसति शब्दयतीति **रास्ना** गन्धद्रव्यं वा । सस्ति स्वपिति यया सा **सास्ना** गवादीनां कण्ठाधोभागश्चर्म वा । तिष्ठति छादनादिकमनया सा **स्थूणा** गृहस्तम्भो वा । आकारस्य ऊ आदेशः । वेति व्याप्नोति शब्दोऽस्याः सा **वीणा** वाद्यविशेषो वा । निपातनाण्णत्वम् ॥

१६. गायति शब्दं करोतीति **गेष्णुः** गाथको वा । ददातीति **देष्णुः** दानशीलो वा ॥

१७. कृन्तति स्वल्पमिति **कृत्स्नम्** संपूर्णं वा । अश्नुते व्याप्नोतीति **अक्ष्णम्** अखण्डं वा ॥

तिजेर्दीर्घश्च ॥ १८ ॥ तीक्ष्णम् ॥ १८ ॥

श्लिषेरच्चोपधायाः ॥ १९ ॥ श्लक्ष्णम् ॥ १९ ॥

यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच् ॥ २० ॥
यज्युः । मन्युः । शुन्ध्युः । दस्युः । जन्युः ॥ २० ॥

भुजिमृङ्भ्यां युक्त्युकौ ॥ २१ ॥
भुज्युः । मृत्युः ॥ २१ ॥

सरतेरयुः ॥ २२ ॥ सरयुः ॥ २२ ॥

पानीविषिभ्यः पः ॥ २३ ॥
पापम् । [नेपः] । नीपः । वेष्पः ॥ २३ ॥

---

१८. तितिक्षते तत् **तीक्ष्णम्** तीव्रम् । वाच्यलिङ्गोऽयं शब्दः । तीक्ष्णा बुद्धिः; तीक्ष्णः पुरुषः, तीक्ष्णं घृतम् ॥

१९. कृत्स्नः श्लिष्यतीति **श्लक्ष्णम्** सुकुमारम् त्रिलिङ्गेषु वा ॥

२०. यजतीति **यज्युः** अध्वर्युर्वा । मन्यतेऽसौ **मन्युः** शोकः क्रोधो वा । शुन्धतीति **शुन्ध्युः** अग्निर्वा । दस्यति नाशयति परपदार्थानिति **दस्युः** तस्करो वा । जायते प्रादुर्भवतीति **जन्युः** शरीरी वा । बाहुलकादनादेशाभावः ॥

२१. यो भुनक्ति यत्र वा स **भुज्युः** पात्रं वा । म्रियत इति **मृत्युः** शरीरवियोगो वा । स्त्रीलिङ्गः पुँल्लिङ्गश्च ॥

२२. यः सरति यत्र जलानि वा सरन्ति स **सरयुः** नदी वा अयूप्रत्यय पाठान्तरम्—**सरयूः** ॥

२३. पान्ति रक्षन्त्यात्मानमस्मादिति **पापम्** अधर्मो वा । तद्योगात्पापः पुरुषः । नयतीति **नेपः** पुरोहितो वा । [बाहुलकात् गुणाभावे **नीपः** वृक्षविशेषः] । वेवेष्टि व्याप्नोतीति **वेष्पः** पेयमुदकं वा ॥

च्युवः किच्च ॥ २४ ॥ च्युपः ॥ २४ ॥

स्तुवो दीर्घश्च ॥ २५ ॥ स्तूपः ॥ २६ ॥

सुशृभ्यां निच्च ॥ २६ ॥ सूपः । शूर्पम् ॥ २६ ॥

कुयुभ्यां च ॥ २७ ॥ कूपः । यूपः ॥ २७ ॥

खष्पशिल्पशष्पबाष्परूपपर्पतल्पाः ॥ २८ ॥

स्तनिहृषिपुषिगदिमदिभ्यो णेरित्नुच् ॥ २९ ॥
स्तनयित्नुः । हर्षयित्नुः । पोषयित्नुः । गदयित्नुः । मदयित्नुः ॥२९॥

---

२४. च्यवते प्राप्नोति वदति वा येन स **च्युपः** मुखं वा ॥

२५. स्तौतीति **स्तूपः** भूमिसमुच्छ्रायो यज्ञवेदिर्वा ॥

२६. किद् दीर्घश्च । सुनोति सूयते पच्यते वा स **सूपः** पक्वं द्विदलान्नं वा । शृणाति हिनस्तीति **शूर्पम्** मानभेदोऽन्नशोधकं पात्रं वा ॥

२७. कित् दीर्घश्च । कौति शब्दयतीति **कूपः** । यौति मिश्रयतीति **यूपः** यज्ञशालास्तम्भो वा ॥

२८. खष्पादयः पप्रत्ययान्ता निपाताः । खनतीति **खष्पः** क्रोधो बलात्कारो वा । नकारस्य षत्वम् । यत् शीलति समादधाति तत् **शिल्पम्** कौशलं वा । ह्रस्वादेशः । शष्यते हन्यते तत् **शष्पम्** बालतृणं कान्तिक्षयो वा । षत्वम् । बाधते दुःखयतीति **बाष्पम्** नेत्रजलमूष्मा वा । धकारस्य सत्वम् । रौति शब्दयतीति **रूपम्** आकृतिः स्वभावः सौन्दर्यं वा । दीर्घादेशः । पिपर्तीति **पर्पम्** गृहं बालतृणं वा । तलयति प्रतिष्ठां करोतीति **तल्पम्** शय्या स्त्रियो वा ।

बाहुलकात्—चमति भक्षयतीति **चम्पा** नगरी वा । पाति रक्षतीति **पम्पा** नदी वा । ह्रस्वत्वं मुडागमश्च ॥

२९. स्तनयति शब्दयतीति **स्तनयित्नुः** मेघो विद्युद्वा । हर्षयतीति **हर्षयित्नुः**

कृहनिभ्यां क्त्नुः ॥ ३० ॥ कृत्नुः । हत्नुः ॥ ३० ॥

गमेः सन्वच्च ॥ ३१ ॥ जिगत्नुः ॥ ३१ ॥

दाभाभ्यां नुः ॥ ३२ ॥ दानुः । भानुः ॥ ३२ ॥

वचेर्गश्च ॥ ३३ ॥ वग्नुः ॥ ३३ ॥

धेट इच्च ॥ ३४ ॥ धेनुः ॥ ३४ ॥

सुवः कित् ॥ ३५ ॥ सूनुः ॥ ३५ ॥

जहातेर्द्वे ऽन्त्यलोपश्च ॥ ३६ ॥ जह्नुः ॥ ३६ ॥

हर्षयिता सुवर्णं वा । पोषयतीति **पोषयित्नुः** पोषयिता । गादयतीति **गदयित्नुः** वावदूको वा । मादयतीति **मदयित्नुः** मदिरा वा । अत्र सर्वत्र **अयामन्ताल्वाय्येत्नु०** [६ । ४ । ५३] इति सूत्रेण णेरयादेशः ॥

३०. करोतीति **कृत्नुः** शिल्पी वा । यो हन्ति येन वा स **हत्नुः** व्याधिः शस्त्रं वा ॥

३१. गमयति शरीराणीति **जिगत्नुः** प्राणो वा ॥

३२. ददातीति **दानुः** दानशीलो बुद्ध्यादिविचक्षणो वा । भाति दीप्यतेऽसौ **भानुः** सूर्यः प्रकाशः किरणो वा । 'स्वर्भानु' राहुः । 'चित्रभानुः' सूर्योऽग्निर्वा । 'बृहद्भानु' रग्निः ॥

३३. वक्तीति **वग्नुः** वाचालो वा ॥

३४. धयन्ति पिबन्ति यस्याः सा **धेनुः** नवप्रसूता गौर्वा । कनि सति 'धेनुका' हस्तिनी वा ॥

३५. सूयत उत्पद्यतेऽसौ **सूनुः** अनुजः पुत्रः सूर्यो वा ॥

३६. जहाति दोषानिति **जह्नुः** कश्चिद्राजर्षिर्वा ॥

स्थो णुः ॥ ३७ ॥ स्थाणुः ॥ ३७ ॥

अजिवृरीभ्यो निच्च ॥ ३८ ॥
वेणुः । वर्णुः । रेणुः ॥ ३८ ॥

विषेः किच्च ॥ ३९ ॥ विष्णुः ॥ ३९ ॥

कृदाधाराचिकलिभ्यः कः ॥ ४० ॥
कर्कः । दाकः । धाकः । राका । अर्कः । कल्कः ॥ ४० ॥

सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक् ॥ ४१ ॥
सृकः । वृकः । भूकम् । शुष्कः । मुष्कः ॥ ४१ ॥

---

३७. तिष्ठतीति **स्थाणुः** शुष्कवृक्षो निश्चलो वा ॥

३८. अजति गच्छति प्रक्षिपति वा स **वेणुः** वंशो राजविशेषो वा । व्रियते सम्भजतीति **वर्णुः** गदो देशभेदो वा । रिणाति गच्छति हिनस्ति हन्यते वा स **रेणुः** धूलिः । 'सुरेणुः' सुवर्णरजः । 'त्रसरेणुः' सुरेणुर्वा ॥

३९. वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगदिति **विष्णुः** जगदीश्वरः ॥

४०. बहुलवचनान्न ककारस्येत्सञ्ज्ञा । करोतीति **कर्कः** अग्निः शुक्लाश्वो दर्पणो घटो वा । ददातीति **दाकः** यजमानो वा । दधातीति **धाकः** आधारोऽनड्वान् वा । राति ददातीति **राका** पौर्णमासी नदीभेदो वा । अर्चयतीति **अर्कः** अर्कपर्णं स्फटिकं सूर्यो वा । कलते शब्दयतीति **कल्कम्** दम्भः किल्विषं वा ।

बाहुलकात्—रमतेऽसौ **रङ्कः** कृपणो मन्दो वा । कपिलकादित्वाल्लत्वे कृते **लङ्का** दुष्टनगरी वृक्षशाखा पुंश्चली वा ॥

४१. सरतीति **सृकः** वाणी वज्रं वायुरुत्पलं वा । वृणोतीति **वृकः** काकः श्वापदो वा । वृक एव 'वार्कण्यः' । भवतीति **भूकम्** छिद्रं कालो वा । शुष्यतीति

शुकवल्कोल्काः ॥ ४२ ॥

इण्भीकापाशल्यतिमर्चिभ्यः कन् ॥ ४३ ॥

एकः । भेकः । काकः । पाकः । शल्कम् । अत्कः । मर्कः ॥ ४३ ॥

नौ हः ॥ ४४ ॥ निहाका ॥ ४४ ॥

नौ सदेर्डिच्च ॥ ४५ ॥ निष्कः ॥ ४५ ॥

शुष्कः नीरसो वा । मुष्यत आव्रियत इति **मुष्कः** अण्डकोषः सङ्घातो वा । मुष्कोऽस्यातीति 'मुष्करः' ।

बाहुलकाद्—अवति रक्षणहेतुर्भवतीति **ओकः** राशिः स्थानं वा । मूर्व्यते बध्यतेऽसौ **मूकः** वचनवर्जितो वा । रेफवकारयोर्लोपः ॥

४२. शुकादयः कप्रत्ययान्ता निपाताः । शोभतेऽसौ **शुकः** पक्षिजातिर्व्यासपुत्रो वा । वलते संवृणोति येन तत् [**वल्कम्**] वल्कलं वा । ओषति दहतीति **उल्का** विद्युदग्नेर्ज्वाला वा । षकारस्य लत्वम् ॥

४३. एति प्राप्नोतीति **एकः** मुख्योऽन्यः केवलो वा । यो बिभेति यस्माद्वा स **भेकः** मण्डूको मेघो वा । कायति शब्दयतीति **काकः** वायसो वा । पिबत्यसाविति **पाकः** शिशुर्वृद्धो वा । शल्यति गच्छति शल्यते वा तत् **शल्कम्** बल्कलं वा । अतति निरन्तरं गच्छतीति **अत्कः** पथिकः शरीरावयवो वा । 'मर्च' इति सौत्रो धातुः, मर्चति चेष्टतेऽसौ **मर्कः** शरीरवायुर्वा ।

बाहुलकात्—श्यतीति **शाकम्** स्यतीति **साकं** वा ॥

४४. नितरां जहाति त्यजतीति **निहाका** गोधिका वा ॥

४५. निषीदतीति **निष्कः** परिमाणभेदो वा ॥

स्यमेरीट् च ॥ ४६ ॥ स्यमीका; स्यमिकः ॥ ४६ ॥

अजियुधुनीभ्यो दीर्घश्च ॥ ४७ ॥

वीकः । यूका । धूकः । नीकः ॥ ४७ ॥

ह्रियो रश्च लो वा ॥ ४८ ॥ ह्रीका; ह्लीका ॥ ४८ ॥

शकेरुनोन्तोन्त्युनयः ॥ ४९ ॥

शकुनः; शकुन्तः; शकुन्ति; शकुनिः ॥ ४९ ॥

भुवो झिच् ॥ ५० ॥ भवन्तिः ॥ ५० ॥

कन्युच् क्षिपेश्च ॥ ५१ ॥ क्षिपण्युः । भुवन्युः ॥ ५१ ॥

---

४६. स्यमिति शब्दयतीति **स्यमीकः** वल्मीको वृक्षभेदो वा । चकारादिडागमे **स्यमिकः** ॥

४७. अजति गच्छतीति **वीकः** वायुः पक्षी वा । यौतीति **यूका** शिरःकेश-जन्तुर्वा । धूनोति कम्पयतीति **धूकः** वायुर्वा । नयतीति **नीकः** वृक्षवि [illegible] । ॥

४८. जिह्रेति लज्जां करोतीति **ह्रीका; ह्लीका** लज्जा वा ॥

४९. उत, उन्त, उन्ति, उनि, इत्येते प्रत्यया भवन्ति । शक्नोतीति **शकुनः; शकुन्तः; शकुन्तिः; शकुनिः** पक्षिनामानि वा ॥

५०. भवन्ति पदार्था यस्मिन् स **भवन्तिः** वर्तमानकालो वा ।

कामयतेऽसौ **कुन्तिः**, स्त्रियां 'कुन्ती' । धातोः कुरादेशः प्रत्ययादिलोपश्च । अवतीति **अवन्तिः** राजा वा । वदतीति **वदन्तिः** कोलाहलो वा । 'किंवदन्ती' जनश्रुतिः । कुन्त्यादयो बाहुलकादेव भवन्ति ॥

५१. चाद् भुवः । क्षिप्यति प्रेरयतीति **क्षिपण्युः** वसन्त ऋतुर्वा । भवतीति **भुवन्युः** स्वामी सूर्यो वा ॥

अनुङ् नदेश्च ॥ ५२ ॥ नदनुः । क्षिपणुः ॥ ५२ ॥

कृवृदारिभ्य उनन् ॥ ५३ ॥

करुणा । वरुणः । दारुणम् ॥ ५३ ॥

त्रो रश्च लो वा ॥ ५४ ॥ तरुणः; तलुनः ॥ ५४ ॥

क्षुधिपिशिमिथिभ्यः कित् ॥ ५५ ॥

क्षुधुनः । पिशुनः । मिथुनम् ॥ ५५ ॥

फलेर्गुक् च ॥ ५६ ॥ फल्गुनः ॥ ५६ ॥

अशेर्लशश्च ॥ ५७ ॥ लशुनम् ॥ ५७ ॥

---

५२. चात् क्षिपेः नदत्यव्यक्तं शब्दं करोतीति **नदनुः** मेघो वा । क्षिप्यतीति **क्षिपणुः** वायुर्वा ॥

५३. किरति विक्षिपति दुर्गुणमिति **करुणः** वृक्षभेदो वा । **करुणा** कृपा वा । करुणा शीलमस्येति 'कारुणिकः' । वृणोति व्रियते वाऽसौ **वरुणः** उत्तमं जलं वृक्षभेदो वा । दारयति यत् येन वा तत् **दारुणं** भीषणं वा ॥

५४. उनन् । तरतीति **तरुणः; तलुनः** युवा वृक्षभेदो वा । स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष्—'तरुणी; तलुनी' वा युवतिः ॥

५५. क्षुध्यति भोक्तुमिच्छतीति **क्षुधुनः** म्लेच्छजातिर्वा । पिशत्यवयवं करोतीति **पिशुनः** खलः सूचको वा । मेथति जानाति ज्ञायते हिनस्ति वा तत् **मिथुनम्** द्वयोः संयोगो राशिर्वा ॥

५६. फलति निष्पन्नो भवतीति **फल्गुनः** शुक्लो वा ॥

५७. उनन् । अश्यते भुज्यते यत्तत् **लशुनम्** औषधरूपः कन्दो वा ॥

अर्जेर्णिलुक् च ॥ ५८ ॥ अर्जुनः ॥ ५८ ॥

तृणाख्यायां चित् ॥ ५९ ॥ अर्जुनम् ॥ ५९ ॥

अर्त्तेश्च ॥ ६० ॥ अरुणः ॥ ६० ॥

अजियमिशीङ्भ्यश्च ॥ ६१ ॥

वयुनम् । यमुना । शयुनः ॥ ६१ ॥

वृतृवदिवचिवसिहनिकमिकषिभ्यः सः ॥ ६२ ॥

वर्षम् । तर्षः । वत्सः । वक्षः । वत्सम् । हंसः । कंसः । कक्षम् ।
॥ ६२ ॥

५८. उनन् । अर्जयतीति **अर्जुनः** शुक्लो मयूरो वृक्षभेदो वा । 'अर्जुनी' सौरभेयी ॥

५९. अर्जयति यत्तत् **अर्जुनं** तृणम् । चित्करणमन्तोदात्तार्थम् ॥

६०. ऋच्छति प्राप्नोतीति **अरुणः** सूर्यः कुष्ठं रक्तं वा ॥

६१. वीयते गम्यतेऽत्रेति **वयुनम्** मन्दिरं वा । यच्छतीति **यमुना** नदीभेदो वा । शेतेऽसौ **शयुनः** अजगरो वा ॥

६२. वृणोति स्वीकरोतीति **वर्षम्** संवत्सरो वृष्टिरार्यावर्तो मेघो वा । "स्त्रियां बहुवचनान्तो 'वर्षाः' प्रावृषि ऋतौ" । तरति येन यत्र वा स **तर्षः** समुद्रो वा । वदतीति **वत्सः** बालो [वा । वक्त्यस्मिन्निति **वक्षः**] वक्षःस्थलं वा । [वसत्यस्मिन्निति **वत्सम्** निवासस्थानं वा ।] हन्तीति **हंसः** निर्लोभः सूर्यः पक्षिभेदोऽश्वभेदः शरीरस्थो वायुर्वा । कामयते परपदार्थान्निति **कंसः** तैजसद्रव्यं पात्रं तस्करो वा । कषति हिनस्तीति **कक्षम्** तृणं लतावनसमीपं बाहुमूलं वा ॥

बाहुलकात्—राजते दीप्यते सा **राक्षा** लाक्षा । कपिलकादित्वाल्लत्वम् । यौतीति **योषा** स्त्री वा ॥

प्लुषेरच्चोपधायाः ॥ ६३ ॥ प्लक्षः ॥ ६३ ॥

मनेर्दीर्घश्च ॥ ६४ ॥ मांसम् ॥ ६४ ॥

अशेर्देवने ॥ ६५ ॥ अक्षः ॥ ६५ ॥

स्नुव्रश्चिकृत्यृषिभ्यः कित् ॥ ६६ ॥

स्नुषा । वृक्षः । कृत्सम् । ऋक्षम् ॥ ६६ ॥

ऋषेर्जातौ ॥ ६७ ॥ ऋक्षः ॥ ६७ ॥

---

६३. प्लोषति दहतीति **प्लक्षः** पिप्पलं पर्कटी वा 'पाकरि' इति प्रसिद्ध द्वीपभेदो गृहस्य द्वारपार्श्वं वा ॥

६४. मन्यते ज्ञायतेऽनेन तत् **मांसम्** शरीरोपचयो वा ॥

६५. अश्नुते व्याप्नोतीति **अक्षः**, अक्षाणीन्द्रियाणि तुषं चक्रं शकट व्यवहारो वा ॥

६६. स्नौति प्रस्रवतीति **स्नुषा** यवीयसो भ्रातुर्भार्या वा । वृश्च्यते छिद्यतेऽसौ **वृक्षः** । 'वृक्ष वरणे' इत्यस्मादपीगुपधात् के प्रत्यये 'वृक्षः' इति सिध्यति । अर्थभेदायात्र वृश्चिग्रहणं, तेन छेद्यत्वात् कार्यं जगदपि 'वृक्षः' उच्यते। कृन्तति छिनत्तीति **कृत्सम्** उदकम् । ऋषति गच्छतीति **ऋक्षम्** नक्षत्रसामान्य वा ।

बाहुलकात्—समन्तान्मेषति हिनस्तीति **आमिक्षा** क्षीरविकारो वा। लिश्यतेऽल्पाभवतीति **लिक्षा** शिरःकेशजन्तुर्वा । रोहति वीजाज्जायतेऽसौ **रुक्षः** वृक्षजातिः प्रीतिहीनो वा ॥

६७. ऋषति गच्छतीति **ऋक्षः** मृगजातिभेदो भल्लूकः । पूर्वसूत्रेण सिद्ध जातिनियमाद्यौगिके 'ऋष' धातोः षः प्रत्ययो वा ॥

उन्दिगुधिकुषिभ्यश्च ॥ ६८ ॥
उत्सः । गुत्सः । कुक्षः ॥ ६८ ॥

गृधिपण्योर्दकौ च ॥ ६९ ॥ गृत्सः । पक्षः ॥ ६९ ॥

अशेः सरन् ॥ ७० ॥ अक्षरम् ॥ ७० ॥

वसेश्च ॥ ७१ ॥ वत्सरः ॥ ७१ ॥

संपूर्वाच्चित् ॥ ७२ ॥ संवत्सरः ॥ ७२ ॥

कृधूमदिभ्यः कित् ॥ ७३ ॥
कृसरः । धूसरः । मत्सरः ॥ ७३ ॥

पतेरश्च लः ॥ ७४ ॥ पत्सलः ॥ ७४ ॥

---

६८. उनत्ति क्लिद्यतीति **उत्सः** जलस्रवणस्थानमृषिर्वा । गुध्नाति रोषं करोतीति **गुत्सः** हारभेदः पुष्पगुम्फो वा । कुष्णाति निष्कर्षतीति **कुक्षः** जठरस्थानं वा ॥

६९. चित् । गृध्यति अभिकाङ्क्षतीति **गृत्सः** कामो वा । गकारस्य भष्भाव निवृत्यर्थो दकारादेशः । पणायति स्तौति व्यवहरति वा येन यत्र वा स **पक्षः** मासार्द्धः पार्श्वभागः साध्यविरोधः समूहो बलं मित्रसहायो वा ॥

७०. अश्नुते व्याप्नोतीति **अक्षरम्** ब्रह्मवर्णो मोक्ष उदकं वा ॥

७१. वसन्त्यस्मिन्निति **वत्सरः** वर्षो वा ॥

७२. चित्वादन्तोदात्तस्वरः । सम्यग्वसन्त्यत्र स **संवत्सरः** ॥

७३. य करोति क्रियते वा स **कृसरः** तिलौदनं मिश्रं वा । धूनोतीति **धूसरः** ईषत्पाण्डुरो वा । माद्यतीति **मत्सरः** असह्यपरसंपत्तिर्जनः कृपणः क्रुद्धो वा । 'मत्सरा' मक्षिका वा ॥

७४. पतन्ति गच्छन्ति यत्र स **पत्सलः** पन्था वा ॥

तन्यृषिभ्यां क्सरन् ॥ ७५ ॥ तसरः । ऋक्षरः ॥ ७५ ॥

पीयुक्वणिभ्यां कालन् ह्रस्वं सम्प्रसारणञ्च ॥ ७६ ॥
पियालः । कुणालः ॥ ७६ ॥

कठिकुषिभ्यां काकुः ॥ ७७ ॥ कठाकुः । कुषाकुः ॥ ७७ ॥

सर्त्तेर्दुक् च ॥ ७८ ॥ सृदाकुः ॥ ७८ ॥

वृतेर्वृद्धिश्च ॥ ७९ ॥ वार्त्ताकुः; वार्त्ताकम् ॥ ७९ ॥

पर्दे र्नित्संप्रसारणमलोपश्च ॥ ८० ॥ पृदाकुः ॥ ८० ॥

सृयुवचिभ्योऽन्युजागूजक्नुचः ॥ ८१ ॥
सरण्युः । यवागूः वचक्नुः ॥ ८१ ॥

---

७५. तनोतीति **तसरः** सूत्रवेष्टनो वा । ऋषति प्राप्नोति वा स **ऋक्षरः** ऋत्विग्वा ॥

७६. 'पीयुः' सौत्रो धातुः । पीयति तर्पयतीति **पियालः** वृक्ष भेदो वा 'चिरोंजी' इति प्रसिद्धा । क्वणति शब्दं करोतीति **कुणालः** देशभेदो वा ।

वाहुलकात्—भजतीति **भगालम्** नरमस्तकं वा । कुत्वं च ॥

७७. कठतीति **कठाकुः** पक्षी वा । कुषति निष्कर्षतीति **कुषाकुः** अग्नि सूर्यो वा ॥

७८. सरतीति **सृदाकुः** वायुर्वा; सरन्त्यापोऽस्यामिति सृदाकुः नदी ॥

७९. वर्त्ततेऽसौ **वार्त्ताकुः** हिंगुली 'वृन्ताक' इति प्रसिद्धम् । वाहुलकादु कारस्य अ, ई भवतः—**वार्त्ताकम्; वार्त्ताकी** वा ॥

८०. पर्दते कुत्सितं शब्दं करोतीति **पृदाकुः** व्याघ्रः सर्पो वा ॥

८१. सरतीति **सरण्युः** मेघो वायुर्वा । यौति मिश्रयतीति **यवागूः** दु पक्वयवचूर्णं वा । वक्तीति **वचक्नुः** वाचालः प्राज्ञो वा ॥

आनकः शीङ्भियः ॥ ८२ ॥ शयानकः । भयानकः ॥ ८२ ॥

आणको लूधूशिङ्घिधाञ्भ्यः ॥ ८३ ॥

लवाणकः । धवाणकः । शिङ्घाणकः । धाणकः ॥ ८३ ॥

उल्मुकदर्विहोमिनः ॥ ८४ ॥

ह्रियः कुक् रश्च लो वा ॥ ८५ ॥ ह्रीकुः । ह्लीकुः ॥ ८५ ॥

हसिमृग्रिण्वामिदमिलूपूधूर्विभ्यस्तन् ॥ ८६ ॥

हस्तः । मर्त्तः । गर्त्तः । एतः । वातः । अन्तः । दन्तः । लोतः । पोतः । धूर्त्तः ॥ ८६ ॥

---

८२. शेतेऽसौ **शयानकः** अजगरो वा । बिभेत्यस्मादिति **भयानकः** भयप्रद ॥

८३. लुनाति येन तत् **लवाणकम्** दात्रं वा । धूनोतीति **धवाणकः** वायुर्वा । शिङ्घति समन्ताज्जिघ्रतीति **शिङ्घाणकः** श्लेष्मा वा ।

बाहुलकात्—ककारलोपे **शिङ्घाणम्ः** काचपात्रं लोहनासिकयोर्मलं वा । दधाति धीयते वा स **धाणकः** व्यवहारयोग्यद्रव्यभागो वा ॥

८४. ओषति दहतीति **उल्मुकम्** ज्वलदङ्गारो वा । मुकप्रत्ययो धातो षकारस्य लत्वम् । दृणाति विदारयति येन स **दर्विः** परिवेषणपात्रं वा । विन् प्रत्ययः । जुहोतीति **होमी** यजमानो वा अत्र मिनुप्रत्ययः ॥

८५. जिह्रेति लज्जां करोतीति **ह्रीकुः** लज्जावान् । **ह्लीकुः** जतुत्रपुणी लाक्षादिर्वा ॥

८६. हसतीति **हस्तः** नक्षत्रं करो वा । हस्तोऽस्यास्तीति 'हस्ती' । म्रियतेऽसौ **मर्त्तः** मनुष्यो वा । मर्त्त एव 'मर्त्यः' स्वार्थे यत् । गिरति निगलति स **गर्त्तः** अवटः पतनस्थानं वा । एति प्राप्नोति यं स **एतः** विचित्रवर्णो वा । स्त्रियां—'एनी; एता' । वातीति **वातः** वायुर्व्याधिर्वा । अमति गच्छतीति **अन्तः**

नञ्याप इट् च ॥ ८७ ॥ नापितः ॥ ८७ ॥

तनिमृङ्भ्यां किच्च ॥ ८८ ॥ ततम् । मृतम् ॥ ८८ ॥

अञ्जिघृसिभ्यः क्तः ॥ ८९ ॥
अक्तम् । घृतम् । सितम् ॥ ८९ ॥

दुतनिभ्यां दीर्घश्च ॥ ९० ॥ दूतः । तातः ॥ ९० ॥

नाशः समीपं तत्त्वस्वरूपं मनोहरं वा । दाम्यत्युपशाम्यति यो येन वा स **दन्तः** दशनो वा । शोभना दन्ता यस्याः सा 'सुदती' युवतिः । 'दन्तावलो' 'दन्तुरो' वा हस्ती । लुनातीति **लोतः** अश्रुचिह्नं वा । पुनातीति **पोतः** बालो वहित्रो वा । धूर्वतीति **धूर्त्तः** शठो लवणं धत्तूरं वा ।

बाहुलकात्—तोसति शब्दयतीति **तूस्तम्** पापं जटा वा । तूस्तं करोति तूस्तयति । छ्यति छिनत्तीति **छातः** दुर्बलो वा । अभितो म्लायतीति **अभिम्लातः** हर्षक्षीणो वा ॥

८७. नाप्नोति सत्कर्माणीति **नापितः** केशच्छेदको वा ॥

८८. तनोतीति **ततम्** वीणादिकं वाद्यं वा । म्रियते येन तत् **मृतम्** याचितं भैक्ष्यं वा ॥

८९. यदनक्ति प्रकटीकरोतीति तत् **अक्तम्** व्याघ्रः परिमितं वा । जिघर्ति संचलति दीप्यते वा तत् **घृतम्** उदकं सर्पिः प्रदीप्तं वा । सिनोति बध्नातीति **सितम्** शुक्लं वा ।

बहुलवचनात्—हूर्च्छति कुटिलं भवतीति **मुहूर्तम्** घटिकाद्वयकालो वा। धातोर्मुडागमः, **राल्लोपः** [६ । ४ । २१] इति छ लोपः । ऋच्छत्यात्मानं प्राप्नोतीति **ऋतम्** यथार्थं वा । वसति यत्रेति **वस्तम्** स्थानं वा ॥

९०. दवति गच्छति दुनोत्युतपति वा स **दूतः** बहुकार्यसाधको राजभृत्यो वा । स्त्रियां 'दूती' । तनोति कार्याणीति **तातः** पिता वा ।

जेर्मूट् चोदात्तः ॥ ९१ ॥ जीमूतः ॥ ९१ ॥

लोष्टपलितौ ॥ ९२ ॥

हृश्याभ्यामितन् ॥ ९३ ॥ हरितः । श्येतः ॥ ९३ ॥

रुहेरश्च लो वा ॥ ९४ ॥ रोहितः । लोहितम् ॥ ९४ ॥

पिशेः किच्च ॥ ९५ ॥ पिशितम् ॥ ९५ ॥

श्रुदक्षिस्पृहिगृहिभ्य आय्यः ॥ ९६ ॥

श्रवाय्यः । दक्षाय्यः । स्पृहयाय्यः । गृहयाय्यः ॥ ९६ ॥

बाहुलकात्—स्यति कर्मसमाप्तिं करोतीति **सीता** क्षेत्रे हलेन कृता रेखा स्त्रीविशेषो वा ॥

९१. धातोर्दीर्घः प्रत्ययस्य मूडुदात्तत्वं च । यो जयति येन वा स **जीमूतः** मेघः पर्वतो वा ॥

९२. लोष्टते सङ्घातो भवतीति **लोष्टम्** मृत्पिण्डो वा । पल्यते प्राप्यते तत् **पलितम्** वृद्धावस्थया केशादीनां शुक्लत्वं वा ॥

९३. हरतीति **हरितः** वर्णभेदो वा । श्यायति गच्छतीति **श्येतः** श्यामवर्णो वा । स्त्रियां—'हरिणी; हरिता । श्येनी; श्येता' ॥

९४. रोहति प्रादुर्भवतीति **रोहितः** मृगमत्स्ययोर्भेदो रोहितं रुधिरं वा । **लोहितः** अङ्गारको रुधिरं रक्तवर्णो वा ॥

९५. पिश्यतेऽवयवरूपं क्रियते तत् **पिशितम्** मांसं वा ॥

९६. श्रावयतीति **श्रवाय्यः** दानपशुर्वा । दक्षयति वर्द्धतेऽसौ **दक्षाय्यः** गृध्रो वा । स्पृहयतीति **स्पृहयाय्यः** अभीप्सुर्नक्षत्रं वा । गर्हयति पदार्थान् गृह्णातीति **गृहयाय्यः** गृहस्वामी वा । आय्यप्रत्यये णेरयादेशः ॥

दधातेर्द्वित्वमित्वं पुक् च ॥ ९७ ॥ दधिषाय्यः ॥ ९७ ॥

वृञ एण्यः ॥ ९८ ॥ वरेण्यः ॥ ९८ ॥

स्तुवः केय्यश्छन्दसि ॥ ९९ ॥ स्तुवेय्यम् ॥ ९९ ॥

राजेरन्यः ॥ १०० ॥ राजन्यः ॥ १०० ॥

शॄरम्योश्च ॥ १०१ ॥ शरण्यम् । रमण्यम् ॥ १०१ ॥

अर्त्तेर्निच्च ॥ १०२ ॥ अरण्यम् ॥ १०२ ॥

पर्जन्यः ॥ १०३ ॥

वदेरान्यः ॥ १०४ ॥ वदान्यः ॥ १०४ ॥

---

९७. दधिस्यति समापयतीति **दधिषाय्यः** घृतम् । निपातनात् षत्वम् ॥

९८. व्रियते स्वीक्रियतेऽसौ **वरेण्यः** श्रेष्ठो वा ॥

९९. स्तूयतेऽसौ **स्तुवेय्यः** पुरन्दरो वा । क्सेय्य इति पाठान्तरं तदा— **स्तुषेय्यः** ॥

१००. राजते दीप्यतेऽसौ **राजन्यः** अग्निर्वा । क्षत्रियजातौ तु राज्ञोऽपत्यं राजन्यः । तत्रान्त्यस्वरितः ॥

१०१. शृणाति हिनस्तीति **शरण्यम्** अज्ञानं वा । रमतेऽस्मिस्तत् **रमण्यम्** गृहं वा ॥

१०२. ऋच्छन्ति गृहाद् गच्छन्ति यत्र तत् **अरण्यम्** वनं वा । महदरण्य-मरण्यानी ॥

१०३. पर्षति सिञ्चतीति **पर्जन्यः** मेघः समर्थो वा । निपातनात्षकारस्य जकारः ॥

१०४. उद्यते वदतीति वा स **वदान्यः** वाग्मी त्यागी वा ॥

अमिनक्षियजिवधिपतिभ्योऽत्रन् ॥ १०५ ॥
अमत्रम् । नक्षत्रम् । यजत्रम् । बधत्रम् । पतत्रम् ॥ १०५ ॥

गडेरादेश्च कः ॥ १०६ ॥ कडत्रम् । कलत्रम् ॥ १०६ ॥

वृञश्चित् ॥ १०७ ॥ वरत्रा ॥ १०७ ॥

सुविदेः कत्रन् ॥ १०८ ॥ सुविदत्रम् ॥ १०८ ॥

कृतेर्नुम् च ॥ १०९ ॥ कृन्तत्रम् ॥ १०९ ॥

भृमृदृशियजिपर्विपच्यमितमिनमिहर्य्यिभ्योऽतच् ॥ ११० ॥
भरतः । मरतः । दर्शतः । यजतः । पर्वतः । पचतः । अमतः । तमतः । नमतः । हर्य्यतः ॥ ११० ॥

---

१०५. अमति प्राप्नोति यत्र तत् **अमत्रम्** पात्रं वा । नक्षति गच्छतीति **नक्षत्रम्** तारका वा । इज्यते यजति वा तद् **यजत्रम्** अग्निहोत्रं होता वा । बधीति हनः स्थाने बधादेशो निपात्यते । हन्ति येन तद् **बधत्रम्** आयुधं वा । पतति गच्छति येन तत् **पतत्रम्** वाहनं लोमानि वा ॥

१०६. गडति सिञ्चतीति **कडत्रम्** । बाहुलकात्—डस्य लः **कलत्रम्** कटिभागो भार्या वा ॥

१०७ वृणोत्युदकादिकं यया या वा सा **वरत्रा** चर्मरज्जुर्वा ॥

१०८. सुष्ठु विद्यते तत् **सुविदत्रम्** कुटुम्बं वा ॥

१०९. कृन्तति छिनत्ति येन तत् **कृन्तत्रम्** लाङ्गलं वा ॥

११०. भरति पुष्णातीति **भरतः** राजभेदो नटो रामानुजो वा । म्रियतेऽसौ **मरतः** मृत्युर्वा । पश्यति येन स **दर्शतः** चन्द्रः सूर्यो वा । यजतीति **यजतः** ऋत्विग्वा । पर्वति पूर्णो भवतीति **पर्वतः** । पर्व विद्यतेऽस्मिन्निति मत्वर्थीयस्तकारप्रत्ययो वा गिरिर्वा पचति येन स **पचतः** अग्निर्वा । अमति गच्छतीति **अमतः**

पृषिरञ्जिभ्यां कित् ॥ १११ ॥ पृषतः । रजतम् ॥ १११ ॥

खलतिः ॥ ११२ ॥

शीङ्शपिरुगमिवञ्चिजीविप्राणिभ्योऽथः ॥ ११३ ॥
शयथः । शपथः । रवथः । गमथः । वञ्चथः । जीवथः । प्राणथः ॥
॥ ११३ ॥

भृञश्चित् ॥ ११४ ॥ भरथः ॥ ११४ ॥

रेणुर्वा । ताम्यति काङ्क्षतीति **तमतः** तृष्णापरो वा । नमतीति **नमतः** नम्रो वा । हर्यति गच्छतीति **हर्यतः** अश्वो वा ।

बाहुलकात्—मलते स्वरूपं धरतीति **मालती** । उपधादीर्घो, गौरादित्वान् ङीष् ॥

१११. पर्षति सिञ्चतीति **पृषतः** विन्दुर्मृगो वा । रजति प्रियं भवतीति **रजतम्** रूप्यं शुक्लं वा ॥

११२. स्खलति सञ्चलतीति **खलतिः** निष्केशशिराः पुरुषो वा । धातोः सलोपः प्रत्ययान्तस्येत्वं निपातः ॥

११३. शेतेऽसौ **शयथः** अजगरो वा । शप्यत आक्रुश्यत इति **शपथः** निश्चयकरणं वा । रौतीति **रवथः** कोकिलो वा । गच्छतीति **गमथः** पथिको वा । वञ्चति प्रलम्भयतीति **वञ्चथः** धूर्तः । अस्य स्थाने वन्दीति पाठान्तरे **वन्दथः** स्तोता स्तुत्यो वा । जीवतीति **जीवथः** आयुष्मान् । प्राणितीति **प्राणथः** बलवान् वा ॥

बाहुलकात्—दृणातीति **दरथः** दिक्षु प्रसरणं गर्त्तो वा । शाम्यतीति **शमथः** शान्तिः । दाम्यतीति **दमथः** दमो वा ॥

११४. बिभर्त्तीति **भरथः** लोकपालो राजा वा ॥

रुविदिभ्यां ङित् ॥ ११५ ॥ रुवथः । विदथः ॥ ११५ ॥

उपसर्गे वसेः ॥ ११६ ॥ आवसथः । संवसथः ॥ ११६ ॥

अत्यविचमितमिनमिरभिलभिनभितपिपतिपनिपणिमहिभ्योऽसच् ॥ ११७ ॥

अतसः । अवसः । चमसः । तमसः । नमसः । रभसः । लभसः । नभसः । तपसः । पतसः । पनसः । पणसः । महसम् ॥ ११७ ॥

वेञस्तुट् च ॥ ११८ ॥ वेतसः ॥ ११८ ॥

---

११५. रौतीति **रवथः** श्वा वा । वेत्तीति **विदथः** योगो वा ॥

११६. समन्ताद्वसति यत्र स **आवसथः** गृहं वा । सम्यग्वसन्ति यत्र स **संवसथः** ग्रामो वा ॥

११७. अतति निरन्तरं गच्छतीति **अतसः** वायुर्वा । स्त्रियाम् 'अतसी' । अवति रक्षादिकं करोतीति **अवसः** राजा वा । चमति भक्षयति येन स **चमसः** । गौरादित्वात्—'चमसी' । ताम्यति काङ्क्षतीति **तमसः** ध्वान्तं वा । नमतीति **नमसः** अनुकूलं वा । रभतेऽसौ **रभसः** वेगो हर्षो वा । लभतेऽसौ **लभसः** अश्वबन्धनं वा । नभते हिनस्तीति **नभसः** आकाशं वा । तपति तापहेतुर्भवतीति **तपसः** चन्द्रमा वा । पततीति **पतसः** पक्षी वा । पनायति स्तौतीति **पनसः** कण्टकिफलं वा । [पणायति व्यवहरतीति **पणसः** पण्यद्रव्यं वा] महतीति **महसम्** ज्ञानं वा ।

बाहुलकात्—अम्यते प्राप्यते तत् **तामरसम्** कमलं वा । प्रत्ययस्य णित्वाद् वृद्धिर्धातोश्च तुट् । स्यति कर्मसमापयतीति **साध्वसम्** पश्चाद् ज्ञानं वा । धातोर्धुक् । कङ्कते चञ्चलं भवतीति **कीकसम्** अस्थि वा । धातोः कीकादेशः । तरतीति **तरसम्** मांसं वा ॥

११८. वयसि तन्तून् संतनोतीति **वेतसः** वृक्षभेदो वा ॥

वहियुभ्यां णित् ॥ ११९ ॥ वाहसः । यावसः ॥ ११९ ॥

वयश्च ॥ १२० ॥ वायसः ॥ १२० ॥

दिवः कित् ॥ १२१ ॥ दिवसम् ॥ १२१ ॥

कृशृशलिकलिगर्दिभ्योऽभच् ॥ १२२ ॥
करभः । शरभः । शलभः । [कलभः] । गर्दभः ॥ १२२ ॥

ऋषिवृषिभ्यां कित् ॥ १२३ ॥ ऋषभः । वृषभः ॥ १२३ ॥

रुषेर्नित्लुष् च ॥ १२४ ॥ लुषभः ॥ १२४ ॥

रासिबल्लिभ्यां च ॥ १२५ ॥ रासभः । बल्लभः ॥ १२५ ॥

---

११९. वहतीति **वाहसः** अजगरो वा । यौति मिश्रयत्यमिश्रयति वा स **यावसः** तृणसन्ततिर्वा ॥

१२०. वयते गच्छतीति **वायसः** काको वा ॥

१२१. दीव्यति प्रकाशते सूर्यो यत्र तद् **दिवसम्; दिवसः** वा अर्द्धादिपाठाद् द्विलिङ्गः ॥

१२२. किरति विक्षिपतीति **करभः** हस्तस्य बहिर्भागो बालो वा । शृणातीति **शरभः** आरण्यानां मध्ये हिंसकविशेषपशुजातिः शलते गच्छतीति **शलभः** पतङ्गो वा । कलते संख्यां करोतीति स **कलभः** करिशावको वा। गर्दयति शब्दं करोतीति **गर्दभः** खरो वा ॥

१२३. ऋषति गच्छतीति **ऋषभः** । वर्षतीति **वृषभः** श्रेष्ठपर्यायौ वलीवर्दो वा ॥

१२४. रोषति हिनस्तीति **लुषभः** मत्तहस्ती वा ॥

१२५. रासति शब्दयतीति **रासभः** खरो वा । बल्लते संवृणोतीति **बल्लभः** प्रियो वा ॥

जॄविशिभ्यां झच् ॥ १२६ ॥ जरन्तः । वेशन्तः ॥ १२६ ॥

रुहिनन्दिजीविप्राणिभ्यः षिदाशिषि ॥ १२७ ॥

रोहन्तः । नन्दन्तः । जीवन्तः । प्राणन्तः । रोहन्ती ॥ १२७ ॥

तॄभूवहिवसिभासिसाधिगडिमण्डिजिनन्दिभ्यश्च ॥ १२८ ॥

तरन्तः । भवन्तः । वहन्तः । वसन्तः । भासन्तः । साधन्तः । गण्डयन्तः । मण्डयन्तः । जयन्तः । नन्दयन्तः ॥ १२८ ॥

---

१२६. प्रत्ययादि झकारस्य **झोऽन्तः** । [७ । १ । ३] इत्यन्तादेशः । जीर्यति स **जरन्तः** महिषो वा । विशति प्रवेशं करोतीति **वेशन्तः** अल्पजलाशयो वा ।

बाहुलकात्—अर्हति पूज्यो भवतीति **अर्हन्तः** ॥

१२७. रोहतीति **रोहन्तः** वृक्षभेदो वा । नन्दति समृद्धियुक्तो भवतीति **नन्दन्तः** पुत्रो वा । यो जीवति स **जीवन्तः** औषधं वा । प्राणिति श्वासप्रश्वासान् प्रवर्त्तयति स **प्राणन्तः** वायुर्वा । षित्वात् स्त्रियां ङीष्—'प्राणन्ती । रोहन्ती । नन्दन्ती । जीवन्ती' ॥

१२८. झच् । यस्तरति येन यत्र वा स **तरन्तः** समुद्रस्तरन्ती नौका वा । यो भवतीति यत्र वा स **भवन्तः** कालो वा । वहति कार्याणि प्रापयतीति **वहन्तः** वायुर्वा । यो वसति यत्र वा स **वसन्तः** ऋतुभेदो वा । भासयते दीप्यतेऽसौ **भासन्तः** सूर्यो वा । साध्नोति कार्याणीति **साधन्तः** भिक्षुको वा । गण्डयति सेचयतीति **गण्डयन्तः** मेघो वा । मण्डयति शोभितं करोतीति **मण्डयन्तः** भूषणं वा । जयतीति **जयन्तः** जयशीलः । स्त्रियां 'जयन्ती' पुष्पभेदो वा । विजयन्तः कश्चिद्राजविशेषस्तस्य प्रासादो 'वैजयन्तः' । वैजयन्ती पताका । नन्दन्ति येन स **नन्दयन्तः** आनन्दकरो वा । अतः पूर्वसूत्रेऽपि नन्दिः पठितः, अत्र पुनर्ग्रहण-मनाशिष्यपि यथा स्यात् ॥

हन्तेर्मुट् हि च ॥ १२९ ॥ हेमन्तः ॥ १२९ ॥

भन्देर्नलोपश्च ॥ १३० ॥ भदन्तः ॥ १३० ॥

ऋच्छेररः ॥ १३१ ॥ ऋच्छरः ॥ १३१ ॥

अर्त्तिकमिभ्रमिचमिदेविवासिभ्यश्चित् ॥ १३२ ॥

अररः । कमरः । भ्रमरः । चमरः । देवरः । वासरः ॥ १३२ ॥

कुवः क्ररन् ॥ १३३ ॥ कुररः ॥ १३३ ॥

अङ्गिमदिमन्दिभ्य आरन् ॥ १३४ ॥

अङ्गारः । मदारः । मन्दारः ॥ १३४ ॥

---

१२९. यो हन्ति शीतेन स **हेमन्तः** ऋतुभेदो वा ॥

१३०. भदन्ते कल्याणं करोतीति **भदन्तः** प्रव्रजितो वा ॥

१३१. ऋच्छति गच्छति स **ऋच्छरः; ऋच्छरा** वेश्या वा ।

बाहुलकात्—वदतीति **वदरम्** वदर्य्याः फलं वा । कन्दति वैकल्यं करोतीति **कदरः** श्वेत खदिरो वा । कपिलकादित्वाल्लत्वे गौरादित्वान् ङीष्—'कदली । कदरी । वदरी' । **मन्दरकन्दरशीकरकोटरशवरसमरबर्बरबर्करकर्परपिञ्जराम्बराडम्बरजर्जरकर्करनखरतोमर**प्रभृतयोऽपि—अरप्रत्ययान्ता बहुलवचनादेव साधनीयाः ॥

१३२. ऋच्छति गच्छति यत स **अररः** कपाटो वा । कामयतेऽसौ **कमरः** कामुको वा । भ्राम्यतीति **भ्रमरः** षट्पदः कामुको वा । चमति भक्षयतीति **चमरः** मृगभेदो वा । गौरादित्वात् स्त्रियां ङीष्—'चमरी' सुरा गौः । चमर्य्या अयं 'चामरः' बालसमूहः । दीव्यति क्रीडादिकं करोतीति **देवरः** विधवाया द्वितीयः पतिः, पत्युः कनिष्ठभ्राता । वासयतीति **वासरः** मङ्गलादिवारो वा ॥

१३३. कौति शब्दयतीति **कुररः** पक्षिभेदो वा ॥

१३४. अङ्गति गच्छति स **अङ्गारः** निर्धूमोऽग्निर्भूमिविकारो वा । माद्यति मत्तो भवतीति **मदारः** वराहो वा । मन्दते स्तौतीति **मन्दारः** निम्बतरुरर्कवृक्षो

गडेः कड च ॥ १३५ ॥ कडारः ॥ १३५ ॥

शृङ्गारभृङ्गारौ ॥ १३६ ॥

कञ्जिमृजिभ्यां चित् ॥ १३७ ॥
कञ्जारः । मार्जारः ॥ १३७ ॥

कमेः किदुच्चोपधायाः ॥ १३८ ॥ कुमारः ॥ १३८ ॥

तुषारादयश्च ॥ १३९ ॥
तुषारः । कासारः । सहारः । [तर्कारः] ॥ १३९ ॥

वा । वाहुलकात् 'मन्द'धातोरारुप्रत्ययोऽपि भवति—मन्दतेऽसौ **मन्दारुः** निम्बार्को वा ॥

१३५. गडति सिञ्चतीति **कडारः** पीतवर्णो वा ॥

१३६. शृणाति हिनस्तीति **शृङ्गारः** हस्तिशोभा नाट्यरसो दम्पत्योरन्योऽन्यं सम्भोगस्पृहा वा । अत्र धातोर्नुम् ह्रस्वादेशश्च । विभर्ति पुष्यतीति **भृङ्गारः** सुवर्णपात्रविशेषो वा । स्त्रियां 'भृङ्गारी' कीटजातिभेदो वा 'भींगर' इति प्रसिद्धः ॥

१३७. कञ्जति रौतीति **कञ्जारः** मयूरो व्यञ्जनं वा । मार्ष्टि शुन्धतीति **मार्जारः** विडालो वा । स्त्रियां 'मार्जारी' ॥

१३८. चिदनुवर्त्तते । कामयते भोगानिति **कुमारः** शिशुर्युवराजो वा । कुमार क्रीडायाम्' इत्यस्मादपि पचाद्यचि कृते कुमारशब्दो व्युत्पद्यते तदपायान्तरमर्थभेदश्च ॥

१३९. यस्तुष्यति येन वा तत् **तुषारम्** हिमं वा । कासते शब्दयति निन्दति वा स **कासारः** सरसी वा । सहतीति **सहारः** आम्रभेदो वा । तर्कयति भाषतेऽसौ **तर्कारः** । स्त्रियां गौरादित्वात् 'तर्कारी' जयन्ती विशेषलता वा ॥

दीङोनुट् च ॥ १४० ॥ दीनारः ॥ १४० ॥

सर्त्तेरपः षुक् च ॥ १४१ ॥ सर्षपः ॥ १४१ ॥

उषिकुटिदलिकचिखजिभ्यः कपन् ॥ १४२ ॥
उषपः । कुटपः । दलपः । कचपम् । खजपम् ॥ १४२ ॥

क्वणेः सम्प्रसारणञ्च ॥ १४३ ॥ कुणपम् ॥ १४३ ॥

कपश्चाक्रवर्मणस्य ॥ १४४ ॥

विटपविष्टपविशिपोलपाः ॥ १४५ ॥

---

१४०. दीयते क्षयति येन वा स **दीनारः** सुवर्णाभरणं वा ॥

१४१. सरति गच्छति स **सर्षपः** कटुस्नेहवान् वा ॥

१४२. ओषती दहति स **उषपः** अग्निः सूर्यो वा । कुटतीति **कुटप**मानभाण्डं वा । दालयति विदारयतीति **दलपः** प्रहारो वा । कचते बध्नातीति **कचपम्** शाकपात्रं वा । खजति मथ्नाति मथ्यत इति **खजपम्** घृतं वा ॥

१४३. क्वणति शब्दं करोतीति **कुणपः** शवो मृद्भेदो वा ॥

१४४. चाक्रवर्मणस्य मते कपे सति प्रत्ययस्यादिरुदात्तः । अन्यमते सङ्घातस्याद्युदात्तत्वम् ॥

१४५. कप्प्रत्ययान्ता निपाताः । वेटति शब्दयति वायुनेति **विटपः** शाखाःविस्तारो वा । विशन्ति यत्रेति **विष्टपम्** भुवनं वा । **त्रिविष्टपः** सुखविशेषभोगो वा । धातोर्वकारस्य पत्वं प्रत्ययस्य तुट् च—**त्रिपिष्टपम्** इति वा । विशन्ति यत्रेति **विशिपम्** मन्दिरं वा । प्रत्ययादेरित्वम् । बलते संवृणोतीति **उलपम्** कोमलतृणं वा । धात्वादेः सम्प्रसारणम् ॥

वृतेस्तिकन् ॥ १४६ ॥ वर्त्तिका ॥ १४६ ॥

कृतिभिदिलतिभ्यः कित् ॥ १४७ ॥
कृत्तिका । भित्तिका । लत्तिका ॥ १४७ ॥

इष्यशिभ्यां तकन् ॥ १४८ ॥ इष्टका । अष्टका ॥ १४८ ॥

इणस्तशन्तशसुनौ ॥ १४९ ॥ एतशः । एतशाः ॥ १४९ ॥

विपतिभ्यां तनन् ॥ १५० ॥ वेतनम् । पत्तनम् ॥ १५० ॥

दृदलिभ्यां भः ॥ १५१ ॥ दर्भः । दलभः ॥ १५१ ॥

---

१४६. वर्त्ततेऽसौ **वर्त्तिका** पक्षिभेदो वा । यस्तु 'वृतु'धातोर्ण्वुल्प्रत्यये **वर्त्तका** शब्दस्तत्र वार्त्तिकेनेत्वनिषेधाद्वर्त्तका इत्येव । तत्रोणादीनामव्युत्पन्नत्वाद्वर्त्तका व्युत्पन्न इति भेदः ॥

१४७. कृन्ततीति **कृत्तिका** नक्षत्रं वा । भिनत्तीति **भित्तिका** भित्तिर्वा । लततीति **लत्तिका** गोधा वा ॥

१४८. इष्यतेऽसौ **इष्टका** । अश्नुते सा **अष्टका** वैदिककर्मविशेषो वा ।

वाहुलकात्—मस्यति परिणमतीति **मस्तकम्** शिरो वा । दधातीति **धातकम्** । स्त्रियां 'धातकी' पुष्पभेदः ॥

१४९. एति प्राप्नोतीति **एतशः; एतशाः; एतशौ** अश्वो ब्राह्मणो वा । एकोऽदन्तोऽपरः सान्तः ॥

१५०. वेत्ति प्राप्नोति खादति वा तद् **वेतनम्** भृतिर्वा । वेतनेन जीवति 'वैतनिकः' कर्मकरः । पतति गच्छतीति **पत्तनम्** नगरं वा ॥

१५१. दृणाति विदारयतीति **दर्भः** कुशो वा । दलते विशीर्णो भवतीति **दलभः** ऋषिश्चक्रं वा ॥

अर्त्तिगृभ्यां भनन् ॥ १५२ ॥ अर्भः । गर्भः ॥ १५२ ॥

इणः कित् ॥ १५३ ॥ इभः ॥ १५३ ॥

असिसञ्जिभ्यां क्थिन् ॥ १५४ ॥

अस्थि । सक्थि ॥ १५४ ॥

प्लुषिकुषिशुषिभ्यः क्सिः ॥ १५५ ॥

प्लुक्षिः । कुक्षिः । शुक्षिः ॥ १५५ ॥

अशेर्नित् ॥ १५६ ॥ अक्षिः ॥ १५६ ॥

इषेः क्सुः ॥ १५७ ॥ इक्षुः ॥ १५७ ॥

---

१५२. इयर्ति गच्छतीति **अर्भः** शिशुर्वा । अल्पोऽर्भोऽर्भकः । गिरति गृणात्युपदिशतीति **गर्भः** जठरं तत्रस्थो वा । गर्भादप्राणिनीति तारकादित्वादितच्—गर्भिताः शालयः । प्राणिनि तु 'गर्भिणी' ॥

१५३. एतीति **इभः** हस्ती वा ॥

१५४. अस्यति प्रक्षिपति येन तत् **अस्थि** कीकसं शरीरान्तरवयवो वा सजतीति **सक्थि** ऊरुदेशो वा ॥

१५५. प्लोषति दहतीति **प्लुक्षिः** अग्निर्वा । कुष्णाति निष्कृषतीति **कुक्षिः** जठरं गर्भाशयो वा । शोषयतीति **शुक्षिः** वायुर्वा । अत्रान्तर्गतो णिच् तस्य पर्णशुड्वत् णिलुक् ॥

१५६. अश्नुते व्याप्नोति विषयान् येन तत् **अक्षि** नेत्रं वा ॥

१५७. इष्यते स **इक्षुः** मधु तृणं वा ॥

अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः ॥ १५८ ॥
अवीः । तरीः । स्तरीः । तन्त्रीः ॥ १५८ ॥

यापोः किद् द्वे च ॥ १५९ ॥ ययीः । पपीः ॥ १५९ ॥

लक्षेर्मुट् च ॥ १६० ॥ लक्ष्मीः ॥ १६० ॥

इत्युणादिषु तृतीयः पादः ॥ ३ ॥

---

१५८. अवतीति **अवीः** रजस्वला स्त्री वा । तरति यया सा **तरीः** नौका वस्त्रादिरक्षकं भाण्डं वा । स्तृणोत्याच्छादयतीति **स्तरीः** धूमो वा । तन्त्रयति कुटुम्बं धरतीति **तन्त्रीः** वीणा वा णिलोपः ॥

१५९. याति प्रापयति स **ययीः** अश्वो वा । पिबति पाति रक्षतीति वा स **पपीः** सूर्यश्चन्द्रो वा ॥

१६०. लक्षयति पश्यत्यङ्कयति वा सा **लक्ष्मीः** विभूतिर्वा । लक्ष्मीरस्यास्तीति 'लक्ष्मणः' । लक्ष्म्या अच्चेति पामादिपाठान्मत्वर्थीयो नः ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे तृतीयः पादः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थपादारम्भः

वातप्रमीः ॥ १ ॥

ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पिमद्यत्यङ्गिकुयुकृशिभ्यः कत्निच्यतुजलिजिष्णुजिष्ठजिसनस्यनिथिन्नुल्यसासानुकः ॥ २ ॥

रत्निः । तन्यतुः । अञ्जलिः । वनिष्णुः । अञ्जिष्ठः । अर्पिसः । मत्स्यः । अतिथिः । अङ्गुलिः । कवसः । यवासः । कृशानुः ॥ २ ॥

---

१. वात इव प्रमिणोति प्रक्षिपतीति **वातप्रमीः** अतिशीघ्रगामी हरिणविशेषो वा । पुंल्लिङ्ग एवायं शब्दः । वातप्रमीन् मृगान् । ङौ तु—वातप्रमी । अमि—वातप्रमीम् ।

बाहुलकात्—उश्यते काम्यतेऽसौ **उशी** वाञ्छा, तत्कुशला नरा अस्मिन् सन्तीति 'उशीनरो' देशः । अत्र बहुलवचनादेव सम्प्रसारणम् ॥

२. एभ्यो द्वादश धातुभ्यः कत्निजादयो द्वादश प्रत्यया यथासंख्यं भवन्ति । ऋच्छति गच्छतीति **रत्निः** बद्धमुष्टिहस्तो वा । प्रसृताङ्गुलिररत्निः । तनु—यतुच् । तनोति विस्तृणोतीति **तन्यतुः** वायू रात्रिर्वा । अञ्जू—अलिच् । अनक्ति व्यक्तं करोतीति **अञ्जलिः** संयुतौ करौ वा । वनु—इष्णुच् । वनोति याचतेऽसौ **वनिष्णुः** अपानवायुर्वा । अञ्जू—इष्ठच् । अनक्ति प्रकटयति पदार्थानिति **अञ्जिष्ठः** सूर्यो वा । अर्पि—इसन् । अर्पयतीति **अर्पिसः** अग्रमांसं वा । [मदि-स्यन् ।] माद्यति हृष्यतीति **मत्स्यः** मीनो वा । अत—इथिन् । अतति निरन्तरं

श्रः कन् ॥ ३ ॥ शर्करा ॥ ३ ॥
पुषः कित् ॥ ४ ॥ पुष्करम् ॥ ४ ॥
कलँश्च ॥ ५ ॥ पुष्कलम् ॥ ५ ॥
गमेरिनिः ॥ ६ ॥ गमी ॥ ६ ॥
आङि णित् ॥ ७ ॥ आगामी ॥ ७ ॥
भुवश्च ॥ ८ ॥ भावी ॥ ८ ॥
प्र स्थः ॥ ९ ॥ प्रस्थायी ॥ ९ ॥

गच्छति भ्रमतीति **अतिथिः** अकस्मादागतः सज्जनो वा । न विद्यते नियता तिथिरस्येति व्युत्पत्त्यन्तरम् । स्त्रियां कृदिकारादक्तिन इति ङीष्—'अतिथी' स्त्री । अङ्गि—उलि । अङ्गति चेष्टतेऽनेन सः **अङ्गुलिः** करशाखा वा । कु—असः । कौति वा कवत इति **कवसः** कण्टकजातिर्वा । अच इति पाठान्तरम् । तदा कवत इति **कवचम्** [यु—आस ।] यौति मिश्रयतीति **यवासः** कण्कट-वृक्षभेदो वा वा [कृश—आनुक् ।] कृशति तनूकरोतीति **कृशानुः** अग्निर्वा ॥

३. शृणातीति **शर्करा** खण्डविकारो मृद्विकारो वा ॥

४. पुष्णातीति **पुष्करम्** अन्तरिक्षं कमलमुदकं वा ॥

५. 'पुष' धातोः कलनपि । पुष्यतीति **पुष्कलम्** पूर्णं वा ॥

६. गमिष्यतीति **गमी** पथिको वा । **भविष्यति गम्यादयः** [३ । ३ । ३] इति कालनियमः ॥

७. णित्वाद् वृद्धिः । आगमिष्यतीति **आगामी** ॥

८. इनिः णित् । भविष्यतीति **भावी** ।

९. इनिः णित् । णित्वाद्युक् । प्रस्थातुमिच्छतीति **प्रस्थायी** गन्तुमनाः ॥

परमे कित् ॥ १० ॥ परमेष्ठी ॥ १० ॥

मन्थः ॥ ११ ॥ मन्थाः । मन्थानौ ॥ ११ ॥

पतः स्थ च ॥ १२ ॥ पन्थाः ॥ १२ ॥

खजेराकः ॥ १३ ॥ खजाकः ॥ १३ ॥

वलाकादयश्च ॥ १४ ॥
वलाका । शलाका । पताका ॥ १४ ॥

---

१०. परमे उत्तमे व्यवहारे तिष्ठतीति **परमेष्ठी** सर्वेषां पितामह ईश्वरो वा । सप्तम्या अलुक् षत्वं च ॥

११. इनिः कित् कित्त्वान्नलोपः । मन्थयति विलोडयतीति **मन्थाः** । मथिन् शब्दस्य सर्वनामस्थान आत्वम् । **मन्थानौ, मन्थानः** दध्यादि मन्थनदण्डो वज्रो वायुर्वा ॥

१२. पतन्ति गच्छन्ति यत्र स **पन्थाः** मार्गः । **पन्थानौ** । पूर्ववदात्वम् । 'पथे गतौ' इत्यस्माद्धातोः पचाद्यचि कृते **पथः पथौ पथाः** इत्यदन्तोऽपि दृश्यते ॥

१३. खजति मथ्नातीति **खजाकः** पक्षिः; **खजाका** दर्विर्वा ।

बहुलवचनात् मन्द्यन्ते स्तूयन्ते तानि **मन्दाकानि** स्रोतांसि वा । तान्यस्याः सन्तीति 'मन्दाकिनी' नदीभेदः ॥

१४. वलते संवृणोत्यसौ **वलाका** वकपङ्क्तिः कामिनी, वलाको वकपक्षी वा । मन्यते जानाति सा **मनाका** हस्तिनी वा । पुनातीति **पवाका** । यां शलन्ति गच्छन्तीति **शलाका** अञ्जनयष्टिका वा । पटति गच्छतीति **पटाकः** पक्षी वा । पत्यते ज्ञायतेऽसौ **पताका** ध्वजा वा ॥

पिनाकादयश्च ॥ १५ ॥ पिनाकः । तडाकः ॥ १५ ॥

कषिदूषिभ्यामीकन् ॥ १६ ॥

कषीका । दूषीका ॥ १६ ॥

अनिहृषिभ्यां किच्च ॥ १७ ॥ अनीकम् । हृषीकम् ॥ १७ ॥

चङ्कणः कङ्कण च ॥ १८ ॥ कङ्कणीका ॥ १८ ॥

---

१५. पाति रक्षतीति **पिनाकः** त्रिशूलं धातुर्वा । ताडयत्याहन्तीति **तडाका** प्रभा वा ।

बहुलवचनात्—आगप्रत्यये सति **तडागः** इत्यपि सिद्धं भवति । भन्दतेऽसौ **भदाकः** कल्याणम् । श्यायति प्राप्नोतीति **श्यामाकः** व्रीहिभेदो वा । 'समा' इति प्रसिद्धः । मुगागमो निपातनम् । न भाति प्रकाशत इति **नभाकम्** मेघयुतमाकाशं वा । यं पिनष्टि सम्यक् चूर्णयति स **पिण्याकः** तिलकल्को वा । धातोः षकारस्य णत्वं युगागमश्च । वर्त्तते येन स **वार्त्ताकः; वार्त्ताकी** वा 'वनभण्टा' इति प्रसिद्धा । धातोर्वृद्धिः । गुवति पुरीषमुत्सृजतीति **गुवाकः** पूगीफलं वा । कुटादित्वाद् गुणाभावः ॥

१६. कषति हिनस्तीति **कषीका** पक्षिजातिर्वा । दूषयतीति **दूषीका** नेत्रमलं वा ॥

१७. अनिति जीवयतीति **अनीकम्** विरुद्धं सैन्यं वा । हृष्यति तुष्टो भवतीति येन तत् **हृषीकम्** ज्ञानेन्द्रियं वा ॥

१८. यङ्लुगन्तात् 'कण' धातोरीकन् कङ्कणादेशश्च । पुनः पुनः कणति शब्दयतीति **कङ्कणीका** वाद्यसाधनविशेषो वा 'घरियार' इति प्रसिद्धः । **किङ्किणीका** क्षुद्रघण्टिका । बहुलवचनात् सिद्धम् ॥

शृपॄवृजां द्वे रुक् चाभ्यासस्य ॥ १९ ॥

शर्शरीकः । पर्परीकः । वर्वरीकः ॥ १९ ॥

फर्फरीकादयश्च ॥ २० ॥

फर्फरीकम् । दर्दरीकम् । तिन्तिडीकः । चञ्चरीकः । मर्मरीकः । कर्करीकम् । पुण्डरीकः ॥ २० ॥

ईषेः किद्ध्रस्वश्च ॥ २१ ॥ इषीका ॥ २१ ॥

ऋजेश्च ॥ २२ ॥ ऋजीकः ॥ २२ ॥

सर्तेर्नुम् च ॥ २३ ॥ सृणीका ॥ २३ ॥

---

१९. शृणाति हिनस्तीति **शर्शरीकः** हिंसकः । पिपर्ति पालयतीति **पर्परीकः** सूर्य्यो वा । वृणोति स्वीकरोतीति **वर्वरीकः** कुटिलकेशो जनो वा ॥

२०. स्फुरति चेतनो भवतीति **फर्फरीकम्** पत्रादिसहितः शाखाग्रन्थिर्वा । ईकन्प्रत्यये धातोः फर्फरादेशः । दृणातीति **दर्दरीकम्** वादित्रं वा । करोति कार्याणि येन तत् **कर्करीकम्** शरीरं वा । 'कर्करीका' गलन्तिका 'कलशी' इति प्रसिद्धा । अत्रोभयत्र धातोर्द्वित्वमभ्यासस्य रुक् च । तिम्यत्यार्द्रीकरोतीति **तिन्तिडीकः** वृक्षजातिर्वा । मकारस्य डकारोऽभ्यासस्य नुट् च । चरति गच्छति भक्षयति वा स **चञ्चरीकः** भ्रमरो वा । अभ्यासस्य नुम् । म्रियतेऽसौ **मर्मरीकः** हीनजनो वा । पुणति शुभकर्माचरतीति **पुण्डरीकम्** श्वेताम्भोजं सितपत्रं भेषजं व्याघ्रोऽग्निर्वा ॥

२१. कित्वाद् गुणाभावः । ईषते गच्छतीति **इषीका** मुञ्जादिशलाका वा ॥

२२. कित् । अर्जति गच्छतीति **ऋजीकः** उपहतो वा कित्वाद् गुणनिषेधः ॥

२३. सरति प्राप्नोतीति **सृणीका** लाला वा, ष्ठीवनभेदः 'लार' इति प्रसिद्धम् ॥

मृडः कीकच् कङ्कणौ ॥ २४ ॥ मृडीकः । मृडङ्कणः ॥ २४ ॥

अलीकादयश्च ॥ २५ ॥

अलीकम् । व्यलीकम् । वलीकम् ॥ २५ ॥

कॄतॄभ्यामीषन् ॥ २६ ॥ करीषः । तरीषः ॥ २६ ॥

शॄपॄभ्यां किच्च ॥ २७ ॥ शिरीषः । पुरीषम् ॥ २७ ॥

अर्जेर्ऋज च ॥ २८ ॥ ऋजीषम् ॥ २८ ॥

अम्बरीषः ॥ २९ ॥

---

२४. मृडति सुखयतीति **मृडीकः** सुखदाता । **मृडङ्कणः** बालो वा ॥ बहुलवचनात्—कायति शब्दयतीति **कङ्कणः** करभूषणं वा ॥

२५. कीकन्प्रत्ययान्ता अमी निपात्यन्ते । अलति वारयतीति **अलीकम्** मिथ्या वा । विपूर्वाद् **व्यलीकम्** अप्रियं खेदो वा । वलते संवृणोत्यनेन तत् **वलीकम्** गृहच्छादनसामग्री वा । अन्येऽपि, वलते संवृतो भवतीति **वल्मीकम्** छिद्रमृषिभेदो वा । तस्यापत्यं 'वाल्मीकिः' मुडागमः । वहतीति **वाहीकः** गौरश्वो वा धातोर्वृद्धिः । सुष्ठु प्रैतीति **सुप्रतीकः** अग्निर्वा । धातोस्तुट् च ॥

२६. कीर्यते विक्षिप्यते स **करीषः** शुष्कगोमयं वा । तरति येन स **तरीषः** नौका वा ॥

२७. शृणाति हिनस्तीति **शिरीषः** वृक्षभेदो वा । पिपर्ति तत् **पुरीषम्** शकृद्वा ॥

२८. अर्जति सञ्चितो भवति यस्मात्तत् **ऋजीषम्** पिष्टपचनं वा 'तवा' इति प्रसिद्धम् ॥

२९. अम्बते शब्दयतीति **अम्बरीषः** आकाशः स्वेदनी वा 'भाड़' इति प्रसिद्धम् ॥

कॄशॄपॄकटिपटिशौटिभ्य ईरन् ॥ ३० ॥

करीरः । शरीरम् । परीरम् । कटीरः । पटीरः । शौटीरः ॥ ३० ॥

वशेः किच्च ॥ ३१ ॥ उशीरम् ॥ ३१ ॥

कशेर्मुट् च ॥ ३२ ॥ कश्मीरः ॥ ३२ ॥

कॄञ उच्च ॥ ३३ ॥ कुरीरम् ॥ ३३ ॥

घसेः किच्च ॥ ३४ ॥ क्षीरम् ॥ ३४ ॥

गभीरगम्भीरौ ॥ ३५ ॥

---

३०. किरतीति **करीरः**वृक्षभेदो वंशाङ्कुरो वा । शीर्य्यते हिंस्यत इति **शरीरम्** प्राणिकायो वा । पूर्यतेऽनेनेति **परीरम्** फलं वा । कट्यत आव्रियतेऽसौ **कटीरः** कुटी जघनदेशो वा । पटति गच्छतीति **पटीरः** कन्दुकः कामश्चन्दनवृक्षो वा । शौटति गर्वं करोतीति **शौटीरः** त्यागी वीरो वा । ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ्—'शौटीर्य्यम्' वैराग्यम् ।

बहुलवचनात्—हिण्डत इतस्ततो गच्छतीति **हिण्डीरः** समुद्रफेनो दाडिमो वा । **किर्मीरतूणीरजम्बीरकुम्भीरकुटीरा**दयोऽपीरन्प्रत्ययान्ता बाहुलकादेव बोद्धव्याः ॥

३१. उश्यते काम्यते तद् **उशीरम्** वीरणमूलं वा । 'खसखस' इति सिद्धम् ॥

३२. ईरनित्येव । कष्टे गच्छति शास्ति वाऽसौ **कश्मीरः** देशभेदो वा ॥

३३. क्रियते तत् **कुरीरम्** मथुनं वा । कपिलकादित्वाल्लत्वे **कुलीरः** जलजन्तुभेदो वा ॥

३४. अद्यते भक्ष्यते यत्तत् **क्षीरं** दुग्धं वा ॥

३५. 'गम' धातोर्मकारस्यभकार एकस्मिन् पक्षे नुमागमश्च । गम्यते प्राप्यते

विषाविहा ॥ ३६ ॥

पच एलिमच् ॥ ३७ ॥ पचेलिमः ॥ ६७ ॥

शीङो धुक्लक्वलञ्वालनः ॥ ३८ ॥

शीधु । शलम् । शैवलः । शेवालम्; शेपालः ॥ ३८ ॥

मृकणिभ्यामूकोकणौ ॥ ३९ ॥ मरूकः । काणूकः ॥ ३९ ॥

वलेरूकः ॥ ४० ॥ वलूकः ॥ ४० ॥

उलूकादयश्च ॥ ४१ ॥

उलूकः । वावदूकः । भल्लूकः । शम्बूकः ॥ ४१ ॥

ज्ञायते वा स गभीरः; [**गम्भीरः**] शान्तो महाशयो वा । विशेष्यलिङ्गावेतौ शब्दौ ॥

३६. विशेषेण स्यति कर्मान्तं करोतीति **विषा** बुद्धिर्वा । विशेषेण जहाति त्यजति दुःखमिति **विहा** सुखलोको वा । स्वभावादनयोरव्ययत्वम् ॥

३७. पचति पदार्थानिति **पचेलिमः** अग्निः सूर्यो वा । यस्तु 'पच' धातोः सामान्यवार्त्तिकेन कृत्यार्थे केलिमज् विधीयते स भावे कर्मणि कर्मकर्त्तरि वेति भेदः ॥

३८. शेते येन तत् **शीधु** मद्यं वा । **शीलं** स्वभावः । **शैवलम्; शेवालम्**—बाहुलकात् प्रत्ययवकारस्य पकारः—**शेपालम्** जलनील्या नामान्येतानि । उदके लतारूपमुत्पन्नं 'सेवार' इति प्रसिद्धम् ॥

३९. म्रियते असौ **मरूकः** मृगो वा । कणति शब्दयतीति **काणूकः** काको वा ॥

४०. वलते संवृणोतीति **वलूकः** पक्षी कमलमूलं वा ॥

४१. ऊकप्रत्ययान्ता निपात्यन्ते । वलतेऽसौ **उलूकः** पक्षिभेदो वा । धातोः सम्प्रसारणम् । भृशं वक्तीति **वावदूकः** वक्ता । यङ्लुगन्तादूकः । [शमयतीति

शलिमण्डिभ्यामूकण् ॥ ४२ ॥ शालूकम् । मण्डूकः ॥ ४२ ॥

नियो मिः ॥ ४३ ॥ नेमिः ॥ ४३ ॥

अर्त्तेरुच्च ॥ ४४ ॥ ऊर्मिः ॥ ४४ ॥

भुवः कित् ॥ ४५ ॥ भूमिः ॥ ४६ ॥

अश्नोतेरशच् ॥ ४६ ॥ रश्मिः ॥ ४६ ॥

दल्मिः ॥ ४७ ॥

शम्बूकः] जलशुक्तिर्वा । धातोर्बुक् । बाहुलकादुकप्रत्यये **शम्बुकः** इत्यपि सिद्धम् । भल्लते परितो भाषतेऽसौ भल्लूकः ऋक्षो वा । बाहुलकाद् ह्रस्वे **भल्लुकः** इत्यपि । तथा भलतेऽसौ **भालूकः** स एव । महतीति **मधूकः** वृक्षभेदो वा । तथा **एलूकजम्बूकबन्धूकवास्तूकादयो**ऽप्यत्रैव द्रष्टव्याः ॥

४२. शल्यते प्राप्यते यत्तत् **शालूकम्** मूलद्रव्यं वा । मण्डति शोभतेऽसौ **मण्डूकः** भेको जलजन्तुर्वा ॥

४३. नयतीति **नेमिः** चक्रावयवो वा ।

बाहुलकात्—याति कार्याणि प्रापयतीति **यामिः** । आदेर्जत्वं **जामिः** स्वसा कुलस्त्री वा ॥

४४. ऋच्छति गच्छतीति **ऊर्मिः** जलतरङ्गो वा ॥

४५. भवन्ति पदार्था अस्यामिति **भूमिः** उत्पत्तिस्थानम् । अल्पा भूमिः भूमिका' । कृदिकारादिति ङीष् 'भूमी' ॥

४६. अश्नुते व्याप्नोतीति **रश्मिः** किरणो रज्जुर्वा ॥

४७. दलति येन विदृणातीति **दल्मिः** सूर्यकिरण उत्तमायुधं वा ॥

वीज्याज्वरिभ्यो निः ॥ ४८ ॥

वेणिः । ज्यानिः । जूर्णिः ॥ ४८ ॥

सृवृषिभ्यां कित् ॥ ४९ ॥ सृणिः । वृष्णिः ॥ ४९ ॥

अङ्गेर्नलोपश्च ॥ ५० ॥ अग्निः ॥ ५० ॥

वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित् ॥ ५१ ॥

वह्निः । श्रेणिः । श्रोणिः । योनिः । द्रोणिः । ग्लानिः । हानिः । तूर्णिः ॥ ५१ ॥

---

४८. वीयते क्षिप्यते स **वेणिः** केशविन्यासो वा । निपातनाण्णत्वम् । जिनाति वयोहीनो भवतीति **ज्यानिः** क्षतिर्वा । ज्वरति रोगी भवतीति **जूर्णिः** स्त्रीरोगो वा ।

बाहुलकात्—क्षौति शब्दयतीति **क्षोणिः** । ङीष्—'क्षोणी' भूमिर्वा । क्रीणातीति **क्रेणिः; क्रेणी** ॥

४९. सरति गच्छतीति **सृणिः** अङ्कुशं वा । वर्षतीति **वृष्णिः** क्षत्रियो वैश्यो वा ॥

५०. अङ्गति गच्छति प्राप्नोति जानाति वा स **अग्निः** वह्निः प्रसिद्धो वा ॥

५१. वहतीति **वह्निः** अग्निर्वा । श्रयति सेवतेऽसौ **श्रेणिः** पङ्क्तिर्वा । निपूर्वात् **निश्रेणी** अधिरोहणी वा । शृणोतीति **श्रोणिः** कटिप्रदेशो वा । यौति संयोजयति पृथक् करोति वा स **योनिः** कारणमुपस्थेन्द्रियं वा । द्रवन्ति गच्छन्ति यत्र स **द्रोणिः** सेचनी देशविशेषो वा । ग्लायति यस्मिन् स **ग्लानिः** दौर्बल्यं दौर्मनस्यं वा । हीयते जहाति वा स **हानिः** अपचयो वा । **प्रहाणिः परिहाणिः । कृत्यचः** [८ । ४ । २९] इति णत्वम् । त्वरति सम्यग्भ्रमतीति **तूर्णिः** मनो वा ॥

घृणिपृश्निपार्ष्णिचूर्णिभूर्णयः ।। ५२ ।।

वृदृभ्यां विन् ।। ५३ ।। वर्विः । दर्विः ।। ५३ ।।

जृशॄस्तृजागृभ्यः क्विन् ।। ५४ ।।

जीर्विः । शीर्विः । स्तीर्विः । जागृविः ।। ५४ ।।

दिवो द्वे दीर्घश्चाभ्यासस्य ।। ५५ ।। दीदिविः ।। ५५ ।।

कृविघृष्विछविस्थविकिकीदिवि ।। ५६ ।।

बहुलवचनात्—शेतेऽसौ **शिनिः** क्षत्रियो वा । धातोर्ह्रस्वत्वं च । म्लायतीति **म्लानिः** आनन्दक्षयो वा ।।

५२. जिघर्ति क्षरति दीप्यते वा स **घृणिः** किरणो वा । स्पृशति संयुक्तो भवतीति **पृश्निः** अल्पशरीरो वा । धातोः सलोपः । पर्षति सिञ्चतीति **पार्ष्णिः** पादतलं वा । धातोर्वृद्धिः । चरति गच्छति भक्षयति चूर्णयति प्रेरयतीति वा **चूर्णिः** विवरणं वा । बिभर्ति धरति सर्वमिति **भूर्णिः** पृथिवी वा ।

बाहुलकात्—घुरति शब्दयतीति **घूर्णिः** ।।

५३. वृणोतीति **वर्विः** भक्षको वा । दृणाति यया सा **दर्विः** सूपचालनपात्रं वा । ङीष्—'दर्वी' ।।

५४. जीर्य्यतीति **जीर्विः** पशुर्वा । शृणातीति **शीर्विः** । स्तृणोत्याच्छादयतीति **स्तीर्विः** अध्वर्युर्वा । जागर्तीति **जागृविः** नृपतिर्वा ।।

५५. दीव्यतीति **दीदिविः** सुखमन्नं वा । क्विन् प्रत्ययस्य बाहुलकादेवेत्सञ्ज्ञालोपौ न भवतः ।।

५६. करोति येन स **कृविः** तन्तुवायद्रव्यं वा । घर्षति सिञ्चतीति **घृष्विः** वराहो वा । छ्यति सूक्ष्मं करोतीति **छविः** दीप्तिर्वा । धातोर्ह्रस्वत्वं च । तिष्ठतीति **स्थविः** तन्तुवायो वा । अत्रापि ह्रस्वः । किकिना शब्देन दीव्यतीति **किकिदीविः**

पातेर्डतिः ॥ ५७ ॥ पतिः ॥ ५७ ॥

शकेर्ऋतिन् ॥ ५८ ॥ शकृत् ॥ ५८ ॥

अमेरतिः ॥ ५९ ॥ अमतिः ॥ ५९ ॥

वहिवस्यर्तिभ्यश्चित् ॥ ६० ॥
वहतिः । वसतिः । अरतिः ॥ ६० ॥

अञ्चेः को वा ॥ ६१ ॥ अङ्कतिः । अञ्चतिः ॥ ६१ ॥

चाषो वा 'नीलकण्ठ' इति प्रसिद्धः । **किकीदिविः । किकिदिविः । किकिदीवः । किकिदिवः । किकीदीविः** इति पञ्चभेदा बहुलवचनादेव मन्तव्याः ॥

५७. पाति रक्षतीति **पतिः स्वामी वा** ॥

५८. शक्नोतीति **शकृत्** [मलो वा] ।

बाहुलकात्—यजतीति **यकृत्** कालखण्डं वा । धातोर्जकारस्य ककारः ॥
५९. अमति गच्छतीति **अमतिः** कालो वा ॥

बाहुलकात्—व्रतमाचरतीति **व्रततिः** विस्तरो 'व्रतती' लता वा । मालयति गन्धं धारयतीति **मालती; मालतिः** सुमना वा 'चमेली' इति प्रसिद्धा । स्थापयति धर्म्ममिति **स्थपतिः** वाग्मी यज्ञकर्ता वा । ण्यन्तस्य 'स्था'धातोः पुकि सति ह्रस्वत्वम् ॥

६०. वहति प्रापयति पदार्थान् प्राप्नोति वेति **वहतिः** पवनो वा । वसन्ति यत्रेति **वसतिः वसती** वा गृहं रात्रिर्वा । ऋच्छति गच्छतीति **अरतिः** क्रोधो वा ॥

बाहुलकात्—अलति भूषयति समर्थो वा भवति स **अलतिः** गीतमात्रिका वा ॥

६१. अञ्चति गच्छति पूजयति वा स **अङ्कतिः; अञ्चतिः** वायुर्वा ॥

हन्तेरंह च ॥ ६२ ॥ अंहतिः ॥ ६२ ॥

रमेर्नित् ॥ ६३ ॥ रमतिः ॥ ६३ ॥

सूङः क्रिः ॥ ६४ ॥ सूरिः ॥ ६४ ॥

अदिशदिभूशुभिभ्यः क्रिन् ॥ ६५ ॥
अद्रिः । शद्रिः । भूरिः । शुभ्रिः ॥ ६५ ॥

वङ्क्रयादयश्च ॥ ६६ ॥
वङ्क्रिः । वप्रिः । अंह्रिः । तन्द्रिः । भेरिः ॥ ६६ ॥

राशदिभ्यां त्रिप् ॥ ६७ ॥ रात्रिः । शत्रिः ॥ ६७ ॥

---

६२. अतिः । हन्त्यननेति **अंहतिः** दानं वा ॥

६३. रमन्तेऽस्मिन् स **रमतिः** कालः कामो वा ॥

६४. सूते प्राणिनः प्रसवति समर्थयतीति **सूरिः** पण्डितो वा । स्त्रियां-'सूरी' ॥

६५. योऽत्ति अदन्ति यत्रेति वा स **अद्रिः** पर्वतो मेघो वृक्षः सूर्यो वा। शीयते शातयतीति **शद्रिः** शर्करा वा । भवतीति **भूरिः** बहुसुवर्णं वा । भूरि प्रयोजनमस्य स 'भौरिकः' कनकाध्यक्षो वा । शोभतेऽसौ **शुभ्रिः** चतुर्वेदवित् ब्रह्मा वा ॥

६६. वङ्क्तेऽसौ **वङ्क्रिः** वाद्यभेदो गृहदारु वा । वपन्ति यस्मिन् स **वप्रिः** क्षेत्रं वा । सम्प्रसारणाभावो बाहुलकात् । अंहयति भाषतेऽसौ **अंह्रिः** पादो वा । 'तन्दिः' सौत्रो धातुः । तन्दति क्लिश्नातीति **तन्द्रिः** मोहो वा । स्त्रियां-'तन्द्री' । विभेति येन स **भेरिः** वाद्यविशेषो वा । 'भेरी' वा ॥

६७. राति सुखं ददातीति **रात्रिः** प्रसिद्धा वा । शीयते छिनत्तीति **शत्रिः** हस्ती वा ॥

अदेस्त्रिनिश्च ॥ ६८ ॥ अत्री; अत्रिः ॥ ६८ ॥

पतेरत्रिन् ॥ ६९ ॥ पतत्रिः ॥ ६९ ॥

मृकणिभ्यामीचिः ॥ ७० ॥ मरीचिः । कणीचिः ॥ ७० ॥

श्वयतेश्चित् ॥ ७१ ॥ श्वयीचिः ॥ ७१ ॥

वेञो डिच्च ॥ ७२ ॥ वीचिः ॥ ७२ ॥

ऋहनिभ्यामूषन् ॥ ७३ ॥ अरूषः । हनूषः ॥ ७३ ॥

पुरः कुषन् ॥ ७४ ॥ पुरुषः; पूरुषः ॥ ७४ ॥

पृनहिकलिभ्य उषच् ॥ ७५ ॥
परुषः । नहुषः । कलुषम् ॥ ७५ ॥

---

६८. चात् त्रिप् । अत्ति भक्षयतीति **अत्रीः अत्रिणौ** पापं वा । अत्रिः [ऋषि]भेदो वा, तस्यापत्यम् 'आत्रेयः' ॥

६९. पततीति **पतत्रिः** पक्षी वा । **पतत्रयः** । पक्षवाचकात्पतत्रशब्दान्मत्वर्थ[इ]निः । पतत्री । पतत्रिणौ ॥

७०. म्रियतेऽसौ **मरीचिः** दीप्तिर्महर्षिर्वा । कणति शब्दयतीति **कणीचिः** [पुष्प]ादियुक्ता शाखा शब्दो वा ॥

७१. श्वयति गच्छति वर्धते वा स **श्वयीचिः** व्याधिर्वा ॥

७२. वयति तन्तून् सन्तनोतीति **वीचिः** तरङ्गो वा । डित्त्वाट्टिलोपः ॥

७३. ऋच्छति गच्छतीति **अरूष** सूर्यो वा । हन्तीति **हनूषः** दस्युः ॥

७४. पुरत्यग्रं गच्छतीति **पुरुषः** पुमान् । **अन्येषामपि दृश्यते** [६ । ३ । १३७] इति दीर्घे **पूरुषः** वा ॥

७५. पिपर्तीति **परुषम्** निष्ठुरं वचो वा । नह्यति बध्नातीति **नहुषः** [रा]जर्षिः सर्पविशेषो वा । कलते शब्दयतीति **कलुषम्** पापम् ॥

पीयेरूषन् ।। ७६ ।। पीयूषम्; पेयूषम् ।। ७६ ।।

मस्जेनुम् च ।। ७७ ।। मञ्जूषा ।। ७७ ।।

गण्डेश्च ।। ७८ ।। गण्डूषः; [गण्डूषा] ।। ७८ ।।

अर्त्तेररु ।। ७९ ।। अररुः ।। ७९ ।।

कुटः किश्च ।। ८० ।। कुटरुः ।। ८० ।।

शकादिभ्योऽटन् ।। ८१ ।।

शकटः । कङ्कटः । देवटः । करटः ।। ८१ ।।

---

७६. पीयति पीयते वा तत् **पीयूषम्; पेयूषम्** नूतनं पयोऽमृतं वा सद्यः प्रसूतायाः क्षीरम् ।

बहुलवचनात्—अङ्कवते लक्षयतीति **अङ्कूषः** नकुलो वा ।।

७७. धातोर्नुम् । स चाचोऽन्त्यात्परः । जश्त्वश्चुत्वे । मज्जति भवतीति **मञ्जूषा** काष्ठमयं द्रव्यं वा ।।

७८. गण्डति वदनावयवं दिशतीति **गण्डूषः** जलादिना पूर्णं मुखं इति प्रसिद्धम् ।।

७९. ऋच्छति प्राप्नोति येन तत् **अररुः** आयुधं वा ।।

८०. कुटतीतिः **कुटरुः** वस्त्रगृहं वा ।।

८१. शक्नोतीति **शकटः** शकटं यानविशेष ऋषिर्वा, यस्यापत्यं 'शाकटायनः' । वृणोतीति **वरटः** कीटभेदो वरटा हंसयोषिद्वा । कङ्कते गच्छतीति कवचो वा । सरति प्रसरतीति **सरटः** कृकलासो वा 'गिरगिट' इति प्र॰ देवते व्यवहरतीति **देवटः** शिल्पी वा । कम्पते येन स **कपटः** माया॰ धातोर्नलोपः । 'कर्कमर्ककर्पाः' सौत्रा धातवः । कर्कतीति **कर्कटः** जलज॰ वा । मर्कतीति **मर्कटः** वानरो वा । स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष्—'म॰

कदिकडिकटिभ्योऽम्बच् ॥ ८२ ॥
रम्बम् । कदम्बः । कडम्बः । कटम्बः ॥ ८२ ॥

र्णित् पक्षिणि ॥ ८३ ॥ कादम्बः ॥ ८३ ॥

लिकर्द्योरमः ॥ ८४ ॥ कलमः । कर्दमः ॥ ८४ ॥

णिपुल्योः किन्दच् ॥ ८५ ॥ कुणिन्दः । पुलिन्दः ॥ ८५ ॥

र्वा वश्च ॥ ८६ ॥ कुविन्दः; कुपिन्दः ॥ ८६ ॥

षञ्जेर्घथिन् ॥ ८७ ॥ निषङ्गथिः ॥ ८७ ॥

ीति कर्पटः छिन्नं पुराणं वस्त्रं वा । पर्पति गच्छतीति पर्पटः ऊषरभूमिर्वा । ति हसतीति कक्खटम् कठिनं वा । कुगागमः । चपति सान्त्वयतीति येन स ः; चर्पटो वा प्रसृताङ्गुलिर्हस्तो वा । एकत्र प्रत्ययादेरेत्वमपरत्र गमश्च । मयते प्राप्नोति यं स मयटः प्रासादो वा । किरति विक्षिपतीति ः काको वा एवमन्येऽपि शब्दा अटन्प्रत्ययान्ता यथाप्रयोगं साध्याः ॥

८२. करोतीति करम्बम् व्यामिश्रम् । कदतीति कदम्बः वृक्षभेदो वा । आवृणोतीति कडम्बः अग्रभागो वा । कटतीति कटम्बः वादित्रं वा ॥

८३. कदति विकलो भवतीति कादम्बः पक्षिभेदो वा 'बक' इति प्रसिद्धः ॥

८४. कलते सङ्ख्यातीति कलमः शलिभेदो वा । कर्दति कुत्सितं शब्दयतीति ः पापं वा ॥

८५. कुण्यते शब्द्यतेऽसौ कुणिन्दः शब्दो वा । पोलति महान् भवतीति दः शवरश्चाण्डालभेदो वा ।

बाहुलकात्—अलति भूषयतीति अलिन्दः गृहैकदेशो वा । प्रज्ञादित्वादणि न्दः' इत्यपि सिद्धम् ॥

८६. कुप्यति क्रुद्धो भवति स कुविन्दः; कुपिन्दः तन्तुवायो वा ॥

उद्यर्त्तेश्चित् ॥ ८८ ॥ उदरथिः ॥ ८८ ॥

सर्त्तेर्णिच्च ॥ ८९ ॥ सारथिः ॥ ८९ ॥

खर्जिपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ ॥ ९० ॥ खर्जूरः । कर्पूरः । धुस्तूरः । वल्लूरम् । पिञ्जूलम् । लाङ्गूलम् ॥ ९० ॥

---

८७. नितरां सजति सङ्गं करोतीति **निषङ्गथिः** आलिङ्गको वा । घित्वात् कुत्वम् ॥

८८. उदच्छन्त्यूर्ध्वं गच्छन्त्यापोऽस्मिन् स **उदरथिः** समुद्रो वा ॥

८९. सारयतीति नियमेन चालयतीति **सारथिः** नियन्ता वा अत्र णेर्लोपे णित्वाद्वृद्धिः ॥

९०. खर्ज्यादिभ्य ऊरः—खर्जति मार्जयतीति **खर्जूरः** वृक्षभेदो रजतं वा। स्त्रियां गौरादित्वात् ङीष्—'खर्जूरी' । कल्पते समर्थो भवतीति **कर्पूरः** सुगन्धिद्रव्यं वा । बाहुलकादत्रलत्वाभावः । धुनोति कम्पयतीति **धुस्तूरः** कनकाह्वयः 'धतूरा' इति प्रसिद्धः । वल्लते संवृणोतीति **वल्लूरम्** शुष्कमांसं वा। शालयति गमयतीति **शालूरः** मण्डूको वा । मल्लते धरतीति **मल्लूरः** । क[illegible] गच्छति प्राप्नोति शास्ति वा स **कस्तूरः** । स्त्रियां—'कस्तूरी' प्रसिद्धः सुगन्धिभेदः ।

पिञ्जादिभ्य ऊलः—पिङ्क्ते वर्णयतीति **पिञ्जूलम्** कुशवर्तिर्वा । कञ्चते दीप्यतेऽसौ **कञ्चूलः** स्त्रीगात्राभरणं वा । लङ्गति गच्छतीति **लाङ्गूलम्** पु[illegible] वा । धातोर्वृद्धिः । ताम्यति काङ्क्षति यत्तत् **ताम्बूलम्** इति प्रसिद्धम्। धातोर्बुक् दीर्घत्वं च । शृणाति हिनस्तीति **शार्दूलः** व्याघ्रो वा । धातोर्दुक् वृद्धिश्च । दुनोत्युपतापयतीति **दुकूलम्** स्त्रिया अधोवस्त्रम् । धातोः कुक् । कुस्यति श्लिष्यतीति **कुसूलः** धान्यपात्रं वा ॥

कुवश्चट् दीर्घश्च ॥ ९१ ॥ कूची ॥ ९१ ॥

समीणः ॥ ९२ ॥ समीचः; समीची ॥ ९२ ॥

सिवेष्टेरू च ॥ ९३ ॥ सूचः । सूची ॥ ९३ ॥

शमेर्वन् ॥ ९४ ॥ शवः ॥ ९४ ॥

उल्वादयश्च ॥ ९५ ॥ उल्वम् । शुल्वम् ॥ ९५ ॥

स्थः स्तोऽम्बजवकौ ॥ ९६ ॥ स्तम्बः । स्तवकः ॥ ९६ ॥

---

९१. कौति शब्दयतीति **कूचः** स्तनं हस्ती वा । स्त्रियां—'**कूची**' चित्र-लेखनी ॥

९२. सम्यगेति गच्छतीति **समीचः** समुद्रो वा । **समीची** हरिणी ॥

९३. इव्‌भागस्य टेरू आदेशः । सीव्यति येन स **सूचः** दर्भाङ्कुरो वा । **सूची** इति प्रसिद्धा ॥

९४. शाम्यतीति **शंवः** मुसलस्य लोहमुखं वा । 'शामी' इति प्रसिद्धः ॥

९५. वन्प्रत्ययान्ता निपाताः । उच्यति समवैतीति **उल्वः** गर्भो वा । चकारस्य लत्वं गुणाभावश्च । शोचतीति **शुल्वम्** ताम्रं वा । पूर्ववत् सर्वम् । नयति प्रापयतीति शुभगुणानिति **निंवः** वृक्षभेदो वा । वीयते काम्यते तत् **विंवम्** मण्डलमोषधिविशेषो वा । अत्रोभयत्र 'नी वी' धातोर्नुमागमो ह्रस्वत्वं च । स्त्रियां गौरादित्वात्—'विंवी' । विंवफलमिवोष्ठौ यस्याः सा 'विंवोष्ठी' कन्या । दधाति धान्यहेतुर्भवतीति **धन्वम्** धनुर्वा । तद्योगाद् 'धन्वी' जनः । जमति भक्षयतीति **जंवः** पङ्को वा ॥

९६. अम्बच् अवक इत्येतौ प्रत्ययौ । तिष्ठतीति **स्तम्बः** शाखाशून्यो व्रीह्यादेर्गुच्छो वा । **स्तवकः** पुष्पगुच्छो वा ॥

शाशपिभ्यां ददनौ ॥ ९७ ॥ शादः । शब्दः ॥ ९७ ॥

अब्दादयश्च ॥ ९८ ॥ अब्दः । कुन्दः ॥ ९८ ॥

वलिमलितनिभ्यः कयन् ॥ ९९ ॥
वलयम् । मलयः । तनयम् ॥ ९९ ॥

वृह्रोः षुग्दुकौ च ॥ १०० ॥ वृषयः । हृदयम् ॥ १०० ॥

मीपीभ्यां रुः ॥ १०१ ॥ मेरुः । पेरुः ॥ १०१ ॥

---

९७. श्यति सूक्ष्मं करोतीति **शादः** कर्दमो बालतृणं वा । शप्यत आहूयतेऽनेन स शब्दो नादः । पस्य बः

९८. ददन्प्रत्ययान्ता निपाताः । अवति रक्षणादिकं करोतीति **अब्दः** संवत्सरोऽवसरो मेघो वा । कौति शब्दयतीति **कुन्दः** पुष्पजातिर्वा । धातोर्नुम् । वृणोतीति **वृन्दम्** समूहो वा । नुम् गुणाभावश्च । कनति दीप्यतेऽसौ **कन्दः** सस्यमूलं सूकरो वा । तुदति व्यथतीति **तुन्दः** स्थूलमुदरं वा । 'तुन्दी' स्थूलोदरी । धातोर्नुम् ॥

९९. वलते संवृणोतीति **वलयः** करभूषणं वा । मलते धरतीति **मलयः** पर्वतो वा । तनोति सुखमिति **तनयः** पुत्रो वा ।

बाहुलकात्—आमयति पीडयतीति **आमयः** रोगो वा ॥

१००. वृणोतीति **वृषयः** आश्रयो वा । षुक् । हरति विषयानिति **हृदयम्** मनो वा । दुक् ॥

१०१. मिनोति प्रक्षिपतीति **मेरु** सुमेरुः पर्वतो वा । पीयते पिबतीति वा **पेरुः** आदित्यो वा ।

बाहुलकात् पिबतीति **पारुः** । स एव ॥

जत्र्वादयश्च ॥ १०२ ॥

[जत्रु; जत्रुणी । अश्रु; अश्रुणी] ॥ १०२ ॥

रुशातिभ्यां क्रुन् ॥ १०३ ॥ रुरुः । शत्रुः । १०३ ॥

जनिदाच्युसृवृमदिपमिनमिभृञ्भ्य इत्वनत्वनत्नणिकिनन्शक्स्य-ढड्टोटचः ॥ १०४ ॥

जनित्वः । दात्वः । च्यौत्नः । सृणिः । वृशः । मत्स्यः । पण्ढः । नटः । भरटः ॥ १०४ ॥

अन्येऽपि दृश्यन्ते ॥ १०५ ॥ पेत्वम् ॥ १०५ ॥

---

१०२. जायते तत् **जत्रु** स्कन्धसन्धिर्वा । नस्य तः । जत्रुणी । जत्रूणी । शेतेऽसौ **शिग्रुः** शोभाञ्जनस्तरुः 'सहिंजना' इति प्रसिद्धः शाकं वा मनुष्यविशेषो वा । तत्र शिग्रोरपत्यं 'शैग्रवः' । विशेषेण तनोतीति **वितद्रुः** नदी वा । नकारस्य दः । कवतेऽसौ **कद्रुः** वर्णभेदो वा । वस्य दः । अस्यति प्रक्षिपति जलमिति **अस्रुः** । बहुलवचनात् शकारभेदे—**अश्रुः** नेत्रजलं वा ॥

१०३. रौति शब्दं करोतीति **रुरुः** मृगभेदो वा । शीयते शातयतीति **शत्रुः** प्रज्ञादित्वादण्—'शात्रवः' वैरी ॥

१०४. जायते जनयति वा स **जनित्वः** मातापितरौ वा । यो ददाति यत्र वा स **दात्वः** यज्ञकर्म वा । च्यवते गच्छतीति **च्यौत्नम्** बलं वा । सरतीति **सृणिः** चन्द्रोऽङ्कुशो वा । वृणोतीति **वृशः** ओषधिर्वा । माद्यतीति **मत्स्यः** मीनो वा । स्त्रियां—'मत्सी; मत्स्या' । समतीति **षण्ढः** अकृतदारो वा । नमतीति **नटः** वंशावरोहीति प्रसिद्धः । डित्वाट्टिलोपः । बिभर्त्तीति **भरटः** कुलालो वा ॥

१०५. इत्वनादय इति शेषः । पीयते यत् **पेत्वम्** अमृतं वा । कच्यते वध्यतेऽसौ **कच्छः** शाकमूलं वा । सरतीति **सरटः** वायुर्वा । ध्यायते तद् **ध्यात्वम्**

कुसेरुम्भोमेदेताः ॥ १०६ ॥

कुसुम्भम् । कुसुमम् । कुसीदम् । कुसितः ॥ १०६ ॥

सानसिवर्णसिपर्णसितण्डुलाङ्कुशचषालेल्वलपल्वलधिष्ण्यशल्याः ॥ १०७ ॥

मूशक्यम्बिभ्यः क्लः ॥ १०८ ॥

मूलम् । शक्लः । अम्बलः । अम्लः ॥ १०८ ॥

चिन्ता वा । जुहोतीति **हौत्नः** यजमानो वा । लूयतेऽसौ **लूनिः** व्रीहिर्वा। इत्यादि ॥

१०६. कुस्यति श्लिष्यतीति **कुसुम्भम्** महारजनं वा । **कुसुमम्** पुष्पं वा। **कुसीदम्** वृद्धिजीविका वा । **कुसितः** देशो वा ॥

१०७. सनोति ददाति सन्यते वा स **सानसिः** हिरण्यं वा । असिप्रत्यय उपधावृद्धिश्च । वृणोतीति **वर्णसिः** जलं वा । धातोर्नुक् । पिपर्तीति **पर्णसिः** जलगृहं वा । पूर्ववत्सर्वम् । तण्डति ताडयति ताड्यते वा स **तण्डुलः** तुषरहितो व्रीहिर्वा । उलच् । अङ्क्ते लक्षयति येन स **अङ्कुशः** शस्त्रभेदो वा । उशच्। चषति भक्षयतीति **चषालः** यूपकङ्कणं वा । इलति स्वपितीति **इल्वलः** नक्षत्रविशेषो वा । पलति गच्छतीति **पल्वलम्** अल्पसरो वा । अत्रोभयत्र वलच् गुणाभावश्च् । धृष्णोति प्रगल्भो भवतीति **धिष्ण्यः** स्थानमृक्षोऽग्निरालयो वा। ऋकारस्येकारो वा ण्यप्रत्ययश्च । शलति गच्छतीति **शल्यम्** शस्त्रविशेषो बाणाग्रभागो वा ॥

१०८. मवते बध्नातीति **मूलम्** इति प्रसिद्धम् । शक्नोतीति **शक्लः** प्रियंवदो वा । अम्बते शब्दं करोतीति **अम्बलः** ।

बाहुलकात्—अमति गच्छतीति **अम्लः** रसविशेषो वा ॥

माछाशसिभ्यो यः ॥ १०९ ॥

माया । छाया । सस्यम् ॥ १०९ ॥

सुनोतेः ॥ ११० ॥ सव्यम् ॥ ११० ॥

जनेर्यक् ॥ १११ ॥ जन्यम्; जाया ॥ १११ ॥

अघ्न्यादयश्च ॥ ११२ ॥

अघ्न्या । [सन्ध्या] । कन्या । वन्ध्या ॥ ११२ ॥

---

१०९. मात्यन्तर्भवतीति **माया** छलं मिथ्याजालो वा । छ्यति प्रकाशमिति **छाया** प्रकाशावरणमुत्कोचकप्रतिविम्वो वा । शस्यते यत्तत् **सस्यम्** क्षेत्रपक्वमन्नं गुणो वा ।

बाहुलकात्—अनिति जीवयतीति **अन्यः** इतरो वा ॥

११०. सुनोत्यभिषवतीति **सव्यम्** वामभागो वा ॥

१११. या जायते यस्यां वा सा **जाया** पत्नी । **ये विभाषा [६ । ४ । ४३]** इति व्यवस्थितविभाषया पत्न्यां जाया नित्यमात्वमन्यत्र...**जन्यम्** निर्वादो युद्धं वा ॥

११२. यगन्ता निपाताः यो न हन्यते न हन्तीति वा स **अघ्न्यः** प्रजापालको वा । धातोरुपधालोपो हस्य घत्वं च । 'अघ्न्या' गौर्वा । सन्दधाति यस्यां वेलायां सा **सन्ध्या** सायङ्कालः प्रतिज्ञा वा । आतो लोपः । सम्यग् ध्यायन्ति परं ब्रह्म यस्यां सा सन्ध्या, इति तु स्त्रियां क्तिन्नित्यधिकारे **आतश्चोपसर्गे [३ । ३ । १०६]** इत्यङ् । कन्यते दीप्यते काम्यते गच्छति वा सा **कन्या** कुमारी वा । वध्यतेऽसौ **बन्ध्या** अप्रसूता वा ।

कौति शब्दयतीति **कुड्यम्** भित्तिर्वा । धातोर्डुक् । मन्यते येन तत् **मध्यम्** द्वयोरन्तरालं वा । नस्य धः । उह्यते यत्तद् **वह्यम्** मनुष्यविशेषो वा । अहति व्याप्नोतीति **अहल्या** रात्रिर्वा । अहर्लीयतेऽस्यामिति व्युत्पत्यन्तरम् । पूर्वत्र

स्नामदिपद्यर्तिपॄशकिभ्यो वनिप् ॥ ११३ ॥

स्नावा । मद्वा । पद्वा । अर्वा । पर्वा । शक्वा; । शक्वरी ॥ ११३ ॥

शीङ्क्रुशिरुहिजिक्षिसृधृभ्यः क्वनिप् ॥ ११४ ॥

शीवा । क्रुश्वा । रुह्वा । जित्वा । क्षित्वा । सृत्वा । धृत्वा ॥११४॥

ध्याप्योः सम्प्रसारणं च ॥ ११५ ॥ धीवा । पीवा ॥ ११५ ॥

अदेर्ध च ॥ ११६ ॥ अध्वा ॥ ११६ ॥

धातोरलुगागमः । ऋषति गच्छतीति **ऋष्यः** मृगभेदो वा । कष्टे गच्छति शालि वा स **कश्यः** मद्यं वा । इत्यादि ॥

११३. स्नाति शुच्यतीति **स्नावा** रसिको वा । स्नावानौ । स्नावानः माद्यतीति **मद्वा** कल्याणदातेश्वरो वा । पद्यन्ते यत्र स **पद्वा** पन्था वा ऋच्छतीति **अर्वा** अश्वो निन्द्यो वा । पिपर्तीति **पर्व** ग्रन्थिर्वा । शक्नोतीति **शक्वा** हस्ती वा । स्त्रियां ङीब्रेफौ—**शक्वरी** नदी छन्दोभेदो वा ॥

१२४. शेतेऽसौ **शीवा** अजगरो वा । क्रोशतीति **क्रुश्वा** शृगालो वा । रोहति वीजादुत्पद्यत इति **रुह्वा** वृक्षो वा । जयतीति **जित्वा** जयशीलः । क्षयति नाशयति क्षियति निवसति गच्छति वा स **क्षित्वा** वायुर्वा । सरतीति **सृत्वा** प्रजापतिर्वा । धारयतीति **धृत्वा** व्यापको जगदीश्वरो वा । स्त्रियां—**जित्वरी** इत्यादि बोध्यम् ॥

११५. ध्यायतीति **धीवा** कर्मकारो वा । स्त्रियां—**धीवरी** मत्स्याधार पात्रम् । प्यायते वर्द्धतेऽसौ **पीवा** स्थूलो वा । **पीवरी** तरुणी ॥

११६. अत्ति भक्षयतीति **अध्वा** मार्गो वा ॥

प्रईरशदोस्तुट् च ।। ११७ ।।
प्रेर्त्वा । प्रशत्त्वा । प्रेर्त्वरी । प्रशत्त्वरी ।। ११७ ।।

सर्वधातुभ्य इन् ।। ११८ ।। पचिः । तुण्डिः । वलिः । वटिः । मणिः । वल्हिः । यजिः । गण्डिः । तडिः । ध्राडिः । काशिः । वाशिः । घटिः; घटी । यतिः । केलिः । मसिः । कोटिः । जटिः । कटिः । हलिः । हेलिः । पणिः । कलिः [नन्दिः] ।। ११८ ।।

११७. प्रेर्तेऽसौ **प्रेर्त्वा** सागरो वा । **प्रेर्त्वरी** । प्रशीयतेऽसौ **प्रशत्वा** समुद्रो वा । **प्रशत्वरी** नदी ।।

११८. पचति येन स **पचिः** अग्निर्वा । तुण्डति छिनत्तीति **तुण्डिः** । वलते संवृणोतीति **वलिः** महाराजो वा । वाटयति ग्रथ्नाति स **वटिः** विभाजको वा । मणति शब्दयतीति **मणिः** बहुमूल्यः पाषाणो वा । प्रशंसितो मणिर्मणिकः । तदेव 'माणिक्यम्' । वल्हते प्रधानो भवतीति **वल्हिः** वल्हिका नाम क्षत्रिया जनपदो वा । यजतीति **यजिः** सङ्गन्ता होता वा । गण्डति स **गण्डिः** वदनैकदेशो वा । ताडयतीति **तडिः** पीडकः । ध्राडते विशेषेण हिनस्तीति **ध्राडिः** पुष्पचयो वा । काश्यते दीप्यतेऽसौ **काशिः** देशभेदो वा । तद्देशान्तर्गतत्वाद्वाराणसी नगरी **काशिः** काशी । तस्य देशस्य राजा 'काश्यः' । वाश्यते शब्दयतीति **वाशिः** काष्ठभेदिनी वा । घटतेऽसौ **घटिः; घटी** । यततेऽसौ **यतिः** नियमधारी संन्यासी वा । केलति चलति यस्या सा **केलिः** क्रीडा वा । मस्यति परिणमते स **मसिः** मसी पात्राञ्जनं वा । कुटतीति **कोटिः** सङ्ख्यावरणमग्रभागो वा । बाहुलकाद् गुणः । जटति सङ्घातं करोतीति **जटिः** जटाधारी वा । कटतीति **कटिः** कटी शरीरमध्यं वा । हलति येन विलिखतीति **हलिः** कृषीवलः कृषिसाधनं वा । हेलति विरुद्धं बहु भाषत इति **हेलिः** प्रहेलिः । यः पणायति व्यवहरति स **पणिः** विपणिः वणिजां वीथी वा । कलन्ते स्पर्द्धमाना भाषन्ते यत्र स **कलिः** कलहो विग्रहो वा । नन्दति यत्रेति **नन्दिः** वृद्धिर्वा । इत्यादीन्यनेकान्युदाहरणानि सन्ति ।।

हृपिषिरुहिवृतिविदिछिदिकीर्त्तिभ्यश्च ॥ ११९ ॥

हरिः । पेषिः । रोहिः । वर्त्तिः । वेदिः । छेदिः । कीर्त्तिः ॥ ११९ ॥

इगुपधात् कित् ॥ १२० ॥

कृषिः । ऋषिः । रुचिः । शुचिः । लिपिः ॥ १२० ॥

भ्रमेः सम्प्रसारणञ्च ॥ १२१ ॥ भृमिः; भ्रमिः ॥ १२१ ॥

क्रमितमिशतिस्तम्भामत इच्च ॥ १२२ ॥

क्रिमिः; कृमिः । तिमिः । शितिः । स्तिभिः ॥ १२२ ॥

---

११९. हरतीति **हरिः** सर्पो मण्डूकोऽश्वः सिंहः सूर्यो वा । **इगुपधात् कित्** इति वक्ष्यते तद्बाधनार्थं पिष्यादीनां ग्रहणम् तत्र हि कित्वाद् गुणनिषेधः प्राप्तः स न स्यात् । पिनष्टि येन स **पेषिः** वज्रो वा । रोहतीति **रोहिः** व्रतो वा । वर्त्तते सा **वर्त्तिः** दीपोपकरणं वा । विद्यते या सा **वेदिः** यज्ञभूमिर्वा । छिनत्तीति **छेदिः** वर्धकिश्छेत्ता वा । कीर्त्यते संशब्द्यते सा **कीर्त्तिः** पुण्यं यशो वा ॥

१२०. कृष्यते विलेख्यते या सा **कृषिः** 'खेती' इति प्रसिद्धा । ऋषति गच्छति प्राप्नोति जानाति वा स **ऋषिः** मन्त्रार्थद्रष्टा वा । रुच्यते सा **रुचिः** दीप्तिर्वा । शुच्यतीति **शुचिः** शुद्धिर्वा । लिम्पतीति **लिपिः** लेखो वा । बाहुलकात् वत्वे **लिविः** इत्यपि । लिविंकरोतीति 'लिविकरः' लिप्यर्थ एव । तूलते निष्कर्षतीति **तूलिः; तूली** कूर्चिका दध्यादिना सह पक्वः क्षीरविकारो वा ॥

१२१. भ्राम्यतीति **भृमिः** वायुर्वा । बाहुलकात् **भ्रमिः** इत्यपि सिद्धम् ॥

१२२. क्राम्यति पादान् विक्षिपतीति **क्रिमिः** क्षुद्रजन्तुर्वा । सम्प्रसारणानुवृत्तेः **कृमिः** इत्यपि । ताम्यत्याकाङ्क्षतीति **तिमिः** मत्स्यभेदो वा । शतिस्तम्भौ सौत्रौ धातू । **शितिः** कृष्णः शुक्लो वा । स्तभ्नातीति **स्तिभिः** समुद्रो वा ॥

मनेरुच्च ॥ १२३ ॥ मुनिः ॥ १२३ ॥

वर्णेर्बलिश्चाहिरण्ये ॥ १२४ ॥ बलिः ॥ १२४ ॥

वसिवपियजिराजिव्रजिसदिहनिवाशिवादिवारिभ्य इञ् ॥ १२५ ॥
वासिः । वापिः । याजिः । राजिः । व्राजिः । सादिः । निघातिः । वाशिः । वादिः । वारिः ॥ १२५ ॥

नहो भश्च ॥ १२६ ॥ नाभिः ॥ १२६ ॥

---

१२३. किदित्येव । मन्यते जानातीति **मुनिः** मननशीलः । मुनिरियं ब्राह्मणी । वह्वादित्वान् मुनी । मुनेर्भावः कर्म वा 'मौनम्' ॥

१२४. वर्णिः सौत्रो धातुः । वर्णयति स **बलिः** राजकरः सत्कारसामग्री शरीराङ्गं वा । हिरण्ये तु **वर्णिः** सुवर्णम् ॥

१२५. वस्त आच्छादयति वसति वा स **वासिः** छेदनवस्तु वा । वपन्ति यत्रेति **वापिः वापी** वा जलाशयभेदो वा । यजतीति **याजिः** यष्टा वा । राजते दीप्यतेऽसौ **राजिः राजी** पङ्क्तिर्वा । 'राजीवं' पद्मम् । व्रजतीति **व्राजिः** वायुसमूहो वा । सादतीति **सादिः** सारथिर्वा । हन्ति यया सा **घातिः** । 'निघाति' लौहघाता धारा । वाश्यते शब्दयतीति **वाशिः** अग्निर्वा । वादयति व्यक्तमुच्चारयति स **वादिः** विद्वान् वा । वारयति निवारयतीति **वारिः** गजबन्धनी शृङ्खला वा । जले नपुंसकम्—वारि ।

बाहुलकात्—हरतीति **हरिः** पथिकसंसृतिर्वा । 'संप्रहारिः' योद्धा । खटति काङ्क्षतीति **खाटिः** शुष्कव्रणस्थानं वा ॥

१२६. नह्यति दुष्टं नाडीर्वा बध्नातीति **नाभिः** क्षत्रियः प्राण्यङ्गं वा । नाभी—ङीष् ॥

कृषेर्वृद्धिश्छन्दसि ॥ १२७ ॥ कार्षिः ॥ १२७ ॥

श्रः शकुनौ ॥ १२८ ॥ शारिः । शारिका ॥ १२८ ॥

कृञ उदीचां कारुषु ॥ १२९ ॥ कारिः ॥ १२९ ॥

जनिघसिभ्यामिण् ॥ १३० ॥ जनिः । घासिः ॥ १३० ॥

अज्यतिभ्यां च ॥ १३१ ॥ आजिः । आतिः ॥ १३१ ॥

पादे च ॥ १३२ ॥ पदाजिः । पदातिः ॥ १३२ ॥

---

१२७. कर्षत्याकर्षतीति **कार्षिः** अग्निर्वा । लोके तु—'कृषिः' ॥

१२८. शृणाति हिनस्तीति **शारिः** पक्षी । स्त्री—**शारिका** । शुकशारिकमिति पक्ष एकवद्भावः । शारीन् हन्तीति **शारिका** वा । शकुनेरन्यत्र **शरिः** हिंस्रः । कपिलकादित्वाल्लत्वम्—**शलिः** अपिशलिर्मुनिविशेषस्तस्यापत्यमापिशलिः । बाह्वादित्वादिञ् ॥

१२९. करोतीति **कारिः** शिल्पी । शिल्पिनोऽन्यत्र—**करिः** ॥

१३०. जायतेऽसौ **जनिः** जननं वा । घसति भक्षयतीति **घासिः** अग्निर्वा । बाहुलकात्—शल्यते प्राप्यतेऽसौ **शालिः** व्रीहयो वा । पलति गच्छतीति **पालिः** । खड्गादेरग्रभागो वा । प्रत्ययान्तरकरणं स्वरार्थम् ॥

१३१. अजन्ति क्षिपन्ति शस्त्रादिकं यत्र स **आजिः** संग्रामो वा । अतति निरन्तरं गच्छतीति **आतिः** तित्तिरिभेदो वा । शोभना आती "स्वाती' नक्षत्रम् ॥

१३२. पद्भ्यामजत्यतति वा स **पदाजिः** । **पदातिः** पद्गः । **पादस्य पदाज्ज्याति०** [६ । ३ ५०] इति सूत्रेण पदादेशः ॥

अशिपणाय्योरुडायलुकौ च ॥ १३३ ॥

राशि: । पाणि: ॥ १३३ ॥

वातेर्डिच्च ॥ १३४ ॥ वि: ॥ १३४ ॥

प्रे हरतेः कूपे ॥ १३५ ॥ प्रहि: ॥ १३५ ॥

नौ व्यो यलोपः पूर्वस्य च दीर्घः ॥ १३६ ॥

नोवि: ॥ १३६ ॥

समाने ख्यः स चोदात्तः ॥ १३७ ॥ सखा ॥ १३७ ॥

आङि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्च ॥ १३८ ॥

अश्रि: । अहि: ॥ १३८ ॥

---

१३३. अशेरुट् पणायतेरायलुक् । अश्नुते व्याप्नोतीति **राशिः** समूहो वा । पणायति व्यवहरति येन स **पाणिः** हस्तो वा ॥

१३४. वाति वायुवद्गच्छतीति **विः** पक्षी वा । डित्वादाकार लोपः । अटन्ति वयोऽस्यामिति **अटविः** नगरी । पदस्य विः 'पदवी' ॥

१३५. इण्—डित् । प्रहरति जलमस्मात् स **प्रहिः** कूपो वा । कूपादन्यत्र—हरिः ॥

१३६. पूर्वस्योपसर्गस्य दीर्घः । निवीयते संव्रियते सा **नीविः; नीवी** मूलधनं दुकूलबन्धनं वा ॥

१३७. समानं ख्यातीति **सखा;** सखायौ; सखायः मित्रं सहायो वा ॥

१३८. आश्रयति तत्रेति **अश्रिः** कोणो वा । आहन्तीति **अहिः** मेघः सर्पो वा । अत्राङुपसर्गस्यैव ह्रस्वत्वम् ॥

अच इः ॥ १३९ ॥

रविः । कविः । पविः । अरिः । अलिः ॥ १३९ ॥

खनिकष्यज्यसिवसिवनिसनिध्वनिग्रन्थिचरिभ्यश्च ॥ १४० ॥

खनिः । कषिः । अजिः । असिः । वसिः । वनिः । सनिः । ध्वनिः । ग्रन्थिः । चरिः ॥ १४० ॥

वृतेश्छन्दसि ॥ १४१ ॥ वर्तिः ॥ १४१ ॥

भुजेः किच्च ॥ १४२ ॥ भुजिः ॥ १४२ ॥

१३९. अजन्ताद्धातोरिः प्रत्ययः । लुनाति छिनत्तीति **लविः** छेदको लोहो वा । पुनातीति **पविः** वज्रं हीरकं वा । तरति येन स **तरिः** वस्त्रादिस्थापन-भाण्डं वा । स्त्रियां—तरी । रौतीति **रविः** सूर्यो वा । कौति शब्दयत्युपदिशति स **कविः** मेधावी विद्वान् क्रान्तदर्शनो वा । स्त्रियां कवी । ऋच्छति प्राप्नोति परपदार्थानिति **अरिः** शत्रुर्वा । कपिलकादित्वाल्लत्वे—**अलिः** भ्रमरो वा । नखेनातिक्रामतीति नखयति तस्मात् **नखिः** । सूचयतीति **सूचिः**; इत्यादि ॥

१४०. खनति येन खन्यते यत्रेति वा स **खनिः** धनस्थानं वा । बाहुल-काद्दीर्घत्वे **खानिः** इत्यपि । कषति हिनस्तीति **कषिः** हिंसको वा । अनक्ति व्यनक्ति कार्यमिति **अजिः** प्रेषणकर्ता । ङीष्—'अञ्जी' मङ्गलार्थः । अस्यति क्षिपत्यनेनेति **असिः** खड्गो वा । वस्त आच्छादयत्यनेनेति **वसिः** वस्त्रं वा । वनति संभजतीति **वनिः** अग्निर्वा । धान्यवनिर्धान्यराशिः । वन्यते याच्यत इति वनिः, तं वनिं याचनमिच्छतीति वनीयति, तदन्ताण्ण्वुल्—'वनीयकः' प्रार्थकः । सनोति ददातीति सनिः अध्येषणं वा । ध्वन्यत उच्चार्यते स **ध्वनिः** शब्दो वा । यं ग्रथ्नाति समुदेति स **ग्रन्थिः** पर्व । चरतीति **चरिः** पशुर्वा ॥

१४१. वर्त्तते तत्र येन वा स **वर्त्तिः** योगक्रिया साधनद्रव्यं मार्गो वा ॥

१४२. भुनक्ति पालयति भक्षयति वा सः **भुजिः** अग्निर्वा ॥

कृगशॄपृकुटिभिदिछिदिभ्यश्च ॥ १४३ ॥

किरिः । गिरिः । शिरिः । पुरिः । कुटिः । भिदिः । छिदिः ॥१४३॥

कुण्ठिकम्प्योर्नलोपश्च ॥ १४४ ॥ कुठिः । कपिः ॥ १४४ ॥

सर्वधातुभ्यो मनिन् ॥ १४५ ॥

कर्म । चर्म । भस्म । जन्म । शर्म । हेम । श्लेष्मा । तर्म । स्थाम । दाम । छद्म । सुत्रामा ॥ १४५ ॥

---

१४३. किदिति वर्तते । किरतीति **किरिः** वराहो वा । गिरति गृणाति वा स **गिरिः** गोत्रमक्षिरोगः पर्वतो मेघो वा । शृणातीति **शिरिः** हन्ता । पिपर्त्तीति **पुरिः** नगरं नदी वा । कुटतीति **कुटिः** कुटी शाला वा । भिनत्ति येन स **भिदिः** वज्रं वा । छिनत्त्यनेन स **छिदिः** परशुर्वा ।

बहुलवचनात्—तरति प्लवतेऽसौ **तित्तिरिः** पक्षिभेदो वा । 'तॄ'धातोरिः प्रत्ययः स च कित् सन्वत्कार्यमभ्यासस्य तुगागमश्च ॥

१४४. कुण्ठति गतिं प्रतिहन्तीति **कुठिः** पर्वतो वृक्षो वा । कम्पतेऽसौ **कपिः** वानरो वर्णभेदो वा । कपिवर्णमस्यास्तीति 'कपिशः' कपिलवर्णः । लोमादि-पाठादत्र मत्वर्थीयः शप्रत्ययः ॥

१४५. क्रियते तत् **कर्म** क्रिया वा । अर्द्धर्चादित्वादुभयलिङ्गः कर्मशब्दः—कर्माणि कुरुते शुभम् । चरति गच्छति येन तत् **चर्म** प्रसिद्धम् । भसितं दीपितमिति यत्तद् **भस्म** । जायते यत्र तत् **जन्म** उत्पत्तिः । शृणातीति **शर्म** सुखं गृहं वा । हिनोति वर्धते येन तत् **हेम** सुवर्णं वा । श्लिष्यतीति **श्लेष्मा** कफोद्भावो वा । श्लेष्माऽस्यास्तीति पामादित्वान्मत्वर्थे नः प्रत्ययः—'श्लेष्मणः' । सिध्मादित्वात्—'श्लेष्मलः' । तरतीति **तर्म** यूपाग्रं वा, तर्मणी, तर्माणि । तिष्ठति येन तत् **स्थाम** बलं वा । स्थामनी । ददातीति **दाम** स्रग्वा । छादयतीति **छद्म** माया वा । **इस्मन्०** [६ । ४ । ९७] इति ह्रस्वत्वम् । सुष्ठु त्रायत इति

बृंहेर्नोऽच्च ॥ १४६ ॥ ब्रह्म ॥ १४६ ॥

अशिशकिभ्यां छन्दसि ॥ १४७ ॥

अश्मा । शक्मा ॥ १४७ ॥

हृभृधृसृस्तृशृभ्य इमनिच् ॥ १४८ ॥

हरिमा । भरिमा । धरिमा । सरिमा । स्तरिमा । शरिमा ॥१४८॥

जनिमृङ्भ्यामिमनिन् ॥ १४९ ॥ जनिमा । मरिमा ॥ १४९ ॥

वेञः सर्वत्र ॥ १५० ॥ वेमा ॥ १५० ॥

सुत्रामा । ओषति दहतीति **ऊष्म** । **अन्येषामपि०** [६ । ३ । १३५] इति दीर्घे—**ऊष्मा** ग्रीष्मर्त्तुर्वाष्पो वा ॥

१४६. बृंहति वर्धते तद् **ब्रह्म** ईश्वरो वेदस्तत्वं तपो वा ॥

१४७. अश्नात्यश्नुते व्याप्नोति वा स **अश्मा** मेघः पाषाणो वा । भाषायामपि दृश्यते—अश्मानं दृषदं मन्ये । शक्नोतीति **शक्मा** सूर्यो वा ॥

१४८. छन्दसीति वर्तते । हरति स **हरिमा** कालो वा । भर्तुं योग्यो **भरिमा** कुटुम्बं वा । ध्रियत इति **धरिमा** रूपं वा । सरतीति **सरिमा** वायुर्वा । स्तीर्यत आच्छाद्यत इति **स्तरिमा** तल्पं वा । शृणातीति **शरिमा** प्रसवो वा ॥

१४९. छन्दसीत्यनुवर्त्तते । जायत इति **जनिमा** जन्म । म्रियत इति **मरिमा** मृत्युः ॥

१५०. वयति वस्त्राणि येन स **वेमा** तन्तुवायदण्डः वस्त्रनिर्माणसामग्री वा । सर्वत्र वचनाच्छन्दसीति निवृत्तम् ॥

नामन्सीमन्व्योमन्रोमन्लोमन्पाप्मन्ध्यामन् ॥ १५१ ।

मिथुने मनिः ॥ १५२ ॥ सुशर्मा । सुधर्मा ॥ १५२ ॥

सातिभ्यां मनिन्मनिणौ ॥ १५३ ॥ साम । आत्मा ॥ १५३ ॥

हनिमशिभ्यां सिकन् ॥ १५४ ॥ हंसिका । मक्षिका ॥ १५४ ॥

कोररन् ॥ १५५ ॥ कवरः ॥ १५५ ॥

---

१५१. सप्तामी मनिनन्ता निपात्यन्ते । म्नायतेऽभ्यस्यते येन तत् **नाम** संज्ञा । स्वार्थे वार्त्तिकेन धेयट् । नामैव 'नामधेयम्' । सिनोति बध्नातीति **सीमा** अवधिर्वा । व्ययति संवृणोतीति **व्योम** अन्तरिक्षं वा । रौति शब्दयतीति **रोम** । लूयते छिद्यते तत् **लोम** गात्रकेशा वा । पिबतीति **पाप्मा** किल्विषं वा । धातोः पुक् । ध्यायते स **ध्यामा** परिमाणं तेजो वा ।

बाहुलकात्—यक्षयति पूजयतीति **यक्ष्मा** राजरोगो वा । सुवति प्रेरयतीति **सोमा** चन्द्रो वा । हूयतेऽसौ **होमा** आहुतिर्वा । दधाति यद्यत्र वेति **धाम** स्थानं तेजो वा ॥

१५२. यत्रोपसर्गो धातुक्रियया सम्बद्धस्तन् मिथुनम्, तस्मिन् सत्युक्तेभ्यो वक्ष्यमाणेभ्यश्च धातुभ्यो मनिः प्रत्ययः स्यान्नतु मनिन् । स्वरभेदार्थो नियमः । सुष्ठु शृणातीति **सुशर्म्मा** राजविशेषो वा । सुधरतीति **सुधर्मा** इत्यादि ॥

१५३. स्यति कर्माणि समापयतीति **साम** वेदभेदो वा । अतति निरन्तरं कर्मफलानि प्राप्नोति वा स **आत्मा** । आत्मने हितम् 'आत्मनीनम्' ॥

१५४. हन्तीति **हंसिका** हंसस्त्री वा । मशति शब्दयतीति रोषं करोति वा सा **मक्षिका** प्रसिद्धा जातिर्वा ॥

१५५. कौत्युपदिशतीति **कबरः** पाठको वा । केशविन्यासः 'कवरी' । अन्यत्र 'कवरा' कन्या पाठिकेत्यर्थः ॥

गिरः उडच् ॥ १५६ ॥ गरुडः ॥ १५६ ॥

इन्देः कमिन्नलोपश्च ॥ १५७ ॥ इदम् ॥ १५७ ॥

कायतेर्डिमिः ॥ १५८ ॥ किम् ॥ १५८ ॥

सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन् ॥ १५९ ॥
वस्त्रम् । अस्त्रम् । छत्रम् ॥ १५९ ॥

भ्रस्जिगमिनमिहनिविश्यशां वृद्धिश्च ॥ १६० ॥
भ्राष्ट्रः । गान्त्रम् । नान्त्रम् । हान्त्रम् । वेष्ट्रम् । आष्ट्रम् ॥ १६० ॥

दिवेर्द्युच्च ॥ १६१ ॥ द्यौत्रम् ॥ १६१ ॥

---

१५६. गिरति निगलतीति **गरुडः** पक्षिभेदो वा ॥

१५७. इन्दति परमैश्वर्यहेतुर्भवतीति **इदम्** प्रत्यक्षविषयबोधकः सर्वनामसंज्ञको वा ॥

१५८. कायति शब्दयतीति **किम्** प्रश्नाद्यर्थे वा ॥

१५९. वस्त आच्छाद्यत इति **वस्त्रम्** । अस्यति क्षिपतीति **अस्त्रम्**। छादयति घर्मादिकमपवारयतीति **छत्रम्** इति प्रसिद्धम् । **इस्मन्त्रन्०** [६ । ४ । ९७] इतिसूत्रेण ह्रस्वादेशः । पतति यो गच्छति येन वा तत् **पत्रम्** वाहनं वा । राजतेऽसौ **राष्ट्रः** राष्ट्रं राज्यं देशो वा जातिविशेषो वा । अन्येऽपि—गच्छत्यनया सा **गन्त्री** महच्छकटं वा । पिबत्यनेन तत् **पात्रम्** । पाति रक्षतीति **पात्रः** सज्जनो वा । दशति यया सा **दंष्ट्रा** दन्तो वा इत्यादि ॥

१६०. भृज्जति यत्रेति **भ्राष्ट्रः** अम्बरीषो वा । गच्छति येन तत् **गान्त्रम्** शकटं वा । नमति येन तत् **नान्त्रम्** स्तोत्रं वा । हन्यते तत् **हान्त्रम्** मरणं वा। विशन्ति यत्रेति **वेष्ट्रम्** लोको वा । अश्नुते व्याप्नोतीति **आष्ट्रम्** आकाशो वा ॥

१६१. वृद्धिरित्यनुवर्त्तते । दीव्यति द्योतते प्रकाशते तद् **द्यौत्रम्** ॥

उषिखनिभ्यां कित् ॥ १६२ ॥ उष्ट्रः । खात्रम् ॥ १६२ ॥

सिविमुच्योष्टेरू च ॥ १६३ ॥ सूत्रम् । मूत्रम् ॥ १६३ ॥

अमिचिमिशसिभ्यः क्रः ॥ १६४ ॥

अन्त्रम् । चित्रम् । मित्रम् । शस्त्रम् ॥ १६४ ॥

पुवो ह्रस्वश्च ॥ १६५ ॥ पुत्रः ॥ १६५ ॥

स्त्यायतेर्ड्रट् ॥ १६६ ॥ स्त्री ॥ १६६ ॥

गुधृवीपचिवचियमिसदिक्षदिभ्यः त्रः ॥ १६७ ॥

गोत्रम्; गोत्रा । धर्त्रम् । वेत्रम् । पक्त्रम् । वक्त्रम् । यन्त्रम् । सत्रम् । क्षत्रम् ॥ १६७ ॥

---

१६२. ओषति दहतीति **उष्ट्रः** पशुजातिभेदो वा । खन्यते तत् **खात्रम्** खनित्रं जलाधारविशेषो वा । **जनसनखनां०** [६ । ४ । ४२] इत्यात्वम् ॥

१६३. सीव्यति येन यदर्थं बध्नाति वा तत् **सूत्रम्** तन्तुः शास्त्रैकदेशो वा । मुच्यते यत्तत् **मूत्रम्** प्रस्रावो वा ॥

१६४. अमति जानाति प्राप्नोति येन तत् **अन्त्रम्** उदरनाडी वा । चीयते तत् **चित्रम्** चित्रा नक्षत्रं वा, चैत्रो मासः । मिनोति मान्यं करोतीति **मित्रम्** सुहृद्वा । नित्यन्नपुंसकम्, क्वचित् पुंल्लिङ्गो वा—'शन्नो मित्रः' इत्यादिषु । अयम्मित्रम् । इयम्-मित्रम् । शोभनानि मित्राण्यस्याः सन्तीति 'सुमित्रा' तस्या अपत्यं 'सौमित्रिः' । बाह्वादित्वादिञ् । शंसति हिनस्तीति येन तत् **शस्त्रम्** आयुधं वा ॥

१६५. पुनाति पवित्रं करोतीति **पुत्रः** आत्मजो वा ॥

१६६. स्त्यायति शब्दयति गुणान् गृह्णाति वा सा **स्त्री** प्रसिद्धा भार्य्या वा ॥

१६७. गवते शब्द्यत इति **गोत्रम्** नाम वंशो वा । **गोत्रा** पृथिवी धरतीति **धर्त्रम्** गृहं वा । वेति गच्छतीति **वेत्रम्** लताविशेषो वा । पचति येन यत्र वा तत्

हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन् ॥ १६८ ॥

होत्रम् । यात्रा । मात्रा । श्रोत्रम् । भस्त्रा ॥ १६८ ॥

गमेरा च ॥ १६९ ॥ गात्रम् ॥ १६९ ॥

दादिभ्यश्छन्दसि ॥ १७० ॥ दात्रम् । पात्रम् ॥ १७० ॥

भूवादिगृभ्यो णित्रन् ॥ १७१ ॥

भावित्रम् । वादित्रम् । गारित्रम् ॥ १७१ ॥

पक्त्रम् गार्हपत्यं वा । वक्ति येन तद् **वक्त्रम्** मुखं वा । यच्छति उपरमति येन तद् **यन्त्रम्** कलाविशेषो वा । सीदन्ति यत्रेति **सत्रम्** यज्ञो वा । सतः सत्पुरुषान् त्रायते तत् सत्रमिति व्युत्पत्त्यन्तरम् । 'क्षद' सौत्रो धातुः । क्षदति रक्षतीति **क्षत्रम्** वर्णभेदो वा । क्षतात्त्रायत इत्यपि ॥

१६८. हूयत इति **होत्रम्** होमः । ययात इति **यात्रा** गमनं वा । मातीति **मात्रा** मानं भूषणं वा । श्रूयतेऽनेन तत् **श्रोत्रम्** करणं वा । विभस्ति दीप्यते यया सा **भस्त्रा** अग्निज्वलनी वा ॥

१६९. गच्छति चेष्टतेऽनेनेति **गात्रम्** अवयवः शरीरं वा ॥

१७०. दाति लुनाति तत् **दात्रम्** धान्यादिछेदनसाधनं वा । पिबत्यनेनेति **पात्रम्** योग्यो भाजनं वा । पूर्वत्रापि 'पात्रम्' इति साधितम्, तत्र प्रत्ययस्य षित्वात् पात्री ब्राह्मणीत्यपि साधितम् । क्षयति नश्यति निवासहेतुर्भवतीति **क्षेत्रम्** केदारः कलत्रं वा । एवमन्येऽपि शब्दा द्रष्टव्याः ॥

१७२. भवतीति **भावित्रम्** लोकत्रयी वा । वाद्यते तद् **वादित्रम्** तूर्यादिर्वा । गीर्य्यते भक्ष्यते तद् **गारित्रम्** ओदनो वा ॥

चरेर्वृत्ते ॥ १७२ ॥ चारित्रम् ॥ १७२ ॥

अशित्रादिभ्य इत्रोत्रौ ॥ १७३ ॥
अशित्रम् । वहित्रम् । धरित्री । त्रोत्रम् । वरुत्रम् ॥ १७३ ॥

अमेर्द्विषति चित् ॥ १७४ ॥ अमित्रः ॥ १७४ ॥

आः समिण्निकषिभ्याम् ॥ १७५ ॥
समया । निकषा ॥ १७५ ॥

चितेः कणः कश्च ॥ १७६ ॥ चिक्कणम् ॥ १७६ ॥

---

१७२. चरतीति **चारित्रम्** वृत्तान्तं समाचारो वा । इत्रच्प्रत्यये 'चरित्रं' सुशीलम् ॥

१७३. अश्यादिभ्य इत्रः । अश्नुते व्याप्नोतीति **अशित्रम्** चरुर्वा । कटतीति **कटित्रम्** कवचभेदो वा । वहति येन तद् **वहित्रम्** वाहनं वा । वध्नातीति **बधित्रम्** कामो वा । धरतीति **धरित्री** पृथिवी वा । त्रादिभ्य उत्रः । त्रायते येन तत् **त्रोत्रम्** प्रहारो वा । लुनाति छिनत्ति येन तत् **लोत्रम्** चोरचिह्नं वा । वृणोतीति **वरुत्रम्** प्रावरणं वा ॥

१७४. शत्रौ वाच्येऽमेरित्रः । अमति गच्छतीति **अमित्रः** शत्रुः ॥

१७५. समेतीति **समया** । निकषति हिनस्तीति **निकषा** । समीपवाचकौ वा । स्वरादिपाठादनयोरव्ययत्वम् ।

बाहुलकाद्—दीव्यति **दिवा** दिनं वा । दुष्यतीति **दोषा** रात्रिर्वा । अनयोरपि तत्रैव पाठादव्ययत्वम् । स्वदते स्वादुक्रियते या सा **स्वधा** न्यायेनैश्वर्यक्रिया तृप्तिर्वा । धातोर्दस्य धः ॥

१७६. चेतति जानाति येन तत् **चिक्कणम्** स्निग्धं वा ॥

सूचेः स्मन् ॥ १७७ ॥ सूक्ष्मम् ॥ १७७ ।

पातेर्डुम्सुन् ॥ १७८ ॥ पुमान् ॥ १७८ ॥

रुचिभुजिभ्यां किष्यन् । १७९ ॥
रुचिष्यम् । भुजिष्य: ॥ १७९ ॥

वसेस्तिः ॥ १८० ॥ वस्ति: ॥ १८० ॥

सावसेः ॥ १८१ ॥ स्वस्ति ॥ १८१ ॥

१७७. सूचयति पैशुन्यं करोतीति **सूक्ष्मम्** अत्यल्पं वा ॥

१७८. पाति रक्षतीति **पुमान्**; पुमांसौ; पुमांस: । असुङादिकार्य्यम्। शोभन: पुमान् यस्या: सा 'सुपुंसी' । असुङ्, उगितत्वान् ङीप् ॥

१७९. रोचते तत् **रुचिष्यम्** इष्टं वा । भुनक्तीति **भुजिष्यः** दासो वा ॥

१८०. वस्त आच्छादयति सा **वस्तिः** वसनस्य दशा: कोणी नाभेरधोभागो वा ।

बाहुलकात्—शास्ति शिक्षत इति **शास्तिः** राजदण्डो वा । यजतीति **यष्टिः**; **यष्टी** वा काष्ठदण्डो वा । अस्यते क्षिप्यते या सा **अस्तिः** । अगं वृक्षमस्यत्युत्पाटयति स **अगस्तिः** मुनिर्वा । तस्यापत्यम् 'आगस्त्य:' । शकन्ध्वादित्वादत्र पररूपम् । पुलं महत्वमसते गच्छति प्राप्नोतीति **पुलस्तिः** ऋषिर्वा । तस्यापत्यं 'पौलस्त्य:' । गभमन्धकारमस्यतीति **गभस्तिः** किरणो वा । दूयते परितापयतीति **दूतिः**; **दूती** वा, इतस्तत: समाचारज्ञापिका स्त्री वा ॥

१८१. सुष्ठु अस्ति वर्त्तत इति **स्वस्ति** कल्याणं वा । बहुलवचनाद्भूभावनिषेध: स्वरादित्वादव्ययत्वं च ॥

वौ तसेः ॥ १८२ ॥ वितस्तिः ॥ १८२ ॥

पदिप्रथिभ्यां नित् ॥ १८३ ॥ पत्तिः । प्रथितिः ॥ १८३ ॥

दृणातेर्ह्रस्वः ॥ १८४ ॥ दृतिः ॥ १८४ ॥

कृतकृपिभ्यः कीटन् ॥ १८५ ॥
किरीटम् । तिरीटम् । कृपीटम् ॥ १८५ ॥

रुचिवचिकुचिकुटिभ्यः कितच् ॥ १८६ ॥
रुचितम् । उचितम् । कुचितम् । कुटितम् ॥ १८६ ॥

कुटिकुषिभ्यां क्मलन् ॥ १८७ ॥
कुड्मलम् । कुष्मलम् ॥ १८७ ॥

---

१८२. विशेषेण तस्यत्युपक्षिपति वा सा **वितस्तिः** द्वादशाङ्गुलं परिमाणं वा ॥

१८३. पद्यते गच्छत्यसौ पत्तिः पदातिः पुरुषो वा । प्रथ्यते या सा **प्रथितिः** प्रख्यातिर्वा । **तितुत्र०** [७ । २ । ९] इति सूत्रेऽग्रहादीनामिति वार्तिकेनेट् ॥

१८४. दीर्यतेऽसौ **दृतिः** चर्ममयं पात्रं वा ॥

१८५. किरति विक्षिपतीति **किरीटम्** मुकुटं शिरोवेष्टनं वा । तरतीति **तिरीटम्** शिरोवेष्टनं लोध्रो वा । कल्पतेऽसौ **कृपीटम्** कुक्षिरुदकं वा । बाहुलकादत्र लत्वाभावः ॥

१८६. रोचते तत् **रुचिरम्** मिष्टं वा । वक्तुं योग्यं **उचितम्** योग्यं वा । कोचति शब्दतारं करोतीति **कुचितम्** परिमितं वा । कुटतीति **कुटितम्** कुटिलं वा ॥

१८७. कुठतीति **कुड्मलम्** मुकुलम् 'फूलती हुई कली' इति प्रसिद्धम् । कुष्णाति निष्कर्षतीति **कुष्मलम्** पर्णं वा ॥

कुषेर्लश्च ॥ १८८ ॥ कुलमलम् ॥ १८८ ॥

सर्वधातुभ्योऽसुन् ॥ १८९ ॥

चेत: ॥ सर: । सद: ॥ १८९ ॥

रपेरत एच्च ॥ १९० ॥ रेप: ॥ १९० ॥

---

१८८. कुष्णातीति **कुलमलम्** पापं वा ॥

१८९. वर्चते दीप्यतेऽसौ **वर्च:** तेज: पुरीषं वा । रक्षतीति **रक्ष:** पालको दुष्टो वा । प्रज्ञादित्वादणि स एव 'राक्षस:' । रुणद्धि येन स रोध: तटो वा। चेतति जानाति येन तत् **चेत:** चित्तं वा । सरन्ति गच्छन्त्यापो यत्र तत् **सर:** तडागो वा । स्त्रीत्वविवक्षायां गौरादित्वान् 'सरसी' महासरो वा । 'सरस्वान्' समुद्र: । सरो विज्ञानमुदकं वा विद्यतेऽस्यां सा 'सरस्वती' वाक् नदी वा। रोदतीति रोद: । गौरादित्वाद् 'रोदसी' द्यावापृथिव्यौ वा । वेति गच्छतीति **वय:** कालकृताऽवस्था वा । अथवा वेति खादतीति वय:, वय एव 'वायस:' काक: प्रज्ञादित्वादण् । सीदन्त्यत्रेति **सद:** सभा वा । एति प्राप्नोतीति **अय:** लोहं वा। अय: कामयतेऽसौ 'अयस्कान्त:' चुम्बकमणि: । अनिति जीवति येनेति **अन:** ओदनं पक्वान्नं वा । अनो महत्सम्पद्यते यत्र तद् 'महानसम्' पाकस्थानम्। समासान्तष्टच् । ताम्यति काङ्क्षति येन तत् **तम:** गुण: क्लेशो रात्रिरन्धकारो वा । तमशब्दोऽच् प्रत्ययान्तोऽदन्तोऽपि दृश्यते । महति पूजयति पूज्यो भवति वेति **मह:** महद् वा, महसी, महांसि । अच्प्रत्ययेऽकारान्तोऽपि । सहते यत्रेति **सह:** बलं मार्गशीर्षो वा । सहसा बलेन सह प्रवर्त्तते स 'साहसिक:' दस्युर्दुष्टकर्मा वा। सहो बलं विद्यते यत्रेति 'सहस्य:' पौषो मास: । तपति दु:खीभवति तप्यते समर्थो वा भवति येन तत् **तप:** धर्मसेवनं माघमासो वा । तपति साधु 'तपस्य:' फाल्गुनो मास: । ग्रीष्मेऽकारान्तस्तपशब्द: । मिमीते येन स **मा:; मास:** वा इत्यादि ॥

१९०. रप्यत उच्यत इति **रेप:** अवद्यं वचो वा ।

अशेर्देवने युट् च ॥ १९१ ॥ यशः ॥ १९१ ॥

उब्जेर्बले बलोपश्च ॥ १९२ ॥ ओजः ॥ १९२ ॥

श्वेः सम्प्रसारणं च ॥ १९३ ॥ शवः ॥ १९३ ॥

श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च ॥ १९४ ॥ शिरः ॥ १९४ ॥

अर्त्तेरुच्च ॥ १९५ ॥ उरः ॥ १९५ ॥

व्याधौ शुट् च ॥ १९६ ॥ अर्शः ॥ १९६ ॥

बहुलवचनादन्यत्रापि—पीयते तत् **पयः** उदकं दुग्धं वा । पयोऽस्या अस्तीति 'पयस्विनी' गौः । 'पयस्वी' तडागः । विनिः । धातोरीत्वम् । पुनर्गुणे सत्ययादेशः ॥

१९१. अश्यते दीव्यते क्रीडादि क्रियते येन तत् **यशः** कीर्तिर्वा ॥

१९२. उब्जति कोमलो भवतीति **ओजः** पराक्रमो वा । ओजसा वर्त्तते इति 'औजसिकः' ठक् ॥

१९३. श्वयति गच्छतीति **शवः** मृतकशरीरं वा ।

बाहुलकात्—वहति यत् इति, **ऊधः** गवादेर्दुग्धस्थानं वा । धातोः सम्प्रसारणे कृते दीर्घत्वं धकारश्चान्तादेशः । घट इवोधो यस्याः सा 'घटोध्नी; कुण्डोध्नी' गौर्महिषी वा ॥

१९४. श्रीयत आश्रीयते तत् **शिरः** मस्तकम् । शिरसी; शिरांसि ॥

१९५. स्वाङ्ग इत्यनुवर्त्तते । ऋच्छति प्राप्नोति येन तत् **उरः** हृदयस्थानं वा । पिच्छादित्वादिलच् । बहूरोऽस्यास्तीति 'उरसिलः' ॥

१९६. ऋच्छति प्राप्नोति दुखं येन तत् **अर्शः** गुदरोगो वा । अर्शोऽस्यास्तीति 'अर्शसः' पुमान् । **अर्श आदि॰ [५ । २ । १२७]** इत्यच् ॥

उदके नुट् च ॥ १९७ ॥ अर्णः ॥ १९७ ॥

इण आगसि ॥ १९८ ॥ एनः ॥ १९८ ॥

रिचेर्धने घिच्च ॥ १९९ ॥ रेक्णः ॥ १९९ ॥

चायतेरन्ने ह्रस्वश्च ॥ २०० ॥ चनः ॥ २०० ॥

वृङ्शीङ्भ्यां रूपस्वाङ्गयोः पुट् च ॥ २०१ ॥
वर्पः । शेपः ॥ २०१ ॥

स्रुरीभ्यां तुट् च ॥ २०२ ॥ स्रोतः । रेतः ॥ २०२ ॥

पातेर्बले जुट् च ॥ २०३ ॥ पाजः ॥ २०३ ॥

---

१९७. अर्तेरित्येव । ऋच्छति गच्छतीति **अर्णः** जलम् । अर्णोऽस्मिन्नस्तीति 'अर्णवः' समुद्रः । व प्रत्यये सलोपः ॥

१९८. ईयते प्राप्यते दुःखमनेन तद् **एनः** पापं वा ॥

१९९. रिणक्ति व्ययं करोति यत् तत् **रेक्णः** सुवर्णं वा । घित्वात्कुत्वम् ॥

२००. चायते पूज्यतेऽनेन तत् **चनः** भक्तम् । प्रत्ययस्य नुडागमे सति यलोपो ह्रस्वश्च ॥

२०१. व्रियते स्वीक्रियते तत् **वर्पः** रूपम् । शेते येन तत् **शेपः** लिङ्गेन्द्रियं वा । अकारान्तोऽपि मेढ्रवाची शेपशब्दो दृश्यते शुनः इव शेपोऽस्य स 'शुनःशेप' मुनिः । षष्ठ्या अलुक् ।

बाहुलकात्—वर्णव्यत्यये **वर्फः; शेफः** इत्यपि सिद्धम् ॥

२०२. स्रवति चलतीति **स्रोतः** स्वतो जलक्षरणं वा । रीयते स्रवतीति **रेतः** वीर्यं वा ॥

२०३. पाति रक्षतीति **पाजः** बलं वा ॥

उदके थुट् च ॥ २०४ ॥ पाथः ॥ २०४ ॥

अन्ने च ॥ २०५ ॥ पाथः ॥ २०५ ॥

अदेर्नुम् धौ च ॥ २०६ ॥ अन्धः ॥ २०६ ॥

स्कन्देश्च स्वाङ्गे ॥ २०७ ॥ स्कन्धः ॥ २०७ ॥

आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा ॥ २०८ ॥
अप्नः; अपः । आपः ॥ २०८ ॥

रूपे जुट् च ॥ २०९ ॥ अब्जः ॥ २०९ ॥

उदके नुम्भौ च ॥ २१० ॥ अम्भः ॥ २१० ॥

---

२०४. पातेरेव । पातीति **पाथः** जलम् ॥

२०५. थुट् । पाति रक्षतीति **पाथः** भक्तम् ॥

२०६. अन्न इत्यनुवर्त्तते । अद्यते भक्ष्यते तद् **अन्धः** अन्नमोदनो वा ॥

२०७. स्कन्दते गच्छति चेष्टते शुष्यति वा येन तत् **स्कन्धः** बाहुमूलं वृक्षावयवो वा । दकारान्तोऽप्ययम् ॥

२०८ आप्यते सुखं येन तत् **अप्नः; अपः** अपत्यं सुकर्म वा । ह्रस्वास्यपि विकल्पे—**आप** इत्यपि भवति । आपोभिर्मार्जनमित्यादि सत्प्रयोगदर्शनात् ॥

२०९. आप इत्येव । आप्यते यत् तद् **अब्जः** रूपम् । अद्भ्यो जात इति निर्वचने अब्जः कमलं वा ॥

२१०. आप इत्येव । आप्यते तत् **अम्भः** उदकम् । अम्भसा वर्त्तते इति 'आम्भसिकः' मत्स्यः ॥

नहेर्दिवि भश्च ॥ २११ ॥ नभः ॥ २११ ॥

इण आगोऽप धे च ॥ २१२ ॥ आगः ॥ २१२ ॥

अमेर्हुक् च ॥ २१३ ॥ अंहः ॥ २१३ ॥

रमेश्च ॥ २१४ ॥ रंहः ॥ २१४ ॥

देशेऽह च ॥ २१५ ॥ रहः ॥ २१५ ॥

अञ्च्यञ्जियुजिभृजिभ्यः कुश्च ॥ २१६ ॥
अङ्कः । अङ्गः । योगः । भर्गः ॥ २१६ ॥

---

२११. नह्यति घर्मं बध्नातीति **नभः** मेघधूल्यादियुक्त आकाशः श्रावणमासो वा । नभोऽस्मिन् शुद्धमस्तीति 'नभस्यः' भाद्रो मासः ॥

२१२. ईयते प्राप्यते ज्ञायते वा तत् **आगः** अपराधो दण्डो वा ॥

२१३. अमन्ति प्राप्नुवन्ति दुःखं येन तत् **अंहः** पापं वा ॥

२१४. चात् हुक् । रमते येन तत् **रंहः** वेगो वा ॥

२१५. चाद्रमेरसुन् । रमन्तेऽस्मिन्निति **रहः** एकान्तो विश्वासदेशो वा । रह एकान्ते भवं 'रहस्यम्' वेदान्त वा । देशादन्यत्र रहः अव्ययं शब्दान्तरं वास्ति । रहो मैथुनसमयस्तत्र भवं 'रहस्यम्' मैथुनम् । दिगादित्वाद्यत् ॥

२१६. अञ्चति गच्छति येन तत् **अङ्कः** सङ्ख्याद्योतकं चिह्नं वा । अनक्ति व्यक्तीकरोतीति **अङ्गः** पक्षी वा । अवयवेऽङ्गशब्दोऽदन्तः । युज्यते स **योगः** समाधिः कालो वा । भर्जति पक्वं भवतीति **भर्गः** प्रजापतिः तेजो वा ।

बाहुलकात्—उच्यते यत्र तत् **ओकः** स्थानं वा । न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम् ॥

भूरञ्जिभ्यां कित् ॥ २१७ ॥ भुवः । रजः ॥ २१७ ॥

वसेर्णित् ॥ २१८ ॥ वासः ॥ २१८ ॥

चन्देरादेश्च छः ॥ २१९ ॥ छन्दः ॥ २१९ ॥

पचिवचिभ्यां सुट् च ॥ २२० ॥ पक्षः । वक्षः ॥ २२० ॥

वहिहाधाञ्भ्यश्छन्दसि ॥ २२१ ॥
वक्षाः । हासाः । धासाः ॥ २२१ ॥

इणश्चासिः ॥ २२२ ॥ अयाः ॥ २२२ ॥

मिथुनेऽसिः ॥ २२३ ॥ सुपयाः । सुयशाः ॥ २२३ ॥

---

२१७. भवन्ति यस्मिन्निति **भुवः** अन्तरिक्षं वा । रजति तत् **रजः** लोकः सूक्ष्मधूलिः स्त्रीपुष्पं गुणो वा । अकारान्तश्च ॥

२१८. वस्त आच्छादयति शरीरादिकमनेन तत् **वासः** वस्त्रं वा । असुनो णिद्वद्भावाद् वृद्धिः ॥

२१९. चन्दति हृष्यति येन दीप्यते वा तत् **छन्दः** गायत्र्यादि कपटमिच्छाऽभिप्रायो वशो वा । छन्दानुवृत्तिः, इत्यादिप्रयोगदर्शनादकारान्तोऽप्ययं शब्द इति मन्तव्यम् ॥

२२०. पचतीति **पक्षः** पूर्वोत्तरपक्षौ वा । वक्ति येन तद् **वक्षः** हृदयं वा ॥

२२१. सुट् । वहति भारमिति **वक्षाः** अनड्वान् वा । हीयते हीनो भवतीति **हासाः** चन्द्रमा वा । दधातीति **धासाः** पर्वतो वा ॥

२२२. एति प्राप्नोतीति **अयाः** अग्निर्वा । स्वरादिपाठादव्ययम् । अत एव दीर्घादिरासिः प्रत्ययः ॥

२२३. यत्रोपसर्गो धातुक्रियया संयुक्तस्तन्मिथुनम्, तत्र सति येभ्यो धातुभ्यो-

नञि हन एह च ॥ २२४ ॥ अनेहाः ॥ २२४ ॥

विधाञो वेध च ॥ २२५ ॥ वेधाः ॥ २२५ ॥

नुवो धुट् च ॥ २२६ ॥ नोधाः ॥ २२६ ॥

गतिकारकोपपदयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च ॥ २२७ ॥
सुतपाः । जातवेदाः ॥ २२७ ॥

चन्द्रे मो डित् ॥ २२८ ॥ चन्द्रमाः ॥ २२८ ॥

वयसि धाञः ॥ २२९ ॥ वयोधाः ॥ २२९ ॥

ऽसुन् विधीयते तेभ्यः सर्वेभ्योऽसिरेव स्यात् । स्वरभेदार्थं सूत्रमिदम् । **सुपयाः । सुतपाः । सुपेशाः । न्योजाः । सुजवाः । सुस्रोताः**, इत्यादयो द्रष्टव्याः ॥

२२४. न हन्यते विच्छिन्नो न भवतीति **अनेहाः** कालो वा । अनेहसौ, अनेहसः ॥

२२५. विशेषेण दधातीति **वेधाः; वेधसौ; वेधसः; वेधसम्** विद्वान् विधाता जगदीश्वरो वा ॥

२२६. नौति स्तौति नूयते स्तूयते वा स **नोधाः** ऋषिर्वा ॥

२२७. गतिकारकोपपदाद्धातोरसिः प्रत्ययो भवति, तस्मिन् सति गतिकारकोपपदयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वम् । उत्तरपदप्रकृतिस्वरस्यापवादः । **सुतपाः । सुतेजाः । सुवक्षाः** । कारके–**उग्रतेजाः । हिरण्यरेताः । जातवेदाः । सर्ववेदाः । विश्ववेदाः** । वृद्धेभ्यः शृणोतीति **वृद्धश्रवाः** । विष्टर आसने शृणोतीति **विष्टरश्रवाः**, इत्यादि ॥

२२८. चन्द्रमानन्दं मिमीतेऽसौ **चन्द्रमाः** सोमो वा । **चन्द्रमसौ । चन्द्रमसः** ॥

२२९. वयो दधातीति **वयोधाः** तरुणो वा ॥

पयसि च ॥ २३० ॥ पयोधाः ॥ २३० ॥

पुरसि च ॥ २२१ ॥ पुरोधाः ॥ २३१ ॥

पुरूरवाः ॥ २३२ ॥

चक्षेर्बहुलं शिच्च ॥ २३३ ॥ नृचक्षाः ॥ २३३ ॥

उषः किच्च ॥ २३४ ॥ उषः ॥ २३४ ॥

दमेरुनसिः ॥ २३५ ॥ दमुनाः ॥ २३५ ॥

अङ्गेरसिः ॥ २३६ ॥ अङ्गिराः ॥ २३६ ॥

---

२३०. धाञ इत्येव । पयो दधातीति **पयोधाः** समुद्रो वा मेघविशेषः स्तनो वा ॥

२३१. धाञ इत्येव । पुरोऽग्रे यजमानं दधातीति **पुरोधाः** पुरोहितो वा ॥

२३२. पुरु बहु रौत्युपदिशति ब्रवीति वा स **पुरूरवाः** राजर्षिर्वा ॥

२३३. विशेषेण चष्टेऽसौ **विचक्षाः** उपाध्यायो वा । नॄन् चष्टे पश्यति ख्याति वा स **नृचक्षाः** ईश्वरो द्रष्टा वा । शित्त्वाभावपक्षे–आचष्टेऽसौ 'आख्याः; प्रख्याः' प्रजापतिर्वा ॥

२३४. असिः । ओषति दहतीति **उषः** कर्णछिद्रं पर्वतभेदः । स्त्रियां सूर्योदयात् प्राक् प्रभातप्रकाशः **उषा** वा । उषः काले बुध्यते इति 'उषर्बुधः' अग्निर्बालः संयमी वा । कप्रत्ययान्ताट्टापि कृते **उषा** रात्रिरित्यपि भवति ॥

२३५. दाम्यत्युपशमयतीति **दमुनाः** अग्निर्वा ॥

२३६: अङ्गति प्राप्नोति जानाति वा स **अङ्गिराः** ईश्वरोऽग्निर्ऋषिभेदो वा । तस्यापत्यम् 'आङ्गिरसः' असिप्रत्ययस्य रुडागमः ॥

सर्त्तेरप्पूर्वादसिः ॥ २३७ ॥ अप्सराः ॥ २३७ ॥

विदिभुजिभ्यां विश्वेऽसिः ॥ २३८ ॥
विश्ववेदाः । विश्वभोजाः ॥ २३८ ॥

वशेः कनसिः ॥ २३९ ॥ उशनाः ॥ २३९ ॥

इत्युणादिषु चतुर्थः पादः ॥ ४ ॥

---

२३७. अप्सरति विरुद्धं गच्छतीति **अप्सराः** । उपसर्गान्त्यलोपः । अथवाऽप्सु जलेषु प्राणेषु वा सरन्तीति **अप्सरसः** किरणा वा । अथवा न प्सान्ति भक्षयन्ति रक्षां कुर्वन्तीति **अप्सरसः** प्रत्ययस्य रुट् । नित्यबहुवचनान्तः स्त्रीलिङ्गश्च ॥

२३८. विश्वं सर्वं वेत्ति जानातीति **विश्ववेदाः** जगदीश्वरो वा । विश्वे विद्यते विश्वं वा विन्दति स **विश्ववेदाः** अग्निर्वा । विश्वं भुनक्ति प्रलयसमये कारणरूपेण स्वात्मनि स्थापयति वा विश्वं पालयतीति **विश्वभोजाः** ईश्वरो राजा वा ॥

२३९. वष्टि कामयते स **उशनाः** शुक्रवारो वा । सम्प्रसारणादिकार्यम् ॥

इत्युणादिव्याख्यायां वैदिकलौकिककोषे चतुर्थः पादः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमपादारम्भः

अदिभुवो डुतच् ॥ १ ॥ अद्भुतम् ॥ १ ॥

गुधेरूमः ॥ २ ॥ गोधूमः ॥ २ ॥

मसेरूरन् ॥ ३ ॥ मसूरः ॥ ३ ॥

स्थः किच्च ॥ ४ ॥ स्थूरः ॥ ४ ॥

पातेरतिः ॥ ५ ॥ पातिः ॥ ५ ॥

वातेर्नित् ॥ ६ ॥ वातिः ॥ ६ ॥

---

१. अदित्यव्ययं कदाचिदर्थे । अद् भवतीति **अद्भुतम्** आश्चर्यम् । अद्भुतमधीते । अद्भुताध्यापकः ॥

२. गुध्यति वेष्टयतीति **गोधूमः** अन्नविशेषो वा । गोधूमस्य विकारो 'गोधूममयः' ॥

३. मस्यति परिणमतेऽसौ **मसूरः** व्रीहिभेदो वेश्या वा ॥

४. तिष्ठतीति **स्थूरः** मनुष्यो वा । तस्यापत्यं 'स्थौर्य्यः' ॥

५. पाति रक्षतीति **पातिः** स्वामी । 'सम्पातिः' पक्षिराजो वा ॥

६. वाति गच्छतीति **वातिः** सूर्यश्चन्द्रो वा ॥

अर्त्तेश्च ॥ ७ ॥ अरतिः ॥ ७ ॥

तृहेः क्नो हलोपश्च ॥ ८ ॥ तृणम् ॥ ८ ॥

वृञ्लुठितनिताडिभ्य उलच् तण्डश्च ॥ ९ ॥ तण्डुलाः ॥ ९ ॥

दंसेष्टटनौ न आ च ॥ १० ॥ दासः ॥ १० ॥

दंशेश्च ॥ ११ ॥ दाशः ॥ ११ ॥

उदि चेर्डैसिः ॥ १२ ॥ उच्चैः ॥ १२ ॥

नौ दीर्घश्च ॥ १३ ॥ नीचैः ॥ १३ ॥

---

७. अर्यते गम्यते सा **अरतिः** उद्वेगो वा ॥

८. तृह्यते हन्यते तत् **तृणम्** प्रसिद्धमेव ॥

९. व्रियन्ते लुठ्यन्ते तन्यन्ते ताड्यन्ते वा ते **तण्डुलाः** प्रसिद्धा वा। वृञादीनां स्थाने तण्डादेशः ॥

१०. दंसयति दशति पश्यति वा स **दासः** सेवकः शूद्रो वा। टित्वात् ङीप्—'दासी'। नकारस्याकारः। नित्करणं पक्षआद्युदात्तार्थम् ॥

११. टटनौ नकारस्य चात्वम्। दशति मत्स्यादिकमिति **दाशः** धीवरः। स्त्रियां—'दाशी' धीवरी ॥

१२. उच्चीयते वर्ध्यतेऽसौ **उच्चैः** महान् वा। स्वरादित्वादव्ययम् ॥

१३. चेरित्येव। निचीयत इति **नीचैः** अधोऽधमो वा। अस्यापि स्वरादित्वादेवाव्ययत्वम् ॥

सो रमेः क्तो दमे पूर्वपदस्य च दीर्घः ॥ १४ ॥
सूरतः ॥ १४ ॥

पूञो यण् णुग्घ्रस्वश्च ॥ १५ ॥ पुण्यम् ॥ १५ ॥

स्रंसेः शिः कुट् किच्च ॥ १६ ॥ शिक्यम् ॥ १६ ॥

अर्त्तेः क्युरुच्च ॥ १७ ॥ उरणः ॥ १७ ॥

हिंसेरीरन्नीरचौ ॥ १८ ॥ हिंसीरः ॥ १८ ॥

उदि दृणातेरलचौ पूर्वपदान्त्यलोपश्च ॥ १९ ॥
उदरम् ॥ १९ ॥

डित्खनेर्मुट् चोदात्तः ॥ २० ॥ मुखम् ॥ २० ॥

---

१४. सुष्ठु रमत इति **सूरतः** उपशान्तः कृपालुर्वा । दमार्थादन्यत्र—'सुरतः' क्रीडायुक्तः ॥

१५. पवते पवित्रो भवति येन तत् **पुण्यम्** सुकृतो धर्मो वा ॥

१६. स्रंसते गच्छतीति **शिक्यम्** काजः 'छींका' इति प्रसिद्धः । तत्र धृतं वस्तु 'शैक्यम्' ॥

१७. ऋच्छति गच्छतीति **उरणः** मेषो वा ॥

१८. हिनस्तीति **हिंसीरः** व्याघ्रो दुष्टो वा । प्रत्ययद्वयं स्वरभेदार्थम् ॥

१९. उद् दृणाति येनान्नमिति **उदरम्** कुक्षिस्थानम् । प्रत्ययभेदोऽत्रापि स्वरभेदार्थः ॥

२०. खनेरलचौ । तयोर्डित्त्वं धातोर्मुडागमश्च । तस्योदात्तत्वम् । खनत्यन्नादिकमनेनेति **मुखम्** आस्यम् । मुखे भवो 'मुख्यः' रोगः । **शरीरावयवाद्यत्** [५ । १ । ६] मुखमिवोत्तमं मुख्यम् । शाखादित्वादिवार्थे यः ॥

असेः सन् ॥ २१ ॥ अंसः ॥ २१ ॥

मुहेः खो मूर्च ॥ २२ ॥ मूर्खः ॥ २२ ॥

नहेर्हलोपश्च ॥ २३ ॥ नखः ॥ २३ ॥

शीङो ह्रस्वश्च ॥ २४ ॥ शिखा ॥ २४ ॥

माङ ऊखो मय च ॥ २५ ॥ मयूखः ॥ २५ ॥

कलिगलिभ्यां फगस्योच्च ॥ २६ ॥ कुल्फः । गुल्फः ॥ २६ ॥

स्पृशेः श्वण्शुनौ पृ च ॥ २७ ॥ पार्श्वः । पर्शुः ॥ २७ ॥

श्मनि श्रयतेर्डुन् ॥ २८ ॥ श्मश्रु ॥ २८ ॥

---

२१. अमति गच्छति प्राप्नोति येन स **अंसः** स्कन्धो विभागो वा। अंसोऽस्यास्तीति 'अंसलः' ॥

२२. मुह्यति विक्षिप्त इव इव भवतीति **मूर्खः** । मूर्खस्य भावो 'मौर्ख्यं' मूर्खिमा वा । बाहुलकात् खस्येनादेशाभावः ॥

२३. नह्यति वध्नाति रुधिरादिकमिति **नखः** प्राण्यङ्गं वा ॥

२४. खः । शेतेऽसौ **शिखा** चूडाकेशभेदो ज्वाला वा । ह्रस्वविधानसामर्थ्याद् गुणाऽभावः ॥

२५. मिमीते मान्यहेतुर्भवतीति **मयूखः** किरणः कान्तिः करो ज्वाला वा।

२६. कलति संख्यातीति **कुल्फः** शरीरावयवो रोगो वा । गलति भक्षयतीति **गुल्फः** पादग्रन्थिर्वा ॥

२७. स्पृशति येन स **पार्श्वः** कक्षयोरधोभागो वा । **पर्शुः** आयुधं वा ॥

२८. श्मनि मुखे श्रयतीति **श्मश्रु**; श्मश्रुणी; श्मश्रूणि पुरुषमुखरोमाणि वा ॥

अश्वादयश्च ।। २९ ।। अश्रु ।। २९ ।।

जनेष्टन् नलोपश्च ।। ३० ।। जटा ।। ३० ।।

अच् तस्य जङ्घ च ।। ३१ ।। जङ्घा ।। ३१ ।।

हन्तेः शरीरावयवे द्वे च ।। ३२ ।। जघनम् ।। ३२ ।।

क्लिशेरन् लो लोपश्च ।। ३३ ।। केशः ।। ३३ ।।

फलेरितजादेश्च पः ।। ३४ ।। पलितम् ।। ३४ ।।

कृञादिभ्यः संज्ञायां वुन् ।। ३५ ।।

करकः । कटकः । नरकम् । कोरकः ।। ३५ ।।

---

२९. अश्नुते व्याप्नोतीति **अश्रु** नेत्रजलं वा । डुन् प्रत्ययो रुडागमश्च एवमन्येऽपि यथायोग्यं द्रष्टव्याः ।।

३०. जायतेऽसौ **जटा** दीर्घाः केशा वा । जटा अस्य सन्तीति 'जटाल.'—सिध्मादित्वाल्लच् । 'जटिलः'—पिच्छादित्वादिलच् ।।

३१. तस्य जनेः । जायतेऽसौ **जङ्घा** जानोरधोभागो वा ।।

३२. हन्ति येन यद् वा हन्यते तत् **जघनम्** जानोरुपरिभागो वा । इवार्थे शाखादित्वाद्यः । जघनमिव 'जघन्यं' नीचम् ।।

३३. क्लिश्यति येन स **केशः** शिरलोमानि वा । केशा अस्य सन्तीति—'केशवः; केशिकः; केशी' ।।

३४. फलति निष्पन्नं पक्वमिव भवतीति **पलितम्** केशश्चैत्यं वा । फस्य पः ।।

३५. करोतीति **करकः;** **करका** वृष्टिपाषाणो वा करको दाडिमः कमण्डलुर्वा । कटति वर्षत्यावृणोति वा स **कटकः** बाहुभूषणं शिखरो वा ।

१०

चीकयतेराद्यन्तविपर्ययश्च ॥ ३६ ॥ कीचकः ॥ ३६ ॥

पचिमच्योरिच्चोपधायाः ॥ ३७ ॥ पेचकः । मेचकः ॥ ३७ ॥

जनेररष्ठ च ॥ ३८ ॥ जठरम् ॥ ३८ ॥

वचिमनिभ्यां चिच्च ॥ ३९ ॥ वठरः । मठरः ॥ ४६ ॥

ऊर्जि दृणातेरलचौ ॥ ४० ॥ ऊर्दरः ॥ ४० ॥

कृदरादयश्च ॥ ४१ ॥ कृदरः । मृदरः । सृदरः ॥ ४१ ॥

हन्तेर्युन्नाद्यन्तयोर्घत्वतत्वे ॥ ४२ ॥ घातनः ॥ ४२ ॥

नृणाति नयतीति **नरकम्** पापभागो वा । सरति गच्छतीति **सरकम्** गमनं वा । अलति भूषितो भवतीति **अलकम्** शीतादिकं वा । अलति वारयति येभ्यस्ते **अलकाः** कुटिलाः केशा वा । [कुरति शब्दयतीति] **कोरकः** कलिका 'कली' इति प्रसिद्धा ॥

३६. चीकयते सहतेऽसौ **कीचकः** वंशभेदो वा ॥

३७. पचतीति **पेचकः** उलूकपक्षी वा । मचते शब्दयतीति **मेचकः** कृष्णवर्णो मयूरपक्षचिह्नं वा ॥

३८. जायतेऽस्मादिति **जठरम्** उदरं कठिनं वा ॥

३९. अन्त्यस्य ठः । वक्तीति **वठरः** मूर्खो वा । मन्यतेऽसौ **मठरः** मुनिभेदो मत्तो वा । तस्यापत्यं 'माठरः; माठर्यः' ॥

४०. ऊर्क् पराक्रमं रसं वा दृणातीति **ऊर्दरः** शूरो दुष्टो वा । स्वरभेदार्थं प्रत्ययद्वयम् ॥

४१. कृत्स्नं दृणातीति **कृदरः** कुशूलो वा । मुदं दृणातीति **मृदरः** व्याधिर्विलं वा । सृष्टिं दृणातीति **सृदरः** सर्पः ॥

४२. हन्तीति **घातनः** मारको वा ॥

क्रमिगमिक्षमिभ्यस्तुन् वृद्धिश्च ॥ ४३ ॥

क्रान्तुः । गान्तुः । क्षान्तुः ॥ ४३ ॥

हर्यतेः कन्यन् हिरच् ॥ ४४ ॥ हिरण्यम् ॥ ४४ ॥

कृञः पासः ॥ ४५ ॥ कर्पासः ॥ ४५ ॥

जनेस्तुरश्च ॥ ४६ ॥ जर्त्तुः ॥ ४६ ॥

ऊर्णोतेर्डः ॥ ४७ ॥ ऊर्णा ॥ ४७ ॥

दधातेर्यन्नुट् च ॥ ४८ ॥ धान्यम् ॥ ४८ ॥

जीर्यतेः क्रिन् रश्च वः ॥ ४९ ॥ जिव्रिः ॥ ४९ ॥

---

४३. क्रामति पादान् विक्षपतीति **क्रान्तुः** पक्षी वा । गच्छतीति **गान्तुः** पथिको वा । । 'आगान्तुः' अभ्यागतः । क्षमतेऽसौ **क्षान्तुः** सहनशीलो वा ॥

४४. हर्यते काम्यते तत् **हिरण्यम्** सुवर्णं वा ॥

४५. क्रियत उत्पाद्यतेऽसौ **कर्पासः** सस्यभेदो वा । कर्पासस्य विकारः 'कार्पासम्' वस्त्रम् । बिल्वादित्वादण् ॥

४६ जायते यत इति **जर्त्तुः** उपस्थेन्द्रियं हस्ती वा ॥

४७. ऊर्णोत्याच्छादयति यया सा **ऊर्णा** अविमेषयो रोमाणि वा । ऊर्णा याति प्राप्नोतीति 'ऊर्णायुः' मेषो मेषोर्णा कम्बलो वा । ऊर्णा इव नाभिरस्य स 'ऊर्णनाभः'—समासान्तोऽच् । 'ऊर्णनाभिः' इति वा । समासान्तस्य विधेर-नित्यत्वात् । लूताहिर्वा ॥

४८. दधाति पुष्णाति लोकानिति **धान्यम्** व्रीहिर्वा । धाने पोषणे साधु 'धान्यम्' इत्यपि ॥

४९. यो जीर्यति येन वा स **जिव्रिः** कालः पक्षी वा । हलि च [८ । २ । ७७] इति बाहुलकाद्दीर्घाभावः ॥

मव्यतेर्यलोपो मश्चापतुट् चालः ॥ ५० ॥

ममापतालः ॥ ५० ॥

ऋजः कीकच् ॥ ५१ ॥ ऋजीकः ॥ ५१ ॥

तनोतेर्डः सन्वच्च ॥ ५२ ॥ तितउः ॥ ५२ ॥

अर्भकपृथुकपाका वयसि ॥ ५३ ॥

अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सिते ॥ ५४ ॥

लीरीङोर्ह्रस्वः पुट् च तरौ श्लेषणकुत्सनयोः ॥ ५५ ॥

लिप्तम् । रिप्रम् ॥ ५५ ॥

क्लिशेरीच्चोपधायाः कन् लोपश्च लो नाम् च ॥ ५६ ॥

कीनाशः ॥ ५६ ॥

---

५०. मव्यति बध्नातीति **ममापतालः** बन्धनहेतुर्विषयो वा ॥

५१. अर्जति गच्छतीति **ऋजीकः** सूर्यो धूमो वा ॥

५२. तनोति विस्तृणोति येन तत् **तितउः** 'चालनी' पेषणशोधकपात्रम् ॥

५३. ऋध्यति वर्धतेऽसौ अर्भकः । 'ऋधु' धातोर्वुन् धस्य भः । प्रथते वर्ध स **पृथुकः** । कुकन् प्रत्ययः सम्प्रसारणं च । पिबतीति **पाकः** । कन् प्रत्ययः अर्भकपृथुकपाका बालकपर्यायाः ॥

५४ वदितुमयोग्यम् **अवद्यम्** । नञ्पूर्वाद् 'वद' धातोर्यत् । अवतीति **अवमम्** । अमः प्रत्ययः । तत्रैव वस्य धः—अधमम् । ऋच्छति गच्छतीति अर्वा अश्वो वा । वन् । रिफति निन्दतीति **रेफः** । कुत्सित पर्याया इमे ॥

५५. लीयते श्लिष्यत इति **लिप्तम्** श्लिष्टम् । रीयते तत् **रिप्रम्** कुत्सितम् तरौ प्रत्ययौ पुडागमः ॥

५६. क्लिश्नातीति **कीनाशः** कृषीवलो न्यायाधीशो वा । धातोरुपधाया ईत्वं लकारलोपः कन् प्रत्ययो नामागमश्चान्त्यादचः परः ॥

अश्नोतेराशुकर्मणि वरट् च ॥ ५७ ॥ ईश्वरः ॥ ५७ ॥

चतेरुरन् ॥ ५८ ॥ चत्वारः ॥ ५८ ॥

प्राततेररन् ॥ ५९ ॥ प्रातः ॥ ५९ ॥

अमेस्तुट् च ॥ ६० ॥ अन्तः ॥ ६० ॥

दहेर्गोहलोपो दश्च नः ॥ ६१ ॥ नगः ॥ ६१ ॥

सिचे संज्ञायां हनुमौ कश्च ॥ ६२ ॥ सिंहः ॥ ६२ ॥

व्याङि घ्रातेश्च जातौ ॥ ६३ ॥ व्याघ्रः ॥ ६३ ॥

हन्तेरच् घुर च ॥ ६४ ॥ घोरम् ॥ ६४ ॥

क्षमेरुपधालोपश्च ॥ ६५ ॥ क्ष्मा ॥ ६५ ॥

---

५७. अश्नुते आशु शीघ्रं करोति जगद्रचयति स **ईश्वरः** स्वामी वा । टित्वात् 'ईश्वरी' । वरच् प्रत्यये 'ईश्वरा' ॥

५८. चतते याचतेऽसौ **चतुः** संख्यावाची वा । चत्वारः । चतस्रः ।

५९. प्रकृष्टमतति गच्छतीति **प्रातः** प्रभातकालो वा । स्वरादित्वादव्ययम् ॥

६०. असति गच्छति यत्रेति **अन्तः** मध्यं वा । पूर्ववदव्ययम् ॥

६१. दहति दह्यते वा स **नगः** पर्वतो वृक्षो वा । बाहुलकान्नकारस्य नाकारः—**नागः** सर्पभेदो वा ॥

६२. सिञ्चतीति **सिंहः** प्रसिद्धो वा । हकारप्रत्ययो नुमागमः । चस्य कः । ककारस्य च लोपः । हिनस्तीति 'सिंहः' इति पृषोदरादित्वादप्याद्यन्तविपर्ययः ॥

६३. विशेषेण समन्ताज् जिघ्रतीति **व्याघ्रः** हस्ती वा ॥

६४. हन्तीति **घोरम्** भयानकं वा ॥

६५. क्षमते सहते सर्वमिति **क्ष्मा** पृथिवी वा ॥

तरतेर्ड्रिः ॥ ६६ ॥ त्रयः ॥ ६६ ॥

ग्रहेरनिः ॥ ६७ ॥ ग्रहणिः ॥ ६७ ॥

प्रथेरमच् ॥ ६८ ॥ प्रथमः ॥ ६८ ॥

चरेश्च ॥ ६९ ॥ चरमः ॥ ६९ ॥

मङ्गेरलच् ॥ ७० ॥ मङ्गलम् ॥ ७० ॥

इत्युणादिषु पञ्चमः पादः समाप्तः ॥

मन्थानं विशदं विधाय बहुलं व्युत्पन्नपक्षेन वा
ऽव्युत्पन्नेन दलेन येन विधिवद्वाग्वारिधिर्मन्थितः ।
व्यक्ताव्यक्ततराणि यत्र वचसां रत्नान्यदीप्यन्त वै
भूयात् सोऽयमुणादिरुत्तमगणोऽध्येतुर्यशोवृद्धये ॥

---

६६. तरतीति **त्रिः** संख्यावाची वा । त्रयः । त्रीन् । त्रिभ्यः ॥

६७. गृह्णातीति **ग्रहणिः** । कृदिकारादिति ङीष्—'ग्रहणी' संग्रह व्याधिभेदो वा ॥

६८. प्रथते प्रख्यातो भवतीति **प्रथमः** आद्य उत्तमो नूतनो वा ॥

६९. चरति गच्छति भक्षयतीति वा स **चरमः** अन्त्यः पश्चिमो वा ॥

७०. मङ्गति प्राप्नोति सुखं येन तत् **मङ्गलम्** प्रशस्तं मङ्गलो वारभेदे वा । मङ्गलस्य भावो 'माङ्गल्यम्' ॥

इति श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीकृतोणादिव्याख्यायां
वैदिकलौकिककोषे पञ्चमः पादः समाप्तः ॥
समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥

अथोणादिशब्दसूचीपत्रम्

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
इन्द्रः	२	२८	उदरथिः	४	८८
इभः	३	१५३	उदरम्	५	१९
इरा	२	२८	उदश्वित्	२	५७
इरिणम्	२	५१	उद्गीथः	२	१०
इल्वलः	४	१०७	उन्द्रः	२	१३
इषिरः	१	५१	उन्नेता	२	९४
इषीका	४	२१	उपदेष्टा	२	९४
इषुः	१	१३	उपह्वरः	३	१
इष्टका	३	१४८	उरः	४	१९५
इष्मः	१	१४५	उरणः	५	१७
ई			उरुः	१	३१
ईर्मम्	१	१४५	उलपः	३	१४५
ईश्वरः	५	५७	उलूकः	४	४१
ईष्वः	१	१५३	उल्कः	३	४२
उ			उल्मुकम्	३	८४
उक्थम्	२	७	उल्वः	४	९५
उक्षा	१	१५९	उशनाः	४	२३९
उग्रः	२	२८	उशिक्	२	७१
उग्रतेजाः	४	२२७	उशी	४	१
उचितम्	४	१८६	उशीनरः	४	१
उच्चैः	५	१२	उशीरम्	४	३१
उज्झकः	२	३७	उषः	४	२३४
उत्सः	३	६८	उषपः	३	१४३
उदकधरः	२	२२	उषर्बुधः	४	२३४
उदकम्	२	३९	उषः	४	२३४

११

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
जन्यम्	४	१११	जायुः	१	१
जन्युः	३	२०	जिगत्नुः	३	३१
जम्बः	४	९५	जित्वा	४	११४
जम्बीरः	४	३०	जिनः	३	२
जम्बूः	१	९३	जिव्रिः	५	४९
जम्बूकः	४	४१	जिह्मः	१	१४१
जम्भलः	१	१०६	जिह्वा	१	१५४
जयन्तः	३	१२८	जीमूतः	३	९१
जरठः	१	१००	जीरः	२	२३
जरन्तः	३	१२६	जीरदानुः	२	२३
जरसानः	२	८६	जीविः	४	५४
जरायुः	१	४	जीवथः	३	११३
जरूथम्	२	६	जीवन्तः	३	१२७
जर्जरः	३	१३१	जीवातुः	१	७८
जर्णः	३	१०	जुहुराणः	२	९१
जर्तुः	५	४६	जुहूः	२	६०
जसुरिः	२	७३	जूः	२	५७
जहकः	२	३४	जूर्णिः	४	४८
जहनुः	३	३६	जैवातृकः	१	७६
जागृविः	४	५४	ज्यानिः	४	४८
जातवेदाः	४	२२७	ज्योतिः	२	११०
जानु	१	३	त		
जामाता	२	९५	तकिला	१	५७
जामिः	४	४३	तक्रम्	२	१३
जाया	४	१११	तक्षकः	२	३२

शब्दाः	पादे	सूत्रे
तालु	१	५
ताविषी	१	४८
तिग्मम्	१	१४६
तिजिलः	१	५६
तितउ	५	५२
तिन्तिडीकः	४	२०
तित्तिरिः	४	१४३
तिथः	२	१२
तिमिः	४	१२२
तिमिरम्	१	५१
तिरीटम्	४	१७५
तीक्ष्णम्	३	१८
तीर्थम्	२	७
तीवरः	३	१
तीव्रम्	२	२८
तुण्डिः	४	११
तुण्डिलः	१	५४
तुत्थः	२	७
तुन्दः	४	९८
तुषारः	३	१३९
तुहिनम्	२	५२
तूणीरः	४	३०
तूर्णिः	४	५१
तूलिः	४	१२०
तूस्तम्	३	८६
तृणम्	५	८
तृपत्	२	८५
तृपला	१	१०४
तृप्रः	२	१३
तृफला	१	१०४
तृष्णा	३	१२
तोत्रम्	४	१७३
तोमरः	३	१३१
त्यद्	१	१३२
त्रपुः	१	१०
त्रयः	५	६६
त्रसरेणुः	३	३८
त्रिपिष्टपम्	३	१४५
त्रिफला	१	१०४
त्रिविष्टपः	३	१४५
त्वक्	२	६३
त्वष्टा	२	९५
त्सरुः	१	७
द		
दंष्ट्रा	४	१५९
दक्षाय्यः	४	९६
दक्षिणः	२	५०
दक्षिणा	२	५०
दण्डः	१	११४
दण्डधरः	२	२२

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
धानाः	३	६	ध्वनिः	४	४०
धान्यम्	५	४८	न		
धाम	४	१५१	नंशुकः	२	३०
धासाः	४	२२१	नक्षत्रम्	३	१०५
धिषणा	२	८२	नखम्	५	२३
धिष्ण्यम्	४	१०७	नखरः	३	१३१
धीरः	२	२४	नखिः	४	१३९
धीवरः	३	१	नगः	५	६१
धीवरी	४	११५	नटः	४	१०४
धीवा	४	११५	नदनुः	३	५२
धुवकः	२	३२	नदन्तः	३	१२७
धुस्तूरः	४	९०	ननन्दा	२	९८
धूकः	३	४७	ननान्दा	२	९८
धूमः	१	१४५	नन्दयन्तः	३	१२८
धूमकेतुः	१	७४	नन्दिः	४	११८
धूर्त्तः	३	८६	नप्ता	२	९५
धूसरः	३	७३	नभः	४	२११
धृत्वा	४	११४	नभसः	३	११७
धृषुः	१	२३	नभस्यः	४	२११
धेनः	३	११	नभाकम्	४	१५
धेनुः	३	३४	नमतः	३	११०
ध्यात्वम्	४	१०५	नमसः	३	११७
ध्यामा	४	१५१	नयनम्	२	७८
ध्राडिः	४	११८	नरकम्	५	३५
ध्रुवम्	२	६१	नलिनम्	२	४९

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
पर्णशुट्	२	८२	पाण्डुः	१	३७
पर्णसि	४	१०७	पातालम्	१	११७
पर्पः	३	२८	पातिः	५	५
पर्पटः	४	८१	पात्रम्	४	१५६
पर्परीकः	४	१६	पात्रम्	४	१७०
पर्वतः	३	११०	पाथः	४	२०४
पर्वत्	१	१३०	पाथः	४	२०५
पर्वा	४	११३	पाथिः	२	११४
पर्शुः	१	३३	पादूः	१	८५
पर्शुः	५	२७	पापम्	३	२३
पललम्	१	१०६	पाप्मा	४	१५१
पलाण्डुः	१	३७	पायुः	१	१
पलालम्	१	११८	पारक्	१	१३६
पलितः	३	६२	पारुः	४	१०१
पलितम्	५	३४	पार्श्वम्	५	२७
पल्वलः	४	१०७	पार्ष्णिः	४	५२
पवाका	४	१४	पालिः	४	१३०
पविः	४	१३६	पाशधरः	२	२२
पशुः	१	२७	पाषाणः	२	६
पांसुः	१	२७	पिङ्गलः	१	१०६
पाकः	३	४३	पिञ्जरः	३	१३१
पाकः	५	५३	पिञ्जूलम्	४	९०
पाकुकः	२	३०	पिण्डिलः	१	५४
पाजः	४	२०३	पिण्याकः	४	१५
पाणिः	४	१३३	पिता	२	९५

१२

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
मलम्	१	११०	मार्जारः	३	१३७
मलयः	४	६६	मार्जालीयः	१	११६
मलिनः	२	४६	मालती	३	११०
मल्लिका	२	३२	मालती	४	५६
मल्लूरः	४	६१	माला	२	२८
मसिः	४	११८	माहिनम्	२	५६
मसिनम्	२	४६	मितद्रुः	१	३४
मसुरा	१	४३	मित्रम्	४	१६४
मसूरा	५	३	मित्रयुः	१	३७
मस्तकम्	३	१४८	मिथिला	१	५७
मस्तुः	१	६६	मिथुनम्	३	५५
महः	४	१८६	मिश्रम्	२	१३
महत्	२	८४	मिहिरः	१	५१
महसम्	३	११७	मीनः	३	३
महानसम्	४	१८६	मीरः	२	२५
महिनम्	२	५६	मीवः	१	१५४
महिलः	१	५४	मीवरः	३	१
महिषः	१	४५	मुकुरः	१	४०
मांसम्	३	६४	मुखम्	५	२०
माः	४	१८६	मुचिरः	१	५१
मातरिश्वा	१	१५६	मुदिरः	१	५१
माता	२	६५	मुद्गः	१	१२८
मात्रा	४	१६८	मुद्गलः	१	१२८
माया	४	१०६	मुद्रा	२	१३
मायुः	१	१	मुनिः	४	१२३

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
मुमुचानः	२	९३	मृदुः	१	२८
मुशलः	१	१०६	मेचकः	५	३७
मुषलः	१	१०६	मेरुः	४	१०१
मुष्कः	३	४१	मौनम्	४	१२३
मुसलः	१	१०६	म्लानिः	४	५१
मुस्त्रम्	२	१३	य		
मुहिरः	१	५१	यकृत्	४	५८
मुहुः	२	१२०	यक्ष्मः	१	१४०
मुहूर्त्तम्	३	९८	यक्ष्मा	४	१५१
मुहेरः	१	६१	यजतः	३	११०
मूकः	३	४१	यजत्रम्	३	१०५
मूत्रम्	४	१६३	यजिः	४	११८
मूर्खः	५	२२	यजुः	२	११७
मूर्द्धा	१	१५९	यज्युः	३	२०
मूलम्	४	१०८	यतिः	४	११८
मूलेरः	१	६१	यद्	१	१३२
मूषिकः	२	४२	यन्त्रम्	४	१६७
मृगयुः	१	३७	यमुना	३	६१
मृडङ्कणः	४	२४	ययीः	३	१५९
मृडीकः	४	२४	ययुः	१	२१
मृणालम्	१	११८	यवनः	२	७४
मृतम्	३	८८	यवागूः	३	८१
मृत्युः	३	२१	यवासः	४	२
मृदङ्गः	१	१२१	यशः	४	१६१
मृदरः	५	४१	यष्टिः	४	१८०

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
वसतिः	४	६०	वामः	१	१४०
वसन्तः	३	१२८	वायसः	३	१२०
वसिः	४	१४०	वायसः	४	१८९
वसुः	१	१०	वायुः	१	१
वसुरोचिः	२	१११	वारङ्गः	१	१२२
वस्तम्	३	८९	वारि	४	१२५
वस्तिः	४	१८०	वार्त्ताकिः	४	१५
वस्तु	१	७०	वार्त्ताकम्	३	७९
वस्त्रम्	४	१५९	वार्त्ताकुः	३	७९
वस्नः	३	६	वावदूकः	४	४१
वस्रः	२	१३	वाशिः	४	११८
वहतिः	४	६०	वाशिः	४	१२५
वहतुः	१	७७	वाशुरा	१	३८
वहन्तः	३	१२८	वाश्रः	२	१३
वहित्रम्	४	१७३	वासः	४	२१८
वह्निः	४	५१	वासरः	३	१३२
वह्यम्	४	११२	वासिः	४	१२५
वाक्	२	५७	वासुः	१	१
वागुरा	१	४१	वास्तु	१	७०
वातः	३	८६	वास्तूकः	४	४१
वातप्रमीः	४	१	वाहसः	३	११९
वातिः	५	६	वाहीकः	४	२५
वादिः	४	१२५	विः	४	१३४
वादित्रम्	४	१७१	विकुस्रः	२	१५
वापिः	४	१२५	विक्रयिकः	२	४४

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
विचक्षाः	४	२३३	विहा	४	३६
विजयन्तः	३	१२८	वीकः	३	४७
विटपः	३	१४५	वीचिः	४	७२
विडङ्गः	१	१२१	वीणा	३	१५
विडालः	१	११८	वीध्रम्	२	२६
वितद्रुः	४	१०२	वीरः	२	१३
वितस्तिः	४	१८२	वृकः	३	४१
विथुः	१	३९	वृक्षः	३	६६
विदथः	३	११५	वृजनम्	२	८१
विधुः	१	२३	वृजिनम्	२	४७
विधुरः	१	३९	वृत्रः	२	१३
विपणिः	४	११८	वृद्धश्रवाः	४	२२७
विपिनम्	२	५२	वृधसानः	२	८७
विप्रः	२	२८	वृन्दः	४	९८
विल्वम्	४	९५	वृशः	४	१०४
विशालः	१	११८	वृश्चिकः	२	४०
विशिपः	३	१४५	वृषपः	४	१००
विश्वभोजाः	४	२३८	वृषभः	३	१२३
विश्वम्	१	१५१	वृषलः	१	१०६
विश्ववेदाः	४	२३८	वृषा	१	१५६
विश्वप्सन्	१	१५९	वृष्णिः	४	४९
विषाः	४	३६	वेणिः	४	४८
विष्टपम्	३	१४५	वेणुः	३	३८
विष्टरश्रवाः	४	२२७	वेतनम्	३	१५०
विष्णुः	३	३९	वेतसः	३	११८

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
श्येतः	३	९३	सक्तुः	१	६९
श्येनः	२	४६	सक्थि	३	१५४
श्रवणा	२	७८	सखा	४	१३७
श्रवाय्यः	३	९६	सङ्कसुकः	२	२९
श्रीः	२	५७	सङ्ग्रहणी	५	६७
श्रेणिः	४	५१	सत्रम्	४	१६७
श्रोणः	३	६	सदः	४	१८९
श्रोणिः	४	५१	सधिः	२	११३
श्रोत्रम्	४	१६८	सनिः	४	१४०
श्लक्ष्णम्	३	१९	सन्ध्या	४	११२
श्लिकुः	१	३२	सप्त	१	१५७
श्लेष्मा	४	१४५	समया	४	१७५
श्वयीचिः	४	७१	समरः	३	१३१
श्वसुरः	१	४४	समिथः	२	११
श्वा	१	१५९	समीचः	४	९२
श्वित्रम्	२	१३	समीची	४	९२
ष			सम्पातिः	५	५
षण्डः	१	११४	सम्प्रहाणिः	४	१२५
षिड्गः	१	१२४	सरः	४	१८९
स			सरकम्	५	३५
संयद्वरः	३	१	सरटः	४	८१
संवत्सरः	३	७२	सरटः	४	१०५
संवसथः	३	११६	सरट्	१	१३४
संश्चत्	२	८५	सरणिः	२	१०२
संस्तवानः	२	८९	सरण्डः	१	१२९

१३

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
स्तोमः	१	१४०	स्योनः	३	९
स्त्येनः	२	४६	स्रक्	२	६२
स्त्री	४	१६६	स्रुवः	२	६१
स्थपतिः	४	५९	स्रूः	२	५७
स्थविः	४	५६	स्रोतः	४	२०२
स्थविरः	१	५३	स्वधा	४	१७५
स्थाणुः	३	३७	स्वप्नः	३	१०
स्थाम	४	१४५	स्वरुः	१	१०
स्थालम्	१	११६	स्तीर्विः	४	५४
स्थिरः	१	५३	स्वर्भानुः	३	३२
स्थूणा	३	१५	स्वसा	२	९६
स्थूरः	५	४	स्वस्ति	४	१८२
स्नायुः	१	१	स्वाती	४	१३१
स्नावा	४	११३	स्वादुः	१	१
स्नुषा	३	६६	ह		
स्नेहा	१	१५९	हंसः	३	६२
स्नेहुः	१	१०	हंसिका	४	१५४
स्पृहयाय्यः	३	९६	हत्नुः	३	३०
स्फारम्	२	१३	हथः	२	२
स्फिरः	१	५३	हनुः	१	१०
स्यन्दनः	२	७८	हनूषः	४	७३
स्यमिकः	३	४६	हन्ता	२	९४
स्यमीकः	३	४६	हरिः	४	११९
स्यूनः	३	९	हरिणः	२	४६
स्यूमः	१	१४४	हरितः	३	९३

शब्दाः	पादे	सूत्रे	शब्दाः	पादे	सूत्रे
रित्	१	९७	हिरण्यम्	५	४४
रिद्रु:	१	३४	हिरण्यरेता:	४	२२७
रिमा	४	१४८	हृदयम्	४	१००
रेणु:	२	१	हृषीकम्	४	१७
र्यत:	३	११०	हृषु:	१	२३
र्पयित्नु:	३	२९	हेतु:	१	७३
र्पुल:	१	९६	हेम	४	१४५
लि:	४	११८	हेमन्त:	३	१२९
वि:	२	१०८	हेलि:	४	११८
स्त:	३	८६	होता	२	९५
त्र:	२	१३	होत्रम्	४	१६८
ानि:	४	५१	होम:	१	१४०
ान्त्रम्	४	१६०	होमा	४	१५१
ारि:	४	१२५	होमी	३	८४
ालु:	१	१	हौल:	४	१०५
सा:	४	२२१	ह्रस्व:	१	१५३
हुसीर:	५	१८	ह्रीका	३	४८
हिङ्गु:	१	३६	ह्रीकु:	३	८५
हिण्डीर:	४	३०	ह्लीका	३	४८
हिमम्	१	१४७	ह्लीकु:	३	८५

समाप्तम्

आर्यसमाज के नियम

१ सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन का आदि मूल परमेश्वर है ।

२ ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वा... सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नि... पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।

३ वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

४ सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत र... चाहिये ।

५ सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार क... करने चाहिये ।

६ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अ... शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७ सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये ।

८ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

९ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, कि... सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।

१० सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परत... रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।